सामुदायिक

GOONJ

RNI No. MPBIL02443/2020-TC

National News Magazine

वर्ष : 01 अंक : 03 जनवरी 2023 मूल्य: ₹ 50 पृष्ठ : 52

नमन गणतंत्र

Happy 26th JANUARY Republic Day

दिसंबर 2022 का अंक

ग्वालियर, जनवरी 2023
(वर्ष 01, अंक 03, , पृष्ठ 52, मूल्य 50 रुपए)

प्रेरणास्रोत
श्रीमती संध्या सिकरवार

चेयरमैन
डॉ. जे. एस. सिकरवार

सम्पादक
कृति सिंह

उप संपादक
अंतिमा सिंह -कौस्तुभ सिंह
राजीव तोमर, भूपेन्द्र तोमर

कार्यकारी संपादक
डॉ. आर. एन. एस. तोमर

सहायक संपादक
अछेन्द्र सिंह कुशवाह

सब एडिटर/एडिटिंग
इमरान गौरी

कानूनी सलाहकार
एड. अरविन्द दूदावत

न्यूज एंकर
प्रिया शिन्दे, कल्पना पाल

एडिटोरियल प्रभारी
स्तुति सिंह

संकलन
भरत सिंह, स्निग्ध तोमर

छायांकन/सिटी रिपोर्टर
अनिल सिंह सिकरवार

गूंज पत्रिका संपादकीय कार्यालय
ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश
(संपर्कः 7880075908)

इस अंक में

कृति सिंह को मिला गौरव रत्न सम्मान-46

ग्वालियर को बनाएंगे टीवी मुक्त-43

वैदेही ने जीता वूमेंस वर्ल्ड -45

जागरूकता अभियान...23

बेटी संरक्षण दिवस...26

सिंधिया गोल्ड कप-06

शिराली रूनवाल..47

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक कृति सिंह के लिए गूंज ई 69-70 हरिशंकर पुरम ग्वालियर मध्य प्रदेश से मुद्रित एवं ई 69-70 हरिशंकर पुरम ग्वालियर मध्य प्रदेश से प्रकाशित । संपादक-कृति सिंह
RNI.Title Code-MPBIL02443/2020-TC

नमन गणतंत्र...जय हिन्द

कृति सिंह
संपादक

देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत हजारों सपूतों ने भारत को आजादी दिलाने में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। ऐसे महान देशभक्तों के त्याग और बलिदान के कारण आज हमारा देश लोकतान्त्रिक गणराज्य हो सका है। गणतंत्र दिवस हमारी राष्ट्रीय एकता एवं भावना को और अधिक प्रगाढ़ बनाने के लिए देशवाशियों को प्रेरित करता है। यह पर्व हमारे शहीदों की अमर गाथाओं से हमें गौरवान्वित करता है और प्रेरणा देता है कि अपने देश के गौरव को बनाए रखने के लिए हम संकल्पित हैं तथा हर पल तेजी से प्रगति और विकास की ओर बढ़ रहे हैं। 26 जनवरी को उन सभी देशभक्तों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए, गणतंत्र दिवस का राष्ट्रीय पर्व भारतवर्ष के कोने-कोने में बड़े उत्साह तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। प्रति वर्ष इस दिन प्रभात फेरियां निकाली जाती है। भारत की राजधानी दिल्ली समेत प्रत्येक राज्य तथा विदेषों के भारतीय राजदूतावासों में भी यह त्योहार उल्लास व गर्व से मनाया जाता है। 26 जनवरी का मुख्य समारोह भारत की राजधानी दिल्ली में भव्यता के साथ मनाते हैं। देश के विभिन्न भागों से असंख्य व्यक्ति इस समारोह की शोभा देखने के लिये आते हैं। हमारे सुरक्षा प्रहरी परेड निकाल कर, अपनी आधुनिक सैन्य क्षमता का प्रदर्शन करते हैं तथा सुरक्षा में सक्षम हैं, इस बात का हमें विश्वास दिलाते हैं। परेड विजय चौक से प्रारम्भ होकर राजपथ एवं दिल्ली के अनेक क्षेत्रों से गुजरती हुयी लाल किले पर जाकर समाप्त हो जाती है। परेड शुरू होने से पहले प्रधानमंत्री 'अमर जवान ज्योति' पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। राष्ट्रपति अपने अंगरक्षकों के साथ 14 घोड़ों की बग्घी में बैठकर इंडिया गेट पर आते हैं, जहाँ प्रधानमंत्री उनका स्वागत करते हैं। राष्ट्रीय धुन के साथ ध्वजारोहण करते हैं, उन्हें 21 तोपों की सलामी दी जाती है, हवाई जहाजों द्वारा पुष्पवर्षा की जाती है। आकाश में तिरंगे गुब्बारे और सफेद कबूतर छोड़े जाते हैं। जल, थल, वायु तीनों सेनाओं की टुकड़ियां, बैंडो की धुनों पर मार्च करती हैं। 26 जनवरी का पर्व देशभक्तों के त्याग, तपस्या और बलिदान की अमर कहानी समेटे हुए है। प्रत्येक भारतीय को अपने देश की आजादी प्यारी थी। भारत की भूमि पर पग-पग में उत्सर्ग और शौर्य का इतिहास अंकित है। किसी ने सच ही कहा है- कण-कण में सोया शहीद, पत्थर-पत्थर इतिहास है। ऐसे ही अनेक देशभक्तों की शहादत का परिणाम है, हमारा गणतान्त्रिक देश भारत। 26 जनवरी का पावन पर्व आज भी हर दिल में राष्ट्रीय भावना की मशाल को प्रज्वलित कर रहा है। लहराता हुआ तिरंगा रोम-रोम में जोश का संचार कर रहा है, चहुँओर खुशियों की सौगात है। हम सब मिलकर उन सभी अमर बलिदानियों को अपनी भावांजली से नमन करें, वंदन करें।

देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत हजारों सपूतों ने भारत को आजादी दिलाने में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। ऐसे महान देशभक्तों के त्याग और बलिदान के कारण आज हमारा देश लोकतान्त्रिक गणराज्य हो सका है। गणतंत्र दिवस हमारी राष्ट्रीय एकता एवं भावना को और अधिक प्रगाढ़ बनाने के लिए देशवाशियों को प्रेरित करता है। यह पर्व हमारे शहीदों की अमर गाथाओं से हमें गौरवान्वित करता है और प्रेरणा देता है कि अपने देश के गौरव को बनाए रखने के लिए हम संकल्पित हैं तथा हर पल तेजी से प्रगति और विकास की ओर बढ़ रहे हैं। 26 जनवरी को उन सभी देशभक्तों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए, गणतंत्र दिवस का राष्ट्रीय पर्व भारतवर्ष के कोने-कोने में बड़े उत्साह तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। प्रति वर्ष इस दिन प्रभात फेरियां निकाली जाती है। भारत की राजधानी दिल्ली समेत प्रत्येक राज्य तथा विदेषों के भारतीय राजदूतावासों में भी यह त्योहार उल्लास व गर्व से मनाया जाता है। 26 जनवरी का मुख्य समारोह भारत की राजधानी दिल्ली में भव्यता के साथ मनाते हैं।

विज़न ज़ीरो

नियमों का पालन कर बचा सकते हैं जान

Road Safety Week

● गूंज न्यूज़ नेटवर्क

भारत में सड़क पर दुर्घटनाएं होना काफी आम है। कई लोगों की जान जाने के मामले भी देखने को मिलते है। हर वर्ष सड़क सुरक्षा सप्ताह का आयोजन होता है ताकि सड़क हादसों को लेकर जन जागरूकता फैलाई जा सके। मध्यप्रदेश में हेलमेट को लेकर पुलिस एवं परिवहन विभाग व यातायात विभाग द्वारा अभियान चलाया जा रहा है, इसके तहत चेकिंग पॉइंट लगाकर चालान काटे जा रहे हैं। साथ ही जागरुकता अभियान भी चलाए जा रहे हैं इसके बावजूद लोग लापरवाह बने हुए हैं। सड़क हादसों के मुख्य कारण हैं, सड़कों की बुरी हालत, ख़राब यातायात व्यवस्था, और लोगों के द्वारा की जाने वाली लापरवाही। इन सभी समस्याओं का समाधान हम विज़न ज़ीरो को आस्तित्व में लाकर कर सकते हैं। विज़न ज़ीरो मल्टी-नेशनल सड़क यातायात सुरक्षा प्रोजेक्ट है जिसमें हाईवे का निर्माण इस प्रकार से किया जाता है कि यदि सड़क हादसा हो भी तो उसमें किसी की मृत्यु ना हो और ना ही कोई गम्भीर चोट आए। विज़न ज़ीरो एक सिद्धांत पर काम करता है कि समाज के भीतर अन्य लाभों के लिए जीवन और स्वास्थ्य का आदान-प्रदान कभी नहीं किया जा सकता है। किसी के जीवन और स्वास्थ्य को दांव पर रख कर जोखिम नहीं लेना चाहिए, यहां जितना पैसा ख़र्च हो उतना कर देना चाहिए। बाक़ी की ज़रूरतें बाद में पूरी हो जाएंगी क्योंकि जान है तो जहान है।

भारत की राजधानी दिल्ली में कंझावला में 31 दिसंबर की रात को हुए दर्दनाक सड़क हादसे को लोग अभी भूले भी नहीं थे कि इससे पहले ही एक डीटीसी बस का ब्रेक फेल होने से झोपड़ियों पर चढ़ गई जिसमें कुछ लोग घायल हो गए है।

भारत में आए दिन सड़क दुर्घटनाएं होती रहती है। सड़कों के निर्माण पर लगभग चार से पांच फीसदी पैसा लगाया जाता है मगर फिर भी सड़कों पर हादसे हो जाते है। इसका मुख्य कारण लोगों द्वारा सड़क पर बरती जाने वाली लापरवाही होती है। इन लापरवाहियों को दूर करने के उद्देश्य से हर वर्ष राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्रालय सड़क सुरक्षा सप्ताह का आयोजन करता है। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य है कि लोगों को सड़क सुरक्षा संबंधित नियमों के बारे में अवगत कराया जाए। सड़क सुरक्षा सप्ताह का आयोजन हर वर्ष 11 से 17 जनवरी के बीच किया जाता है। इस दौरान सड़क मंत्रालय देश भर में कई कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इसके जरिए आम जनता को सड़क सुरक्षा के संबंध में नियमों और कानून की जानकारी दी जाती है ताकि सड़क हादसों को रोका जा सके। भारत में सड़क हादसों में कई लोग अपनी जान सिर्फ नियमों का पालन ना करने के कारण गंवाते है। बता दें कि सड़क सुरक्षा सप्ताह के जरिए लोगों को सड़क पर गाड़ी चलाते हुए सड़क सुरक्षा नियमों का ध्यान रखने के प्रति जागरूक किया जाता है। इन नियमों का पालन कर व्यक्ति ना सिर्फ अपनी बल्कि अन्य लोगों की जान भी बचा सकता है।

ग्वालियर मेले रूपी माला में कई प्रांतों की सभ्यता, संस्कृति व कारोबार समाहित है : सिंधिया

● गूंज न्यूज नेटवर्क

केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि ग्वालियर का मेला केवल मेला भर नहीं है, यह फूलों की ऐसी माला है जिसमें मध्यप्रदेश सहित अन्य प्रदेशों की संस्कृति, सभ्यता, कला व व्यापार समाहित है। उन्होंने कहा आधुनिक ग्वालियर के संस्थापक माधव महाराज ने जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई एवं पेयजल के क्षेत्र में ग्वालियर को उत्कृष्ट अधोसंरचना उपलब्ध कराई वहीं सन् 1905 में सागरताल प्रांगण से मेले की शुरूआत भी की। सन् 1918 से वर्तमान प्रांगण में यह मेला लग रहा है। मेले में लगातार नए आयाम जुड़े हैं। मेरे पिताश्री स्व. श्रीमंत माधवराव सिंधिया जी ने इस मेले को दिल्ली के ट्रेड फेयर के सेटेलाइट सेंटर के रूप में विकसित कर इसे ट्रेड फेयर का रूप दिलाया। बाद में इसे प्राधिकरण का दर्जा भी दिलाया। उन्होंने उम्मीद जाहिर की कि इस साल यह मेला नया कीर्तिमान स्थापित करेगा और आत्मनिर्भर भारत, आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश और आत्मनिर्भर ग्वालियर की विचारधारा को आगे बढ़ायेगा। मेले के उदघाटन समारोह में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री श्री ओमप्रकाश सखलेचा ने स्वागत उदबोधन दिया। उन्होंने कहा कि मेले की गरिमा को बनाए रखने के लिये विभाग द्वारा इसमें नए आयाम जोड़े जायेंगे। उन्होंने प्रदेश के औद्योगिक विकास को रेखांकित करते हुए कहा कि कृषि की तरह प्रदेश की इंडस्ट्रीयल ग्रोथ भी डबल होने की अपेक्षा है।

राजस्व एवं परिवहन मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत की ग्वालियर मेला परंपरागत विशेषताओं के साथ आधुनिकता भी जुड़ गई है, जिससे मेले को और भव्यता मिली है। उन्होंने कहा कि केवल ग्वालियर-चंबल अंचल ही नहीं पूरे मध्यप्रदेश को इस मेले का इंतजार रहता है।

ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने कहा कि सिंधिया स्टेट द्वारा शुरू किए गए इस मेले के माध्यम से ग्वालियर की पहचान देश भर में स्थापित होती है। उन्होंने कहा कि ग्वालियर में उत्कृष्ट वायुसेवा व रेल सेवा मिलने से निश्चित ही ग्वालियर का औद्योगिक वैभव फिर से लौटेगा। सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर ने कहा कि ग्वालियर मेले में लोकल फॉर वोकल और आत्मनिर्भर भारत की थीम पर चलकर स्थानीय उत्पादों की बिक्री को बढ़ावा दिया जाए। अतिरिक्त छूट देकर स्थानीय उद्यमियों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। समारोह में कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अमित सांघी सहित अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद थे। कार्यक्रम के अंत में मेला सचिव निरंजन श्रीवास्तव ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती कादम्बरी आर्य द्वारा किया गया।

ग्वालियर व्यापार मेले में उठाएं 50 प्रश रोड टैक्स की छूट का लाभ

मध्य प्रदेश परिवहन विभाग के डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर अरविंद सक्सेना ने बताया कि ग्वालियर व्यापार मेले में अपना शोरूम लगाकर गाड़ियों को बेचने वाले व्यवसाई ही इसका लाभ ले पाएंगे

अरविंद सक्सेना
डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर

● गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर. ग्वालियर व्यापार मेले में वाहनों की खरीद पर आरटीओ की तरफ से 50त्न रोड टैक्स में छूट दी जा रही है.यह विशेष छूट केवल ग्वालियर व्यापार मेले से खरीदे जाने वाले वाहनों पर ही है. इसके साथ ही इस छूट के माध्यम से होने वाले व्यवसाय का लाभ केवल वहीं डीलर ले पाएंगे जो ग्वालियर व्यापार मेले में अपना शोरूम लगाएंगे. इसके अलावा ग्वालियर के बाहर से आने वाले कस्टमर को भी इस छूट का लाभ तभी मिलेगा जब वो अपनी गाड़ी पर एमपी0 7 की नंबर प्लेट लगाए रखेंगे.

मध्य प्रदेश परिवहन विभाग के डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर अरविंद सक्सेना ने बताया कि ग्वालियर व्यापार मेले में अपना शोरूम लगाकर गाड़ियों को बेचने वाले व्यवसाई ही इसका लाभ ले पाएंगे. इसके अलावा जो लोग इस विशेष छूट के माध्यम से वाहन खरीदेंगे.उन्हें गाड़ी की समय सीमा तक उस पर एमपी07 की ही नंबर प्लेट लगानी होगी. अगर वे यहां से वाहन खरीद कर कुछ समय बाद ही रजिस्ट्रेशन अन्य शहर में करवाते हैं तो उन्हें पूरा रोड टैक्स देना होगा. उन्होंने बताया कि यदि आप 8 लाख की डीजल कार खरीदते हैं तो उस पर 50प्रश रोड टैक्स में छूट दी जाएगी. जिसके तहत आप की लगभग 40 हजार की सीधी बचत होगी. इसी तरह अगर आप एक लाख रुपये की बाइक या अन्य दुपहिया वाहन खरीदते हैं तो उस पर आपको कम से कम 4 से 5 हजार की बचत आरटीओ की तरफ से बतौर छूट के रूप में दी जाएगी. कमिश्नर सक्सेना ने बताया आरटीओ द्वारा दी जा रही 50प्रश की छूट का व्यवसाय केवल वही बिजनेसमैन कर पाएंगे. जिनके शोरूम मेले में तैयार हो चुके हैं.अधूरे पड़े शोरूम को इस सुविधा का लाभ नहीं दिया जाएगा.इसके साथ ही जो भी वाहन कारोबारी ग्वालियर के बाहर से शहरों से आकर मेले में अपना शोरूम लगाना चाहता हैं तो उसको ग्वालियर परिवहन कार्यालय से ट्रेड लाइसेंस लेना अनिवार्य होगा.उन्होंने बताया कि मेले में जो भी वाहन बिकेंगे उनका भौतिक सत्यापन भी परिवहन विभाग द्वारा मेला परिसर में खोले जाने वाले कार्यालय से ही होगा

व्यापार मेले में वाहनों की बंपर बिक्री

ग्वालियर व्यापार मेले में वाहनों की बंपर बिक्री हो रही है। 50 लाख से अधिक कीमत की गाड़ियां पर बड़ी बचत हो रही हैं। 50 फीसद रोड टैक्स में छूट की वजह से बड़ी बचत हो रही है। इस कारण प्रदेशभर से बड़ी संख्या में लोग वाहन खरीदने के लिए आ रहे हैं। एक करोड़ से अधिक कीमत की गाड़ियं की बडी संख्या में बिक्री हो रही है। पिछले दो दिन में चार से अधिक कारें बिक चुकी है। ग्वालियर व्यापार मेले से वाहन खरीदने पर रोड टैक्स में 50 फीसद की छूट दी जा रही है। इस छूट से महंगी व लक्जरी गाड़ियां खरीदने पर बड़ी बचत हो रही है। छोटी गाड़ियों पर भी काफी बचत हो रही है। हर दिन वाहनों की बिक्री बढ़ती जा रही है। चार पहिया व दुपहिया वाहन की ओर लोगों का आकर्षण बढ़ा है। अधिकतर कंपनियों के वाहन का सत्यापन शुरू हो गया था, लेकिन आडी, बीएमडब्ल्यू, जीप महंगे लक्जरी वाहनों की बिक्री करते हैं। इन्हें ट्रेड लाइसेंस मिल गया था, लेकिन पोर्टल पर नहीं आने से छूट नहीं मिल पा रही थी, लेकिन अब ये पोर्टल दर्ज हो गई। सत्यापन के बाद वाहन पर रोड टैक्स में 50 फीसद की छूट मिलेगी। आडी, बीएमडब्ल्यू व जीप कंपास ने अपनी बिक्री शुरू कर दी है। इन कंपनी के वाहनों की बिक्री भी अच्छी हो रही है। अधूरे शोरूम भी तैयारमेले में चार पहिया शोरूम ही तैयार हो सके हैं। शोरूम तैयार होने पर आटोमोबाइल सेक्टर में काफी रौनक बढ़ेगी। आटोमोबाइल सेक्टर से मेले में रौनक आ गई है। इस सेक्टर में वाहन देखने वालों की अच्छी भीड़ है।मेले में 350 सीसी की बाइक क्रेज काफी दिख रहा है। करीब 40 बाइक बिक चुकी है।

GOONJ सिंधिया गोल्ड कप प्रतियोगिता

राजमाता सिंधिया गोल्ड कप फुटबॉल प्रतियोगिता का शुभारंभ

● गूंज न्यूज नेटवर्क

नगर निगम ग्वालियर की मेजवानी में 12वीं अखिल भारतीय राजमाता विजयाराजे सिंधिया गोल्ड कप फुटबॉल प्रतियोगिता का शुभारंभ यंग वॉयस फुटबॉल क्लब अकोला महाराष्ट्र विरुद्ध डायमंड फुटवॉल क्लब बालाघाट के बीच मैच के साथ किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में संभागीय आयुक्त श्री दीपक सिंह उपस्थित रहे जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता महापौर डॉ शोभा सतीश सिंह सिकरवार ने की। जीवाजी विश्व विद्यालय के फुटवॉल खेल मैदान में आयोजित 12वीं अखिल भारतीय राजमाता विजयाराजे सिंधिया गोल्ड कप फुटबॉल प्रतियोगिता के शुभारंभ के अवसर पर विशिष्ठ अतिथि के रुप आयुक्त नगर निगम श्री किशोर कन्याल, विधायक प्रतिनिधि श्री कृष्णराव दीक्षित, पार्षद श्रीमती अपर्णा पाटिल, श्री मनोज राजपूत, श्री बृजेश श्रीवास, जीवाजी विश्वविद्यालय के खेल निदेशक श्री केशव सिंह गुर्जर, अपर आयुक्त श्री मुकुल गुप्ता एवं जिला फुटवॉल संघ के सचिव श्री शिववीर सिंह भदौरिया उपस्थित रहे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त श्री दीपक सिंह ने कहा कि नगर निगम ग्वालियर द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है, जो कि सराहनीय है। यदि किसी भी खिलाडी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलना है, तो इस प्रकार के आयोजन होना आवश्यक है। इनसे खिलाडियों को प्रोत्साहन मिलता है।

महापौर डॉ. शोभा सतीश सिंह सिकरवार ने कहा कि नगर निगम ग्वालियर द्वारा निरंतर राष्ट्रीय स्तर पर खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। देश के विभिन्न हिस्सों से पधारे खिलाडियों का नगर निगम स्वागत करता है और सभी खिलाडियों के उज्जवल भविष्य की कामना करता है। यहां सभी टीमें जीतने के लिए खेलेंगी, लेकिन जीतेगी तो एक ही। बाकी सभी टीमों को आगे और भी मौके मिलेंगे जिसमें वह अच्छा प्रदर्शन कर जीत दर्ज करेगीं। महापौर डॉ. सिकरवार ने बताया कि प्रतियोगिता में देश के विभिन्न शहरों की 14 एवं 2 स्थानीय टीमों सहित कुल 16 टीमें भाग ले रही हैं। इससे पूर्व अतिथियों का स्वागत उपायुक्त एवं नोडल अधिकारी खेल श्री सत्यपाल सिंह चैहान, सहायक नोडल अधिकारी खेल सुश्री विजेता सिंह चैहान, सहायक खेल अधिकारी श्री अयोध्या शरण शर्मा एवं श्री धर्मेन्द्र सोनी द्वारा किया गया। अतिथियों द्वारा दोनो टीमों के खिलाडियों से परिचय प्राप्त कर फुटवॉल प्रतियोगिता के शुभारंभ की घोषणा की। सम्भागीय आयुक्त ने खेलो इंडिया के लिए सभी को किया आमंत्रित 12वीं अखिल भारतीय राजमाता विजयाराजे सिंधिया गोल्ड कप फुटबॉल प्रतियोगिता के शुभारंभ अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित संभागीय आयुक्त श्री दीपक सिंह ने सभी को खेलो इंडिया के आयोजन के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि मध्य प्रदेश के 9 शहरों में 30 जनवरी से 11 फरवरी तक खेलो इंडिया का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें ग्वालियर शहर में विभिन्न खेलों का आयोजन खेलो इंडिया के तहत किया जाएगा।

राजमाता विजयाराजे सिंधिया गोल्ड कप फुटबॉल प्रतियोगिता में गूंज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह ने प्रतियोगिता में भाग ले रहे खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया और उनका उत्साहवर्धन किया।

2023 का सेमीफाइनल जीतने वाला ही 2024 में बनेगा विजेता

देखना होगा कि 2023 में होने वाले इन नौ मुकाबलों में से सर्वाधिक कौन जीतता है। क्योंकि जो 2023 जीतेगा वही 2024 की रेस में भी सबसे आगे माना जायेगा। फिलहाल नेतृत्व की इच्छा रखने वालों के अभियान की बात करें तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने वादों को पूरा करने में लगे हुए हैं। साल 2024 के लोकसभा चुनावों में अभी एक साल से ज्यादा का समय है लेकिन कोई भी राजनीतिक दल अपनी तैयारियों में कमी नहीं रखना चाहता इसीलिए सभी अपने-अपने तरीके से मेहनत कर रहे हैं। मेहनत इस बात की हो रही है कि 2024 का फाइनल लड़ने से पहले 2023 का सेमी-फाइनल जीता जाये। दरअसल इस साल कुछ ही दिनों बाद त्रिपुरा, नगालैंड, मेघालय और कर्नाटक विधानसभा के चुनाव होने हैं उसके बाद सितंबर के आसपास तेलंगाना विधानसभा के और फिर नवंबर-दिसंबर में राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और मिजोरम के विधानसभा चुनाव होने हैं। 2023 में नौ राज्यों के विधानसभा चुनावों में जिस पार्टी का पलड़ा भारी रहेगा, 2024 में उसी की दावेदारी भी सर्वाधिक रहेगी। इसलिए भाजपा और कांग्रेस तो इन चुनावों की तैयारी में जुटी ही हुई हैं साथ ही आम आदमी पार्टी, जनता दल युनाइटेड, बीआरएस और तृणमूल कांग्रेस जैसे दल भी इन चुनावों की तैयारी में जुट गये हैं क्योंकि आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल, तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और बीआरएस प्रमुख के. चंद्रशेखर राव भी खुद को प्रधानमंत्री पद

की दौड़ में मान रहे हैं। जहां तक चुनावी राज्यों के राजनीतिक समीकरणों की बात है तो आइये पहले डालते हैं एक नजर यहां वर्तमान में राजनीतिक दलों की स्थिति पर। सबसे पहले बात करते हैं त्रिपुरा की। बहरहाल, इन नौ राज्यों के राजनीतिक परिदृश्य पर गौर करने के बाद जरा कुल मिलाकर मुख्य मुकाबले की बात करें तो चार राज्यों- कर्नाटक, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में भाजपा और कांग्रेस की आमने सामने की टक्कर होनी है वहीं त्रिपुरा में भाजपा और वामदलों, तेलंगाना में बीआरएस और भाजपा के बीच मुकाबला होना है। पूर्वोत्तर राज्यों में भाजपा क्षेत्रीय दलों के साथ कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधनों से मुकाबला करेगी। देखना होगा कि 2023 में होने वाले इन नौ मुकाबलों में से सर्वाधिक कौन जीतता है। क्योंकि जो 2023 जीतेगा वही 2024 की रेस में भी सबसे आगे माना जायेगा। फिलहाल नेतृत्व की इच्छा रखने वालों के अभियान की बात करें तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जहां अपने वादों को पूरा करने में लगे हुए हैं वहीं कांग्रेस नेता राहुल गांधी भारत जोड़ो यात्रा के माध्यम से कांग्रेस को एकजुट करने, समाधान यात्रा के माध्यम से बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जनता की नाराजगी दूर करने और अरविंद केजरीवाल अपनी पार्टी के नेताओं के साथ बैठकें कर चुनावों के लिए रणनीति बनाने में जुटे हुए हैं तो वहीं ममता बनर्जी भी विभिन्न विपक्षी दलों के नेताओं को गोलबंद करने में जुटी हुई हैं लेकिन सबकी नजरें 2023 के सेमी-फाइनल मुकाबले के परिणामों पर भी रहेंगी।

त्रिपुरा–यहां वर्तमान में भाजपा की सरकार है। भाजपा

विपक्ष के पीएम उम्मीदवार राहुल गांधी?

ने यहां पांच साल पहले वामपंथ का आखिरी किला ढहाते हुए जीत हासिल कर इतिहास रच दिया था। बिप्लब देव यहां पहले भाजपाई मुख्यमंत्री थे लेकिन पिछले साल उनके खिलाफ बढ़ती नाराजगी को देखते हुए उन्हें पद से हटा दिया गया और उनकी जगह माणिक साहा को मुख्यमंत्री पद की कमान सौंपी गयी।

मेघालय-वहीं अगर मेघालय की बात करें तो यहां सत्तारुढ़ गठबंधन में भाजपा भले शामिल है लेकिन समान नागरिक संहिता तथा कुछ अन्य मुद्दों को लेकर जिस तरह गठबंधन में मतभेद दिख रहे हैं उसका फायदा कांग्रेस उठाने की कोशिश करेगी। साथ ही तृणमूल कांग्रेस ने भी यहां पूरा जोर लगा रखा है।

नगालैंड-वहीं अगर नगालैंड की बात करें तो नगा राजनीतिक मुद्दों का अब तक समाधान नहीं हो पाने के चलते वर्तमान सरकार के खिलाफ माहौल भी दिख रहा है लेकिन भाजपा के बड़े नेताओं ने जिस तरह खुद मोर्चा संभाल लिया है उससे हालात में बदलाव भी हो सकता है। हाल ही में गृह मंत्री अमित शाह यहां का दौरा करके गये हैं और असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा भी यहां आ चुके हैं।

कर्नाटक-कर्नाटक की बात करें तो वर्तमान में भाजपा शासित यह राज्य दक्षिण में पैठ बनाने के लिए भाजपा के लिए बहुत मजबूत कड़ी है। कर्नाटक में पांव जमा कर ही भाजपा तमिलनाडु और पुडुचेरी के विधानसभा चुनावों में भी कमाल दिखा सकी थी। इस महत्वपूर्ण राज्य को भाजपा अपने हाथ से जाने नहीं देना चाहती लेकिन राज्य सरकार के खिलाफ भ्रष्टाचार के जो आरोप हाल में लगाये गये उससे पार्टी की छवि पर बुरा असर पड़ा है।

तेलंगाना-तेलगांना विधानसभा चुनावों की बात करें तो भारत राष्ट्र समिति के नेतृत्व वाली सरकार पूरा जोर लगा रही है कि वह सत्ता में लौटे लेकिन उसे चुनावों में भाजपा से कड़ी टक्कर मिलेगी। हाल के वर्षों में यहां भाजपा जिस तेजी से मजबूत हुई है उसको देखते हुए भारत राष्ट्र समिति पूरी तरह अलर्ट है। तेलंगाना में मुख्य मुकाबला वैसे तो भारत राष्ट्र समिति और भाजपा के बीच ही होगा लेकिन कांग्रेस भी यहां मुकाबले में है, इसके अलावा एआईएमआईएम, तेलुगु देशम पार्टी और वाईएसआर तेलंगाना पार्टी तथा कुछ अन्य क्षेत्रीय दल भी मैदान में होंगे।

मध्य प्रदेश-वहीं मध्य प्रदेश की बात करें तो यहां पिछले चुनावों में भाजपा बहुत कम मतों के अंतर से चुनाव हार गयी थी लेकिन साल 2020 में राजनीतिक परिस्थितियां ऐसी घूमीं कि ज्योतिरादित्य सिंधिया के

नेतृत्व में कांग्रेस के दो दर्जन विधायकों ने बगावत कर भाजपा का दामन थाम लिया। जिससे कमलनाथ की सरकार गिर गयी और सत्ता में पुनः शिवराज स्थापित हुए। वर्तमान में शिवराज सिंह चौहान की सरकार विभिन्न कार्यों के माध्यम से जनता को प्रसन्न करने में लगी हुई है। सरकार का प्रयास है कि एक बार फिर भाजपा को सत्ता मिले लेकिन पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के नेतृत्व में कांग्रेस ने भी जीजान लगा रखा है। कमलनाथ ने हाल में सर्वे कर यह भी पता लगाया है कि कांग्रेस कितनी कमजोर है। इस राज्य में वैसे तो मुख्य मुकाबला भाजपा और कांग्रेस के बीच ही होना है लेकिन आम आदमी पार्टी ने भी यहां जड़ें जमाना शुरू कर दिया है।

छत्तीसगढ़-कांग्रेस शासित छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल भाजपा और संघ परिवार के प्रिय मुद्दों पर भी जिस तरीके से काम कर रहे हैं उससे भाजपा के लिए चुनौती बढ़ती जा रही है। भूपेश बघेल को हालांकि अपने मंत्रिमंडलीय सहयोगी से चुनौती भी मिली लेकिन आलाकमान का वरदहस्त होने के चलते उनकी कुर्सी पूरे कार्यकाल में बची रही। भाजपा यहां कांग्रेस की मुख्य प्रतिद्वंद्वी तो है लेकिन पार्टी का नेतृत्व चुनावों में कौन करेगा इस बात को लेकर स्थिति अभी तक साफ नहीं है इसीलिए भाजपा पिछड़ भी रही है। हाल के सभी उपचुनाव भी भाजपा हारी है।

राजस्थान-वहीं राजस्थान की बात करें तो कांग्रेस शासित इस राज्य का राजनीतिक इतिहास हर चुनाव में सत्ता बदल का रहा है। खासतौर पर जिस तरह मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट के बीच नेतृत्व को लेकर जंग जारी है, भाजपा को उसका भी लाभ चुनावों में मिलने की उम्मीद है। लेकिन नेतृत्व को लेकर जंग सिर्फ कांग्रेस में ही है, ऐसा भी नहीं है। भाजपा में भी वसुंधरा राजे के विरोध और समर्थन में पार्टी नेताओं में आपस में ही तलवारें खिंची हुई हैं। पिछले साल राजस्थान में कुछ ऐसी घटनाएं हुईं जिन्होंने साम्पदायिक रूप से तनाव बढ़ाया इसके लिए भाजपा ने गहलोत सरकार को हिंदू विरोधी भी करार दिया था। राजस्थान विधानसभा के पिछले चुनाव परिणामों की बात करें तो 200 सदस्यीय विधानसभा में कांग्रेस के 100, भाजपा के 73, बसपा के 6, 13 निर्दलीय, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के 3, माकपा के 2, भारतीय ट्राइबल पार्टी के 2 और राष्ट्रीय लोक दल का एक विधायक जीत कर आये थे।

मिजोरम-मिजोरम की बात करें तो पिछले चुनावों में यहां 40 सदस्यीय विधानसभा में मिजो नेशनल फ्रंट के 26, कांग्रेस के 5, जोरम पीपल्स मूवमेंट के 8 और भाजपा का एक विधायक जीत कर आये थे।

फिर नड्डा को कमान

भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष के तौर पर जगत प्रकाश नड्डा का कार्यकाल एक साल के लिए बढ़ा दिया गया है। 2024 के लोकसभा चुनावों को देखते हुए बीजेपी की कार्यकारिणी ने इसका फैसला लिया है। गृह मंत्री अमित शाह ने इसकी जानकारी देते हुए कहा कि ये साल सदस्यता अभियान का साल है। छह साल बाद नए सिरे से सदस्यता होती है। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में जेपी नड्डा का कार्यकाल जून 2024 तक बढ़ा दिया गया है।अमित शाह ने कहा कि नड्डा जी 20 जनवरी 2024 को भाजपा के अध्यक्ष बने। उनके अध्यक्ष बनने के बाद इस सदी की सबसे बड़ी महामारी कोविड का सामना पूरे देश को करना पड़ा। देश की कई राज्य और केंद्र में बीजेपी की सरकार होने के कारण स्वाभाविक रूप से इस महामारी का सामना करने में भारतीय जनता पार्टी के संगठन की भूमिका बहुत अहम हो जाती है। नड्डा जी के नेतृत्व में बीजेपी का पूरा संगठन बूथ से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर सेवा ही संगठन है के मंत्र के साथ काम में जुटा। ढेर सारे गांव में चाहे गरीबों के घर में मदद पहुंचाना हो, जिनका कोई नहीं था उसके अंतिम संस्कार तक। कोविड के प्रकोप को पार करने में बीजेपी कार्यतकर्ताओं ने अहम भूमिका निभाई। अमित शाह ने कहा कि कैसे एक राजनीतिक दल का संगठन महामारी में सेवा कर सकता है उसका ज्वलंत उदाहरण बीजेपी ने नड्डा जी के अध्यक्षता में देश-दुनिया के सामने रखा। हमने बिहार में सबसे ज्यादा स्ट्राइक रेट प्राप्त किया। महाराष्ट्र में भी हम फिर से चुनकर आए। हरियाणा में भी हमारी सरकार बनी। मणिपुर, आसाम, उत्तराखंड आदि में भी बीजेपी ने एक बहुत बड़ी सफलता हासिल की। अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले 2023 में ही 9 राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने नेताओं से इन सभी चुनावों में जीत दर्ज करने के लिए कमर कसने का आह्वान किया है। 2014 में केंद्र में मोदी सरकार बनने के बाद से भाजपा ने ज्यादातर चुनावों में जीत हासिल की है। वह ऐसा माहौल बनाने में कामयाब रही है कि उसके सामने विपक्ष कमजोर दिखाई देता है। हालांकि जब से राहुल गांधी कांग्रेस की %भारत जोड़ो यात्रा% (क्द्धड्डह्लड्डह्ल छ्वश्रस्त्रश्च ड्ढड्डह्लह्ड्ड) लेकर निकले हैं, थोड़ी हवा जरूर बदली है लेकिन चुनाव में कितना फायदा होगा, यह अभी नहीं कहा जा सकता है। हाल में गुजरात और हिमाचल प्रदेश में चुनाव हुए, तो पहाड़ी राज्य में कांग्रेस सत्ता हासिल करने में कामयाब भी रही। इधर भाजपा के लिए %कहीं खुशी कहीं गम% वाली स्थिति बनी। गुजरात में तो प्रचंड जीत मिली लेकिन 15 साल से दिल्ली एमसीडी की सत्ता पर काबिज भाजपा को नई-नवेली आम आदमी पार्टी ने बाहर कर दिया। ऐसे अनिश्चितता भरे माहौल में क्या 9 राज्यों में भाजपा के लिए एकतरफा जीत हासिल करना इतना आसान होगा? सत्तारूढ़ भगवा दल अपने संगठन को मजबूत करने के लिए पिछले कई महीनों से मिशन 2024 में जुटा हुआ है। भाजपा की पूरी कोशिश है कि लगातार तीसरी बार कमल खिलाया जाए और एक बार फिर मोदी सरकार बने।

मोदी कैबिनेट से मप्र के दो से तीन मंत्री हो सकते हैं ड्रॉप

पार्टी के वरिष्ठ नेता बता रहे हैं कि सत्ता और संगठन में संभावित बदलावों पर कार्यसमिति में विशेष बात नहीं हुई, बल्कि इस दौरान कोर टीम के कुछ नेताओं की अलग चर्चा होने की संभावना है। इसमें मोदी कैबिनेट के संभावित फेरबदल की कवायद में मप्र के दो से तीन मंत्री ड्रॉप हो सकते हैं। इस पर भी जल्द निर्णय होगा, क्योंकि जिन्हें ड्रॉप किया जाना है उन्हें संगठन में आजमाया जा सकता है। राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक में सोमवार को प्रदेश भाजपा का प्रेजेंटेशन नहीं हुआ। रिपोर्ट कार्ड उन राज्यों का लिया गया, जहां इस साल चुनाव हैं। खासतौर पर कर्नाटक, मेघालय, राजस्थान, मणिपुर, तेलंगाना जैसे राज्य शामिल हैं। मप्र की तरफ से प्रारंभिक जानकारी प्रदेश संगठन की ओर से दी गई। मप्र और छत्तीसगढ़ से बाद में डिटेल रिपोर्ट कार्ड लिया जाएगा। सोशल मीडिया-जमीन पर ठोस जमावट काम अभी बाकी है।

अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि मंदिर का भव्य शुभारंभ अगले साल 1 जनवरी को होगा. केंद्र सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार का अनुमान है कि एक बार खुलने के बाद, मंदिर में प्रतिदिन 1 लाख से अधिक भक्त आएंगे और 2047 तक 10 करोड़ से अधिक भक्त सालाना अयोध्या आ सकते हैं. इसका सीधा मतलब है कि उत्तर प्रदेश सरकार 32,000 करोड़ रुपये की मेगा योजना के साथ अयोध्या को विकसित करने जा रही है. अयोध्या को वैश्विक पर्यटन और आध्यात्मिक गंतव्य में बदलने के लिए 37 एजेंसियों द्वारा निष्पादित 264 परियोजनाएं शामिल हैं. मंदिर के निर्माण पर करीब 1,800 करोड़ रुपये खर्च होंगे और यह राशि दान से प्राप्त होगी. 2024 में भारत की राजनीति पर मंदिर के प्रभाव के आकलन से पहले यह जानना होगा कि इस साल 30 दिसंबर तक भव्य श्री राम जन्मभूमि मंदिर का भूतल ही बनकर तैयार होगा. इसमें रामलला की मूर्तियां स्थापित होंगी और अगले साल जनवरी में यह श्रद्धालुओं के दर्शन के खुल जाएगा. दरअसल मंदिर ट्रस्ट, सार्वजनिक दर्शन के लिए खोलने से पहले पूरे मंदिर के तैयार होने का इंतजार नहीं कर रहा है. मंदिर की पहली और दूसरी मंजिल को 30 दिसंबर, 2024 तक पूरा होने में एक और साल लगेगा. यह 71 एकड़ से अधिक का पूरा परिसर 2025 में बनकर तैयार होगा. निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्रा ने डीडी न्यूज के साथ हाल ही में बातचीत में कहा था कि नए मंदिर में मूल रामलला की मूर्तियां स्थापित की जाएंगी. वहीं, भगवान राम की एक नई मूर्ति (लगभग 3 फीट ऊंची) भी स्थापित की जा सकती है, ताकि मूर्तियां, भक्तों द्वारा 19 मीटर की दूरी से देखी जा सकें. ट्रस्ट ने कहा है कि मंदिर का जीवन 1,000 साल से अधिक होगा अयोध्या में लगभग 32,000 करोड़ रुपये की 264 परियोजनाओं के साथ शहर के विकास के हिस्से के रूप में अयोध्या में राजमार्गों, सड़कों, बुनियादी ढांचे, टाउनशिप, भव्य प्रवेश द्वार, बहु-स्तरीय पार्किंग सुविधाएं और एक नया हवाई अड्डा बन रहा है.

अयोध्या से जुड़ेगी रामराजा की नगरी ओरछा

गडकरी ने किया बड़ा ऐलान; शिवराज बोले- महाकाल लोक जैसा बनेगा रामराजा लोक

मध्यप्रदेश में रामराजा सरकार की नगरी ओरछा को रामजन्मभूमि अयोध्या से जोड़ा जाएगा। केंद्रीय सड़क और परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने इसकी घोषणा की। गडकरी ने सोमवार को ओरछा में 6800 करोड़ रुपए की लागत से 550 किलोमीटर की 18 सड़क परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया।इस अवसर पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि- रामराजा मंदिर इलाके का विकास काशी और उज्जैन के कॉरिडोर जैसा करेंगे। सीएम ने ओरछा में राम राजा लोक और चित्रकूट में वनवासी राम लोक का निर्माण करने की घोषणा भी की।

केंद्रीय मंत्री गडकरी ने कहा कि जब अयोध्या में भव्य राम मंदिर बन रहा है, तो उसके अनुसार सड़कें भी बनाई जाएगी। उन्होंने कहा कि 4 हजार करोड़ की लागत से 84 कोशी पथ बनाया जा रहा है। आसपास की सभी प्रमुख सड़कों को जोड़ा जाएगा। पैदल पथ पर कालीन की तरह हरी घास लगाई जाएगी। ओरछा के आसपास के सभी मार्गों को बनाने के वक्त भगवान श्रीराम का इतिहास भी तस्वीरों के माध्यम से दिखाया जाएगा।ओरछा और पीताम्बरा पीठ में लाखों लोगों की आवाजाही को देखते हुए भूमि अधिग्रहित कर यात्रियों के लिए फूड मॉल बनाए जाएंगे और यहां के सभी तीर्थ स्थलों की सड़कों के आसपास सुंदर घास युक्त फुटपाथ बनाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि मुझे बहुत खुशी है कि बुंदेलखंड की धरती और राजाराम की नगरी ओरछा में आने का मौका मिला। ओरछा और चित्रकुट को अन्य शहरों से जोड़ने के लिए करीब 70 हजार करोड़ के रोड के काम कर रहे हैं।ओरछा में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह ने कहा आज तक ऐसा हजारों करोड़ों की सड़कों का लोकार्पण और शिलान्यास नहीं देखा। आज देश में कुछ लोग ऐसे हो गए हैं जो भगवान राम और तुलसीदास के बारे में भी ऐसी-वैसी बातें बोलते हैं। भगवान राम हमारे अस्तित्व हैं, राम हमारे प्राण हैं, राम हमारे रोम-रोम में हैं, और हमारी हर सांस में बसे हैं। मुख्यमंत्री ने भारत जोड़ो यात्रा पर निशाना साधते हुए कहा कि ऐसी यात्राओं से भारत जुड़ेगा क्याज अगर भारत कोई जोड़ रहा है तो

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नितिन गडकरी भारत जोड़ रहे हैं। भारत शानदार सड़कों की कनेक्टीविटी से जुड़ रहा है। कांग्रेस पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि हमने पहले भी सड़कें देखी थी, खजुराहो जब कोई जाता था तो हड्डी पसली टूट जाती थी। लेकिन, आज किसी का भी पेट का पानी नहीं हिलता। मुख्यमंत्री ने कहा कि दो महीने में निवाड़ी जिले के हर घर में नल से पानी पहुंचा दिया जाएगा। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि उज्जैन और बनारस की तर्ज पर ओरछा रामराजा मंदिर के इलाके को विकसित किया जाएगा इससे पहले मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जैसे ही ओरछा पहुंचे, उन्होंने मीडिया से चर्चा की और कहा कि 6 हजार 800 करोड़ की लागत की सड़कें बुंदेलखंड को मिलने वाली है। ये सौगातों की बौछार हैं, बल्कि बौछार नहीं घनघोर सौगातें हैं। इन सड़कों के बनने से पूरे बुंदेलखंड की कनेक्टिविटी बेहतर होगी। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी को धन्यवाद देते हुए मुख्यमंत्री ने उनका अभार व्यक्त किया है। सीएम शिवराज सिंह ने कहा कि पूरे बुंदेलखंड में सड़कों का जाल होगा या जल जीवन मिशन की बात हो, या हर खेत में सिंचाई के लिए केन और बेतवा की सौगात हो...सभी भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने ही दी है, और इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद देता हूं।

धंसता ऐतिहासिक शहर

GOONJ SPECIAL REPORT

उत्तराखंड का जोशीमठ भविष्य के लिए बड़ी चेतावनी भी लेकर आया है। वैसे मौसम संबंधी अत्यधनिक घटनाओं जैसे भारी वर्षा और बाढ़ ने भी जोशीमठ के धंसने में योगदान दिया है। जून 2013 और फरवरी 2021 की बाढ़ की घटनाओं से भी क्षेत्र में जमीन धंसने का खतरा बढ़ा है।

उत्तराखंड के जोशीमठ में हजारों मकानों में दरारों की प्राकृतिक आपदा के लिए प्रकृति कम और शासन तंत्र ज्यादा जिम्मेदार है। प्रकृति से खिलवाड़ करने के प्रति आंखें मूंदें रखने वाले नाकारा तंत्र को यदि सजा का प्रावधान नहीं किया गया तो प्रकृति इसी तरह सजा देती रहेगी, जिसका खामियाजा आम लोग भुगतते रहेंगे। जोशीमठ में कुल 4,500 इमारतें हैं और इनमें से 610 में बड़ी दरारें आ गई हैं। जिससे वे रहने लायक नहीं रह गई हैं। वर्ष 2006 की एक वैज्ञानिक रिपोर्ट में भी कहा गया था कि जोशीमठ प्रति वर्ष एक सेंटीमीटर धंस रहा है। उस वक्त यदि इस रिपोर्ट को गंभीरता से लेते हुए पर्यावरण और भूगर्भ संबंधी खतरों को टालने की कवायद के गंभीर प्रयास किए गए होते, तो शायद बर्बादी की यह नौबत नहीं आती।

दरअसल, जोशीमठ में भू-धंसाव के पीछे अनियंत्रित निर्माण भी जिम्मेदार माना जा रहा है। बेतरतीब और अनियोजित निर्माण का जो दंश आज जोशीमठ झेल रहा है, उत्तराखंड में पहाड़ के हर छोटे-बड़े शहरों की कहानी कमोबेश जोशीमठ जैसी ही है। पर्यावरण और भूगर्भ विशेषज्ञ सालों पहले ही हिमालय क्षेत्र में बसे पहाड़ी राज्यों में भूकम्प सहित दूसरी तरह की प्राकृतिक आपदाओं की चेतावनी दे चुके हैं। इसके बावजूद वोटों की राजनीति के डर से राज्यों और केंद्र सरकार ने इसकी रोकथाम के उपाय करने के लिए कठोर कदम नहीं उठाए। इसकी कीमत पूर्व में हजारों लोगों को अपनी जान देकर चुकानी पड़ी है।

जोशीमठ दरार

उत्तराखंड सरकार के आपदा प्रबंधन विभाग और विश्व बैंक ने वर्ष 2018 में एक अध्ययन करवाया था। इस अध्ययन के अनुसार इस राज्य में 6300 से अधिक स्थान भूस्खलन जोन के रूप में चिन्हित किए गए। एक संबंधित रिपोर्ट में बताया गया है कि राज्य में चल रही हजारों करोड़ रुपये की विकास परियोजनाएं पहाड़ों को काट कर या फिर जंगलों को उजाड़ कर बन रही हैं और इसी कारण से भूस्खलन जोन की संख्या बढ़ रही है।

अगस्त 2022 से उत्तराखंड राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, जोशीमठ के धंसने में भूगर्भीय कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अत्यधिक मौसम की घटनाओं जैसे भारी वर्षा और बाढ़ ने भी जोशीमठ के धंसने में योगदान दिया है। जून 2013 और फरवरी 2021 की बाढ़ की घटनाओं से भी क्षेत्र में जमीन धंसने का खतरा बढ़ा है।

गढ़वाल आयुक्त महेश चंद्र मिश्रा की अध्यक्षता में एक पैनल ने 1978 में एक रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें कहा गया था कि शहर और नीती और माणा घाटियों में बड़े

दशहत की दरार

निर्माण कार्य नहीं किए जाने चाहिए क्योंकि ये क्षेत्र मोरेन पर स्थित हैं। मोरेन यानी चट्टानों, तलछट और चट्टानों का ढेर। जोशीमठ, हेम, अर्नोल्ड और अगस्त गैंसर की पुस्तक सेंट्रल हिमालय के अनुसार, भूस्खलन

क्यों धंस रहा जोशीमठ

1976 में आई मिश्रा समिति की रिपोर्ट में जोशीमठ के धीरे-धीरे धंसने की हुई थी पुष्टि

समिति ने जोशीमठ में बड़े निर्माण कार्य नहीं करने की कही थी बात

2022 में गढ़वाल विवि के वैज्ञानिकों की रिपोर्ट में जोशीमठ की भूवैज्ञानिक नींव में अस्थिरता की बातें कही थीं

के मलबे पर बनाया गया है। 1971 में कुछ घरों ने दरारों की सूचना दी थी, जिससे एक रिपोर्ट मिली जिसमें कुछ उपायों की सिफारिश की गई थी। जिसमें मौजूदा पेड़ों के संरक्षण और अधिक पेड़ों के रोपण के साथ-साथ उन शिलाखंडों का संरक्षण भी शामिल है, जिन पर शहर बना है। हालांकि, ऐसे दावे हैं कि इन उपायों को कभी लागू नहीं किया गया।

इतना ही नहीं भूकम्प की दृष्टि से उत्तराखण्ड अत्यंत संवेदनशील माना जाता है। इसका अधिकांश भाग हिमालयी भू-भाग में स्थित होने के कारण यहाँ भूकम्प की आशंका प्रबल बनी रहती है। भूगर्भ विज्ञानियों के अनुसार हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं का निर्माण भारतीय भूखण्ड के यूरेशियाई भूखण्ड से टकराने के परिणाम से हुई है। भूगर्भ विज्ञानी मानते हैं कि भारतीय भूखण्ड आज भी सतत रूप से उत्तर-पूर्व की दिशा में धीरे-धीरे खिसक रहा है जिस कारण हिमालय की चट्टानें दबाव की स्थिति में बनी हुई हैं। चट्टानों में संचित यह ऊर्जा जब अवमुक्त होती है तो भूकम्प आता है। विगत दो शताब्दियों से 8.0 परिणाम से अधिक का भूकम्प इस क्षेत्र में नहीं आया है जिस कारण भूगर्भ में बड़ी मात्रा में संचित ऊर्जा अवमुक्त नहीं हो पायी है और इससे भविष्य में यहाँ भूकम्प की संवेदनशीलता अत्यधिक बढ़ने की आशंका है। हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड जैसे हिमालयी राज्य अपनी पारिस्थितिकी के नुकसान के कारण अपरिवर्तनीय क्षय के चरण में प्रवेश कर रहे हैं और यहाँ भूस्खलन की लगातार घटनाएँ अपरिहार्य बन सकती हैं। इस पहल से, हिन्दूकुश हिमालय क्षेत्र और इसकी पर्वत श्रृंखला में स्थित इन पाँचों देशों के अलावा, चीन, म्याँमार एवं अफ़ग़ानिस्तान में भी लोगों की आजीविका व कल्याण सकारात्मक रूप में प्रभावित होने की उम्मीद है। इसे तीसरे ध्रुव के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि इसमें ध्रुवीय चोटी क्षेत्र से इतर, दुनिया में सबसे बड़े हिम आवरण, हिमनद के बाहर पर्माफ्रॉस्ट स्थित हैं। नेपाल में स्थित एक अन्तर-सरकारी ज्ञान एवं शिक्षण केन्द्र, इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटेन डेवलपमेंट द्वारा किए गए एक आकलन के अनुसार, पहले से ही जलवायु परिवर्तन से गम्भीर रूप से प्रभावित हिन्दूकुश हिमालय क्षेत्र का तापमान, पूर्व-औद्योगिक स्तर के मुक़ाबले, वर्ष 2100 तक, पाँच डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है।

हिमालय से निकलने वाली 60 प्रतिशत जलधाराओं में दिनों-दिन पानी की मात्रा कम हो रही है। ग्लोबल वार्मिंग के असर से हिमालय के ग्लेशियर पिघलने की चेतावनी पर्यावरण विशेषज्ञ पहले कई बार दे चुके हैं। जिसके चलते नदियों में पानी बढ़ेगा और उसके परिणामस्वरूप कई नगर-गांव जल मग्न हो जाएंगे। वहीं धरती के बढ़ते तापमान को थामने वाली छतरी के नष्ट होने से भयानक सूखा, बाढ़ व गरमी पड़ेगी। जाहिर है कि ऐसे हालात में मानव-जीवन पर भी संकट होगा। हिमालय पहाड़ न केवल हर साल बढ़ रहा है, बल्कि इसमें भूगर्भीय उठापटक चलती रहती है। यहां पेड़ भूमि को बांध कर रखने में बड़ी भूमिका निभाते हैं जो कि कटाव व पहाड़ को ढहने से रोकने का एकमात्र उपाय है। हिमालय की संरचना में परिवर्तन होने से कई बार यमुना में पानी का संकट भी खड़ा होता है। दरअसल अधिक सुरंग या अविरल धारा को रोकने से पहाड़ अपने नैसर्गिक स्वरूप में रह नहीं पाता और उसके दूरगामी परिणाम विभिन्न प्राकृतिक आपदा के रूप में सामने आ रहे हैं। हिमालय और आसपास के क्षेत्रों में चट्टानों के गिरने, भूस्खलन और भारी बारिश के कारण व्यापक दुष्प्रभाव सामने आ रहे हैं, जिसे प्रकृति के प्रकोप के रूप में समझा जाना चाहिए। जोशीमठ में भूस्खलन एक और नई चेतावनी है, यदि वक्त रहते क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थों से ऊपर उठ कर सरकारों ने इस पर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया तो आने वाले वक्त में प्रकृति के रौद्ररूप के कहर को आम लोगों पर टूटने से रोका नहीं जा सकेगा।

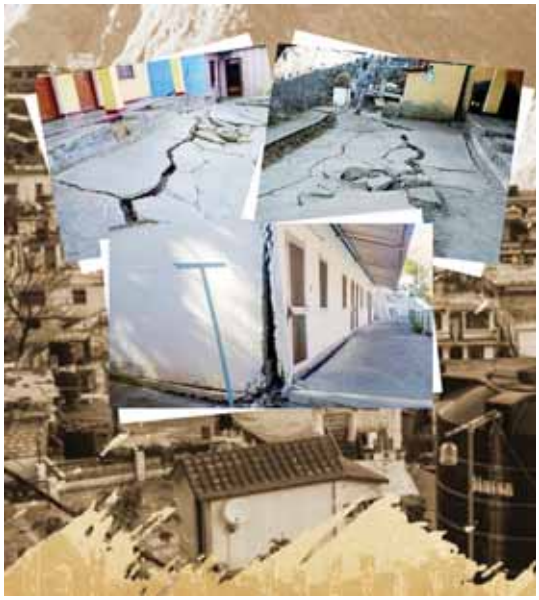

चमत्कार को चुनौती

मध्य प्रदेश के बागेश्वर धाम सरकार पं. धीरेंद्र शास्त्री आजकल चर्चा में हैं। ये चर्चा नागपुर से शुरू हुई, जब पं. धीरेंद्र शास्त्री पर अंधविश्वास फैलाने का आरोप लगा। अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति ने कहा कि जब बागेश्वर धाम सरकार को चमत्कार साबित करने के लिए चुनौती दी गई है तो कथा बीच में ही छोड़कर वह चले गए। इसके बाद पं. धीरेंद्र शास्त्री का भी बयान आया। उन्होंने चुनौती देने वालों को रायपुर बुलाया, जहां अभी उनकी रामकथा चल रही है। शुक्रवार को पं. धीरेंद्र शास्त्री ने कई मीडियाकर्मियों के सामने चमत्कार करने का दावा किया। एक नेशनल न्यूज चैनल के रिपोर्टर के चाचा का नाम लेकर मंच से बुलाया। अब ये वीडियो भी तेजी से वायरल हो रहा है। पं. धीरेंद्र शास्त्री के अनुयायी इसे चमत्कार मानते हैं। ऐसे में आज हम बताएंगे कि ये आखिर पं. धीरेंद्र शास्त्री हैं कौन? पूरा विवाद क्या है? बागेश्वर धाम क्या है? क्या सच में पं. धीरेंद्र शास्त्री के पास कोई दिव्य शक्ति है? आइए समझते हैं...

बागेश्वर धाम सरकार पं. धीरेंद्र शास्त्री की कथा के दौरान लोगों की समस्याएं सुनने और उसका समाधान करने का दावा किया जाता है। कहा जाता है कि भूत, प्रेत से लेकर बीमारी तक का इलाज बाबा की कथा में होता है। बाबा के समर्थक दावा करते हैं कि बागेश्वर धाम सरकार इंसान को देखते ही उसकी हर तरह की परेशानी जान लेते हैं और उसका समाधान करते हैं। वहीं, बागेश्वर धाम सरकार का कहना है कि वह लोगों की अर्जियां भगवान (बालाजी हनुमान) तक पहुंचाने का जरिया मात्र हैं। जिन्हें भगवान सुनकर समाधान देते हैं। इन्हीं दावों को नगापुर की अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति ने चुनौती दी। यहीं से विवाद की शुरुआत हुई।

क्या है बागेश्वर धाम का इतिहास?

छतरपुर के पास एक जगह है गढ़ा। यहीं पर बागेश्वर धाम है। यहां बालाजी हनुमान जी का मंदिर है। हर मंगलवार को बालाजी हनुमान जी के दर्शन को भारी भीड़ उमड़ती है। धीरे-धीरे इस दरबार को लोग बागेश्वर धाम सरकार के नाम से पुकारने लगे। ये मंदिर सैकड़ों साल पुराना बताया जाता है। 1986 में इस मंदिर का रेनोवेशन कराया गया था। 1987 के आसपास यहां एक संत बब्बा जी सेतु लाल जी महाराज आए। इनको भगवान दास जी महाराज

के नाम से भी जाना जाता था। धाम के मौजूदा प्रमुख पं. धीरेंद्र शास्त्री भगवान दास जी महाराज के ही पौत्र हैं। इसके बाद 1989 के समय बाबा जी द्वारा बागेश्वर धाम में एक विशाल महायज्ञ का आयोजन किया गया। 2012 में बागेश्वर धाम की सिद्ध पीठ पर श्रद्धालुओं की समस्याओं के निवारण के लिए दरबार का शुभारंभ हुआ। इसके बाद धीरे-धीरे बागेश्वर धाम के भक्त इस दरबार से जुड़ने लगे। दावा होता है कि यहां आने वाले लोगों की समस्याओं का निवारण किया जाता है।

अब पं. धीरेंद्र शास्त्री के बारे में जान लीजिए

अभी बागेश्वर धाम की बागडोर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के पास है। पं. धीरेंद्र का जन्म 1996 में छतरपुर (मध्य प्रदेश) जिले के गड़ागंज गांव में हुआ था। इनका पूरा परिवार अभी भी गड़ागंज में ही रहता है। पं. धीरेंद्र शास्त्री के दादा पं. भगवान दास गर्ग भी इस मंदिर के पुजारी रहे। कहा जाता है कि पं. धीरेंद्र का बचपन काफी कठिनाई में बीता। जब वह छोटे थे तो परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि एक वक्त का ही भोजन मिल पाता था। पं. धीरेंद्र शास्त्री के पिता का नाम रामकृपाल गर्ग और मां सरोज गर्ग है। धीरेंद्र के छोटे भाई शालिग्राम गर्ग जी महाराज हैं। वह भी बालाजी बागेश्वर धाम को समर्पित हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, पं. धीरेंद्र शास्त्री ने 11

कौन है पंडित धीरेंद्र शास्त्री, कैसे बने बाघेश्वर महाराज ?

साल की उम्र से ही बालाजी बागेश्वर धाम में पूजा पाठ शुरू कर दी थी। पं. धीरेंद्र शास्त्री के दादा ने चित्रकूट के निर्मोही अखाड़े से दीक्षा ली थी। इसके बाद वह गड़ागंज पहुंचे थे।

गदा लेकर क्यों चलते हैं?

बागेश्वर धाम प्रमुख पं. धीरेंद्र शास्त्री हमेशा एक छोटी गदा लेकर चलते हैं। उनका कहना है कि इससे उन्हें हनुमान जी की शक्तियां मिलती रहती हैं। वह हनुमान जी की आराधना करने के लिए लोगों को प्रेरित भी करते हैं। पं. धीरेंद्र शास्त्री कहते हैं कि वह किसी तरह का कोई चमत्कार नहीं करते हैं। वह तो सिर्फ बालाजी हनुमानजी के सामने लोगों की अर्जियां लगाते हैं। जिसे बालाजी स्वीकार कर लेते हैं। इससे आम लोगों को फायदा होता है। अंधविश्वास का विवाद सामने आने के बाद भी पं. धीरेंद्र शास्त्री ने सफाई पेश की। उन्होंने कहा कि वह अपने दरबार में किसी को बुलाते नहीं हैं। लोग खुद की मर्जी से आते हैं। वह तो सिर्फ लोगों की अर्जियों को भगवान के सामने रखते हैं। बाकी सबकुछ भगवान की तरफ से ही होता है।

धीरू से कैसे बने पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री बागेश्वर महाराज

बताया जाता है कि पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के अंदर बचपन से ही लोगों को प्रभावित करने की क्षमता रही है. वह हमेशा कुछ नया कर दिखाने का जज़्बा रखते थे. इसलिए उन्होंने अपने गढ़ा गांव में स्थित शंकर जी के प्राचीन मंदिर को अपना स्थान चुना. इस मंदिर में भगवान शिव का ज्योर्तिलिंग है. जिसे बागेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है. यहां साल 2016 में ग्रामवासियों के सहयोग से विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया.उसमें श्री बाला जी महाराज की मूर्ति की भी स्थापना की गई. तब से यह स्थान बागेश्वर धाम के नाम से जाना जाने लगा. लोगो का यहां पर आना जाना शुरू हुआ.

कौन हैं धीरेंद्र शास्त्री ?

- 4 जुलाई 1996 में छतरपुर (मध्यप्रदेश) के गरीब परिवार में जन्म हुआ.
- धीरेंद्र शास्त्री ने अपने दादा भगवान दास गर्ग से बचपन में गीता और रामायण सीखी.
- 8वीं तक की पढ़ाई अपने गांव से की पर 9-12वीं तक की पढ़ाई गांव से 5 KM दूर गंज के एक स्कूल से की.
- घर में आर्थिक तंगी के कारण वे बीए की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए इसलिए पूजा-कथा करना शुरू किया.
- धीरेंद्र शास्त्री के दादा भगवान दास गर्ग ने चित्रकूट के निर्मोही अखाड़े से दीक्षा प्राप्त की.
- गड़ा गांव में भगवान दास गर्ग ने बागेश्वर धाम मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया, वे यहीं दरबार भी लगाया करते थे.
- इसके बाद धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर बन गए और रामकथा सुनाने लगे.
- 14 जून 2022 को उन्हें लंदन की संसद में 3 अवॉर्ड संत शिरोमणि, वर्ल्ड बुक ऑफ लंदन और वर्ल्ड बुक ऑफ यूरोप से सम्मानित किया गया.

खेलों पर यौन उत्पीड़न का साया

खेल संघों की छवि में सुधार जरूरी है, वरना खिलाड़ियों का मनोबल कमजोर होगा

भारत में खेलों एवं खिलाड़ियों की उपेक्षा का लम्बा इतिहास है। खेल संघों की कार्यशैली, चयन में पक्षपात और खिलाड़ियों को समुचित सुविधाएं नहीं मिलने के आरोप तो पहले भी लगते रहे हैं, लेकिन ताजा मामला ऐसा है जिसने कुश्ती महासंघ ही नहीं, बल्कि तमाम खेल संघों की विश्वसनीयता एवं पारदर्शिता पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। इसे देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि सरकार की बंदिशों के बावजूद अधिकांश खेल संघों पर राजनेताओं और सरकारी अधिकारियों का ही कब्जा है। इनमें बड़ा भ्रष्टाचार व्याप्त है, जो वास्तविक खेल प्रतिभाओं को आगे नहीं आने देती। इन पदाधिकारियों की चिंता खेलों के विकास से अधिक अपने विकास की रहती है। इनका अधिकांश समय भी कुर्सी पर बैठे राजनेताओं को खुश करने एवं खेल संघों की राजनीतिक जोड़-तोड़ में ही व्यतीत होता है। खिलाड़ियों से अधिक तो ये पदाधिकारी सुविधाओं का भोग करते हैं, विदेश की यात्राएं करते हैं।

खेलों में भारत की स्थिति को दुनिया में मजबूती देने वाले अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी जब ऐसे अत्याचार, अन्याय एवं यौन शोषण के शिकार हो सकते हैं तो उभरते खिलाड़ियों के साथ क्या-क्या होता होगा, सहज अनुमान लगाया जा सकता है। यह खेल संघों के चरित्र एवं साख पर गंभीर दाग है, हालांकि ऐसा दाग यह पहली बार नहीं लगा है, पहले हाकी संघ में ऐसा आरोप लगा था। एक लॉन टेनिस खिलाड़ी के यौन शोषण और फिर खुदकुशी को लेकर भी उसके संघ के अध्यक्ष पर आरोप लगे थे। खेल प्रशिक्षकों पर तो महिला खिलाड़ियों को बहला-फुसला कर यौन शोषण करने के आरोप लगते रहते हैं, पर संघ के अध्यक्ष पर इस तरह बड़े पैमाने पर शामिल होने का आरोप पहली बार लगा है, जो दुर्भाग्यपूर्ण है। इन आरोपों के परिप्रेक्ष्य में तमाम ओलंपिक और राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीत चुके पहलवान उनके समर्थन में उतर आए हैं, उनका आक्रोश एवं विरोध करना जायज है। 'खेत कभी झूठ नहीं बोलता', जो करेंगे, वहीं गूंजेगा- इसलिये सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, जिसका असर खेल संगठनों पर होगा, राष्ट्र पर होगा। खेलों में शोषण एवं खेल संगठनों में यौन अत्याचारों का पर्दापाश होना एक गंभीर मसला है, वर्ल्ड चैंपियनशिप, कॉमनवेल्थ गेम्स और एशियन गेम्स में मेडल जीत चुकी पहलवान विनेश फोगाट से लेकर साक्षी मलिक ने भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष श्री बृजभूषण शरण सिंह पर जिस तरह के आरोप लगाये हैं वे बहुत गंभीर हैं, शर्म एवं लज्जाजनक हैं और गहन जांच कराये जाने की अपेक्षा रखते हैं। परन्तु इस मुद्दे पर केन्द्र के खेल मन्त्रालय ने जिस प्रकार की त्वरित प्रतिक्रिया देते हुए इसका संज्ञान लिया है वह स्वागत योग्य कदम है। क्योंकि इससे केवल महिला पहलवानों में ही नहीं बल्कि अन्य स्पर्धाओं की महिला खिलाड़ियों में भी आत्मविश्वास जगेगा और अपने साथ होने वाले किसी भी प्रकार के अन्याय, अत्याचार एवं शोषण के खिलाफ आवाज उठाने से नहीं चूकेंगी। महिला पहलवानों के साथ यह कैसे और क्यों हुआ कि सच्चाई के उजागर होने से पहले इन तमाम खिलाड़ियों को भारतीय कुश्ती संघ के अंदर या खेल मंत्रालय के बनाए ढांचे में कहीं भी अपनी बात पर सुनवाई का भरोसा नहीं होता हुआ दिखाई दिया और वे अपनी मांगों के साथ जंतर-मंतर पर धरना देने को मजबूर हो गए?

भले बृजभूषण शरण सिंह अपने बेकसूर होने एवं उन्हें जबरन फंसाने का करार दे रहे हों, पर उन पर खिलाड़ियों ने काफी गंभीर आरोप लगाए हैं। वे सत्तापक्ष के सांसद हैं, इसलिए खिलाड़ियों का भरोसा नहीं बन पा रहा कि उनके खिलाफ कोई कड़ी अनुशासनात्मक कार्रवाई हो पाएगी। इसलिए पहलवानों ने कहा है कि अगर उन्हें अध्यक्ष पद से नहीं हटाया गया और कुश्ती महासंघ का पुनर्गठन नहीं किया गया तो वे उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराएंगे। लेकिन भाजपा की सरकार ऐसे आरोपों को गंभीरता से लेती है और सख्त कार्रवाई भी करती है। बृजभूषण शरण सिंह के साथ भी ऐसा ही हुआ। उन्हें पद से हटा दिया गया। प्रश्न है कि जनप्रतिनिधि ऐसे घृणित एवं शर्मनाक काम करने की हिम्मत कैसे करते हैं? पिछली बार ओलंपिक में जब भारतीय महिला पहलवानों ने पदक जीत कर देश का नाम ऊंचा किया, तो प्रधानमंत्री ने भी गर्व के साथ वादा किया था कि खिलाड़ियों को सुविधा के स्तर पर किसी तरह की कमी नहीं रहने दी जाएगी। लेकिन सुविधा के साथ-साथ उनकी चारित्रिक सुरक्षा ज्यादा जरूरी है।

INDIAS RESOLUTION IS JUST AND EQUITABLE DEVELOPMENT OF ALL IN THE WORLD

Bhopa President Smt. Draupadi Murmu has said that the coming 25 years are critical for the development of India. India is continuously on an ambitious journey of becoming the Vishwa Guru. In the year 2047, when our country would be celebrating the Century of independence, by then our country would have become self-reliant and Vishwa guru. Overseas Indians settled in every corner of the world have an important role in India's development journey.President Smt. Draupadi Murmu said that India's resolve is equal and equitable development of all in the world. Our philosophy is of Vasudhaiva Kutumbakam. The whole world is one family for us. NRI's are reliable partners in India's development. We want to make you the full partner. Your collective strength, innovative ideas, technology, efficiency, capability will contribute significantly in making India self-reliant.

President Smt. Draupadi Murmu concluded the three-day 17th Pravasi Bharatiya Sammelan at Brilliant Convention Center, Indore today. She presented Pravasi Bharatiya Samman Award to 27 Non Resident Indians for their outstanding work in their respective fields. The President of Guyana, Dr. Mohd. Irfan Ali and the President of Suriname, Shri. Chandrika Prasad Santokhi were guest of honour. Governor Shri Mangu Bhai Patel was also present.

President Smt. Murmu said that Non Resident Indians have a special and important place in the world. They have

gained expertise in every field of art, literature, politics, sports, business, public welfare, science, technology etc. with their dedication and hard work. Your achievements are a matter of pride and happiness for us.

President Murmu said that the Pravasi Bharatiya Samman award is the highest honour of the country given to the Non Resident Indians. It showcases the work and contribution made by them to India and other countries. You all deserve congratulations for raising the flag of India in the world. President Smt. Murmu said that the Pravasi Bharatiya Divas Sammelan has played an important role in the progress of India in the past two decades. It has become an important platform for dialogue and co-operation between the government and the Indian diaspora. The conference was organised virtually 2 years ago due to Corona. It gives me great pleasure to meet all of you today. This conference is celebrated in the glorious memory of the return of the Father of the Nation, Mahatma Gandhi from Africa on 9 January 2015.

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023

15 लाख करोड़ से ज्यादा के निवेश प्रस्ताव

मध्यप्रदेश के विकास को निवेश से देंगे निर्णायक गतिः मुख्यमंत्री चौहान

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि निवेश के माध्यम से मध्यप्रदेश के विकास को निर्णायक गति प्रदान की जाएगी। मध्यप्रदेश में निवेश करने वाले उद्योगपतियों की एक पाई भी व्यर्थ नहीं जाने देंगे। संवाद, सहयोग, सुविधा, स्वीकृति, सेतु, सरलता और समन्वय के 07 सूत्रों से उद्योगों को पूर्ण सहयोग की रणनीति अपनाई जाएगी। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023 के समापन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि इस समिट के माध्यम से उद्योगपतियों और निवेशकों द्वारा 15 लाख 42 हजार 500 करोड़ रूपए से अधिक के लागत के उद्योग लगाने के प्रस्ताव मिले हैं, जिनसे 29 लाख लोगों को रोजगार देने की संभावनाओं को साकार किया जा सकेगा। इंटेशन टू इन्वेस्ट के फलस्वरूप क्रियान्वयन से प्रदेश की प्रगति में महत्वपूर्ण अध्याय जुड़ेगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बताया कि प्रदेश में नवकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में 06 लाख 09 हजार 478 करोड़, नगरीय अधोसंरचना में 02 लाख 80 हजार 753 करोड़, खाद्य प्र-संस्करण और एग्री क्षेत्र में 01 लाख 06 हजार 149 करोड़, माइनिंग और उससे जुड़े उद्योगों में 98 हजार 305 करोड़, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में 78 हजार 778 करोड़, केमिकल एवं पेट्रोलियम इंडस्ट्री में 76 हजार 769 करोड़, विभिन्न सेवाओं के क्षेत्र में 71 हजार 351 करोड़, ऑटोमोबाईल और इलेक्ट्रिक व्हीकल के क्षेत्र में 42 हजार 254 करोड़, फार्मास्युटिकल और हेल्थ सेक्टर में 17 हजार 991 करोड़, लॉजिस्टिक एवं वेयर हाऊसिंग क्षेत्र में 17 हजार 916 करोड़, टेक्सटाईल एवं गारमेंट क्षेत्र में 16 हजार 914 करोड़ तथा अन्य क्षेत्रों में 01 लाख 25 हजार 853 करोड़ का निवेश किए जाने के प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। इन सभी से 29 लाख लोगों को रोजगार मिलने की आशा है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट की सफलता के लिए प्रदेश के सभी मंत्रीगण, केन्द्रीय मंत्रीगण, विभिन्न देशों के राजदूत, बिजनेस लीडर्स और अधिकारी-कर्मचारी धन्यवाद के पात्र हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी और राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु का आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ। समिट के प्रति सभी में काफी उत्साह था। इंदौर के लोगों ने आतिथ्य परम्परा से अभिभूत कर दिया। इस तरह के कार्यक्रमों की भावी आवश्यकता को देखते हुए इंदौर में 10 हजार लोगों की क्षमता का नया कन्वेंशन सेंटर बनाया जाएगा। समिट का विवरण देते हुए मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बताया कि 84 देशों के बिजनेस डेलिगेट शामिल हुए। कुल 10 पार्टनर कंट्री थे।

इसके अलावा 35 देशों के दूतावासों के प्रतिनिधियों ने हिस्सेदारी की। दो दिन में 2600 से अधिक बैठकें हुई। पाँच हजार से अधिक व्यापारी बंधुओं ने हिस्सा लिया। कुल 36 विदेशी व्यापारिक संगठनों से करारनामे हुए। जी-20 के पार्टनर और अनेक बिजनेस डेलीगेट्स इस समिट से जुड़े। समिट में बीस सेक्टोरल प्रजेंटेशन उल्लेखनीय रहे।

केंद्रीय कृषि और किसान-कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि देवी अहिल्या की नगरी इंदौर का उज्जवल इतिहास और गौरवशाली विरासत है। आज इंदौर ने जिस

तरह पूरी दुनिया से आए मेहमानों का पूरी सेवा उदारता और समर्पण के साथ स्वागत किया है, उसके लिए पूरी दुनिया में इंदौर को याद किया जाएगा। श्री तोमर ने कहा कि वर्ष 2003 से पहले मध्यप्रदेश के उद्योगपति दूसरे राज्यों में जाने का सोच रहे थे, परंतु प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में निवेश के अनुरूप जो वातावरण बना है, उसके चलते आज दुनियाभर के निवेशक गौरव के साथ मध्य प्रदेश में निवेश के लिए आए हुए हैं। मध्यप्रदेश तेजी से विकास कर रहा है। देश की जीडीपी में मध्यप्रदेश का बहुत बड़ा योगदान है। कृषि के क्षेत्र में मध्यप्रदेश में अद्भुत कार्य हुआ है। आप सभी अधिक से अधिक निवेश करें और मध्य प्रदेश के विकास में पूरा योगदान दें। आप सभी के सहयोग से मध्य प्रदेश निश्चित रूप से ऊँचाइयों को छुएगा।

नागर विमानन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि मध्य प्रदेश न केवल अतुल्य भारत का हृदय है, बल्कि भारत के विकास का भी दिल है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भारत को पाँच ट्रिलियन डॉलर की अर्थ-व्यवस्था बनाने का जो संकल्प लिया है, उसमें मध्य प्रदेश का प्रदेश को साढ़े पाँच सौ बिलियन डॉलर की अर्थ-व्यवस्था बनाने का संकल्प शामिल है। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान उद्योग पुरुष हैं। वे प्रदेश के मुख्यमंत्री के साथ ही प्रदेश के सीईओ भी है। उनके नेतृत्व में प्रदेश तेजी से आगे बढ़ रहा है। श्री सिंधिया ने पाँच कारण बताए जिनके चलते निवेशकों को मध्यप्रदेश में निवेश करना चाहिए, वे हैं अच्छी अधोसंरचना, कनेक्टिविटी, लॉजिस्टिक्स, पावर सरप्लस और मार्केट एक्सेस। श्री सिंधिया ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में विश्व में भारत की आर्थिक विकास दर सर्वाधिक है। भारत विश्व की 11वीं सबसे बड़ी अर्थ-व्यवस्था से पाँचवें स्थान पर आ गया है तथा वर्ष 2030 तक विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ-व्यवस्था बनेगा। भारत में निवेश के लिए बहुत अच्छा वातावरण है। हमारे पास बेस्ट टेलेंट है, इनोवेशन है और परंपरा के साथ आधुनिकता भी है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के मंत्र सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास पर चलकर हम विश्व के सिरमौर होंगे।

प्रधानमंत्री मोदी ने प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन 2023 का शुभारंभ किया

प्रवासी भारतीय विश्व में भारत के ब्रांड एंबेसेडर है, वे विश्व की भारत के प्रति बढ़ती जिज्ञासा को शांत करें : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि सदियों से विश्व को भारत को जानने की उत्सुकता रही है। भारतीय दर्शन, संस्कृति, हमारे जीवन मूल्य, हमारी वैश्विक दृष्टि, हमारी गौरवशाली परंपराएँ और आज के युग में भारत की मजबूत होती अर्थ-व्यवस्था, विज्ञान, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, रक्षा एवं अंतरिक्ष विज्ञान सभी विशिष्ट है और विश्व के आकर्षण का केंद्र हैं। आज वैश्विक मंच पर भारत की अपनी एक अलग आवाज, अपनी एक अलग पहचान है, जो आने वाले समय में और मजबूत होगी। भारत के प्रति विश्व की जिज्ञासा बढ़ेगी। प्रवासी भारतीयों की यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है कि विश्व की भारत के प्रति इस बढ़ती हुई जिज्ञासा को शांत करें। वे भारत के सस्टेनेबल फ्यूचर के मॉडल को विश्व भर में प्रचारित करें।प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि भारत न केवल विश्व के ज्ञान का केंद्र है, बल्कि इसमें विश्व की दक्षता राजधानी बनने का सामर्थ्य है। भारत दुनिया के विकास का इंजन बन सकता है। प्रवासी भारतीय, मेक इन इंडिया, योग, आयुर्वेद, कुटीर उद्योग, हस्तशिल्प, मोटे अनाज को विश्व में प्रचारित करने में अपना अमूल्य योगदान दें।प्रधानमंत्री श्री मोदी ने आज ब्रिलिएंट कन्वेंशन सेंटर इंदौर में 17वें प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन का विधिवत शुभारंभ किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुयाना के राष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद इरफान अली और विशिष्ट अतिथि सूरीनाम के राष्ट्रपति श्री चंद्रिका प्रसाद संतोखी का स्वागत किया।प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि भारत का हृदय प्रदेश मध्यप्रदेश अपनी विशेष पहचान रखता है। यहाँ का नर्मदा जल, यहाँ के वन, आदिवासी परंपराएँ, यहाँ का अध्यात्म सब कुछ विशिष्ट और अविस्मरणीय है। उज्जैन में श्री महाकाल महालोक दिव्य और भव्य है। वहाँ जाकर भगवान श्री महाकाल के दर्शन अवश्य करें और आशीर्वाद प्राप्त करें। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि इंदौर अद्भुत शहर है। इंदौर एक दौर है, जो समय से आगे चलता है, फिर भी अपनी विरासत को समेटे रहता है। उन्होंने इंदौरी लहजे में कहा कि ÷अपन का इंदौर पूरी दुनिया में लाजवाब है।÷ यहाँ के नमकीन, पोहा, साबूदाना खिचड़ी, कचोरी, समोसे मुँह में पानी लाते हैं। यह भारत का स्वच्छतम शहर तो है ही, स्वाद की राजधानी भी है। यहाँ का अनुभव आप भुला नहीं पाएंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि इस वर्ष भारत को जी-20 समूह की अध्यक्षता का गौरव प्राप्त हुआ है। ऐसे समय में प्रवासी भारतीयों की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। यह दुनिया को भारत के विषय में बताने का मौका है। अतिथि देवो भव की परंपरा को निभाते हुए इस अवसर को ऐतिहासिक बनाएँ। जब प्रतिभागी अपने देश लौट के जाएँ, तो वहाँ रहने वाले भारतीय उन्हें बुलाएँ, उनके साथ संवाद करें।प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि आज प्रवासी भारतीयों का पूरे विश्व में श्रेष्ठ योगदान है। वे समर्थ और सशक्त भारत के निर्माण में संलग्न हैं। वे जहाँ रहते हैं भारत को अपने साथ, अपने दिल में रखते हैं। भारत के प्रति उनका कमिटमेंट है। वे भारत के हित में हमेशा कार्य करते रहते हैं। प्रवासी भारतीयों द्वारा पूरे विश्व में किए गए श्रेष्ठ कार्यों का दस्तावेजीकरण किया जाए। उनके कार्यों को ऑडियो-वीडियो माध्यम से प्रचारित किया जाए।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि भारतीय मूल के जो व्यक्ति विदेश में जन्में हैं, उन्हें भी उनके माता-पिता के देश के बारे में जानने की उत्सुकता है। उन्हें भारत दिखाएँ, भारत की परंपराओं से परिचित कराएँ। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने गुयाना के राष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद इरफान अली और सूरीनाम के राष्ट्रपति श्री चंद्रिका प्रसाद संतोखी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि उनके द्वारा बताई गई बातें बहुत उपयोगी हैं। मोदी ने गले मिल कर दोनों का अभिनंदन किया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि आज 17वें प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन पर मध्यप्रदेश में हर्ष का वातावरण है। आजादी के अमृत काल में इंदौर में तो अमृत वर्षा हो रही है। इंदौरवासियों ने दिल के और घरों के द्वार प्रवासी भारतीयों के स्वागत में खोल दिए हैं। अनेक नागरिक अपने घरों में अतिथियों को ठहराने के लिए खुले दिल से आगे आएँ। मेहमानों का यादगार सत्कार किया गया है। प्रवासी भारतीय दिवस को यादगार बनाने इंदौर के नमो ग्लोबल उद्यान में 66 राष्ट्र के लोग पौधे लगाने आए। यह सराहनीय कार्य हुआ है।मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने सशक्त और संपन्न भारत के लिए निरंतर

प्रयास किए हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने आत्म-निर्भरता, स्वच्छता और मजबूत अर्थ-व्यवस्था के मंत्र दिए हैं। मध्यप्रदेश में उनके मंत्र को जमीन पर उतारा जा रहा है। उनके स्वच्छता के आह्वान को तो इंदौर ने ऐसा स्वीकारा है कि स्वच्छता के लिए एक-एक नागरिक ने झाड़ू उठा ली। इंदौर एक-दो बार नहीं, पूरे छह बार देश का सबसे साफ-सुथरा शहर बना है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री ने ज्ञान, आत्म-निर्भरता को समझा और लागू किया है। नागरिक होने के नाते इसमें सभी सहयोगी बनें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि आज स्वामी विवेकानंद के शब्द याद आते हैं, जब उन्होंने सौ साल पहले कहा था कि महानिशा का अंत निकट है। अब भारत माता अंगड़ाई लेकर विश्व को नेतृत्व देने आगे बढ़ रही है। एक नरेंद्र जी (स्वामी विवेकानंद) के शब्दों को दूसरे नरेंद्र (प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी) चरितार्थ कर रहे है। वे दुनिया को प्रेम और शांति का संदेश देने की बात करते हैं। ऐसा कार्य मोदी जी ही कर सकते हैं। जब रूस और यूक्रेन का युद्ध हुआ तो भारतीय विद्यार्थी तिरंगा थामे बढ़ गए, मोदी जी ने राह निकाली। विद्यार्थी सुरक्षित रहे। मोदी जी ने सभी के सुख-समृद्धि की राह भी निकाली है। भारत विश्व में नेतृत्वकारी भूमिका में आगे आया है। वे दिलों पर राज करते हैं। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने प्रारंभ में मंच पर पहुँचने पर प्रधानमंत्री श्री मोदी और अन्य अतिथियों का अभिवादन कर स्वागत किया।

सूरीनाम के राष्ट्रपति श्री चंद्रिका प्रसाद संतोखी ने कहा कि मां और मातृभूमि स्वर्ग से बढ़ कर हैं, भारत के स्वच्छतम शहर और स्मार्ट सिटी इंदौर में मिले प्रेम, सम्मान और सत्कार ने इस अनुभूति को साकार कर दिया। प्रवासी भारतीय सम्मेलन दोनों देशों के लिए संभावनाओं के नए द्वार खोलेगा। राष्ट्रपति श्री संतोखी ने प्रवासी भारतीयों के लिए कैरेबियन देशों सहित अन्य देशों में हिंदी, योग, आयुर्वेद, अध्यात्म आदि पर प्रशिक्षण की व्यवस्था स्थापित करने की आवश्यकता बताई। इससे धर्म, संस्कृति और हमारी परंपराओं को प्रवासी भारतीय समुदायों में भी सुरक्षित रखने में सहायता मिलेगी। राष्ट्रपति श्री संतोखी ने भारतीय उद्यमों और बैंकों को अपनी गतिविधियों का विस्तार कैरेबियन देशों सहित प्रवासी भारतीयों के बाहुल्य वाले देशों में करने संबंधी सुझाव रखे। उन्होंने कहा कि हम प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व और उनकी वसुधैव कुटुंबकम के अनुरूप संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानने की दृष्टि से उपकृत हैं।

विधानसभा चुनाव के लिए कमलनाथ की नयी जंबो टीम तैयार

मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस की जंबो कार्यकारिणी बना दी गयी है. कमलनाथ की इस नयी टीम में 50 उपाध्यक्ष और 105 महासचिव बनाए गए हैं. इसके अलावा 64 संगठन जिलों में जिला अध्यक्षों की नियुक्ति की गई है. चुनाव को देखते हुए जातीय समीकरण और महिला वोट साधने का ध्यान रखा गया है. बीजेपी ने इस पर चुटकी ली है. सीएम शिवराज सिंह ने कहा ये तो पिता पुत्र की कार्यकारिणी है.अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव केसी वेणुगोपाल ने नयी प्रदेश कार्यकारिणी का ऐलान किया. कार्यकारिणी में पार्टी के उन नए पुराने चेहरों को जगह दी गई है जो हमेशा पार्टी के प्रति समर्पित रहे. कुछ उन नेताओं की भी कद्र की गयी है जो कांग्रेस छोड़ बाहर कर दिए गए थे. उन्हें उपाध्यक्ष और महासचिव पद से नवाजा गया है. माणक अग्रवाल फिर मुख्य धारा में लौट आए हैं. उन्हें उपाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी सौंपी गई है. पार्टी ने प्रदेश कार्यकारिणी में उन चेहरों को शामिल नहीं किया है जो विधानसभा का चुनाव लड़ने वाले हैं. मौजूदा कांग्रेस विधायकों को प्रदेश कार्यकारिणी से दूर रखा गया है ताकि वह अपना पूरा वक्त चुनाव में लगा सकें.

जातीय समीकरण के साथ महिलाओं को महत्व

कांग्रेस पार्टी की ये नयी कार्यकारिणी पूरी तरह चुनावी नजर आ रही है. चुनाव के लिए इतनी बड़ी संख्या में पार्टी पदाधिकारियों की नियुक्ति की गई है. प्रदेश कार्यकारिणी में जातीय समीकरणों के साथ महिला चेहरों को भी अहम जिम्मेदारी सौंपी गई है. हालांकि बड़ा मलहरा सीट से उपचुनाव लड़ने वाली राम सिया भारती को पार्टी पूरे प्रदेश में अपने सॉफ्ट हिंदुत्व के रूप में पेश करने की तैयारी में है. यही वजह है कि महासचिव पद पर राम सिया भारती को जगह दी गई है.

64 जिलाध्यक्ष

नयी कार्यकारिणी में 105 महासचिव और 64 जिलाध्यक्ष शामिल हैं. संगठन के लिहाज से कांग्रेस पार्टी के 64 जिलों में अध्यक्ष नियुक्त किए गए हैं. इंदौर जिला अध्यक्ष को भी बदला गया है. कांग्रेस संगठन के लिहाज से कुल 67 जिले हैं. इनमें से 64 में नियुक्तियां की गई है. भोपाल शहर और ग्रामीण में कोई बदलाव नहीं हुआ है. फिलहाल कैलाश मिश्रा भोपाल जिला अध्यक्ष बने रहेंगे.

नये प्रदेश उपाध्यक्षों की सूची

उपाध्यक्ष में अभय दुबे, अजय चोरदिया, अजय शाह, अजिता वाजपेई पांडे, अर्चना जायसवाल, अशोक सिंह, आशुतोष वर्मा, बालेंद्र शुक्ला, बटुक शंकर जोशी, चंद्रप्रभाष शेखर, दीपक सक्सेना, गजेंद्र सिंह राजू खेड़ी, गंगा तिवारी, गोविंद गोयल, हमीद काजी, जेपी धनोपिया, मोहम्मद कुरैशी, लाल चंद गुप्ता, महेंद्र जोशी, महेंद्र एस चौहान, माणक अग्रवाल, मानिक सिंह, मुजीब कुरैशी, नन्हे लाल धुर्वे, नरेंद्र नाहटा, नेहा सिंह, नूरी खान, फूल सिंह बरैया, प्रकाश जैन, प्रताप भानु शर्मा, प्रताप सिंह लोधी, राजकुमार पटेल, राजाराम त्रिपाठी, राजीव सिंह, राम प्रकाश यादव, राम गरीब वनवासी, रामेश्वर नीखरा, रामसेवक गुर्जर, साजिद अली, संजय सिंह मसानी, संजीव मोहन गुप्ता,

शोभा ओझा, सुभाष सोजतिया, स्वप्निल कोठारी, सैयद साजिद अली, तिलक सिंह लोधी, ताराचंद पटेल, वीके बाथम, देवेंद्र तिवारी, विश्वेश्वर भगत को बनाया गया है.

राजनीतिक मामलों की कमेटी

प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने पॉलिटिकल अफेयर कमेटी भी बनायी है. इसमें कुल 21 सदस्य शामिल रहेंगे. राजनीतिक मामलों से जुड़े फैसले ये कमेटी करेगी. इसमें कमलनाथ, दिग्विजय सिंह, गोविंद सिंह, कांतिलाल भूरिया, सुरेश पचौरी, अरुण यादव, अजय सिंह, विवेक तन्खा, राजमणि पटेल, नकुल नाथ, बाला बच्चन, जीतू पटवारी, सुरेंद्र चौधरी, रामनिवास रावत, एनपी प्रजापति, सज्जन सिंह वर्मा, आरिफ अकील, कमलेश्वर पटेल, महेंद्र जोशी, रामेश्वर नीखरा, शोभा ओझा को शामिल किया गया है.

हेलमेट जागरूकता रैली निकाली
यातायात सड़क सुरक्षा सप्ताह, जागरूकता अभियान

● गूंज न्यूज नेटवर्क

यातायात पुलिस द्वारा 11 से 17 जनवरी के बीच ''सड़क सुरक्षा सप्ताह'' मनाया जायेगा। ''सड़क सुरक्षा सप्ताह'' के शुभारंभ पर 11 जनवरी को यातायात पुलिस द्वारा ''हेलमेट जागरूकता बाईक रैली'' का आयोजन किया गया। रैली को मुख्य अतिथि सांसद विवेक शेजवलकर द्वारा पुलिस कन्ट्रोल रूम से हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया। इस ''हेलमेट जागरूकता बाईक रैली'' का नेतृत्व एडीजीपी ग्वालियर जोन डी श्रीनिवास वर्मा द्वारा स्वयं बाईक चला कर किया गया। रैली में एडीजी के साथ पुलिस अधीक्षक अमित सांघी, एएसपी यातायात श्रीमती मृगाखी डेका, एएसपी पश्चिम गजेन्द्र वर्धमान, एएसपी जयराज कुबेर, डीएसपी क्राईम शियाज केएम.सीएसपी इंदरगंज विजय भदौरिया, एसडीओपी घाटीगांव संतोष पटेल, एसडीओपी बेहट सुश्री हिना खान, डीएसपी यातायात नरेश बाबू अन्नोटिया, विक्रम सिंह कनपुरिया, आरआई रंजीत सिंह समेत यातायात पुलिस व शहर के थानों के पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों ने भी भाग लिया।

हेलमेट जागरूकता बाईक रैली पुलिस कंट्रोल रूम से प्रारंभ होकर सिटी सेंटर, माधव नगर, चेतकपुरी, अचलेश्वर चौराहा, मेडिकल चौराहा, मांडरे की माता, कस्तूरबा चौराहा, केआरजी. महाविद्यालय, पदमा तिराहा, रॉक्सी पुल, स्काउट गेट, महाराज बाड़ा, गश्त का ताजिया, राम मंदिर चौराहा, ऊंट पुल, इंदरगंज चौराहा, नदी गेट तिराहा, डीडी मॉल, फूलबाग, पड़ाव नया ब्रिज, तानसेन तिराहा से होते हुए वापस पुलिस कंट्रोल रूम पर समाप्त हुई। महाराज बाड़े पर आमजन द्वारा पुष्प वर्षा कर हेलमेट जागरूकता बाईक रैली का स्वागत किया गया। बाईक रैली के प्रारंभ से पूर्व कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद ने उपस्थित पुलिस अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश में घटित होने वाली दुर्घटनाओं में सर्वाधिक मृत्यू बिना हेलमेट तेजगति व असावधानीपूर्वक वाहन चलाने के कारण होती है। यातायात पुलिस द्वारा मनाये जाने वाले इस ''सड़क सुरक्षा सप्ताह'' का मुख्य उद्देष्य शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करना है। तद्उपरांत एडीजीपी ने उपस्थित सभी से कहा कि इस बाईक रैली का उद्देष्य आमजन में यातायात नियमों के प्रति जागरूकता पैदा करना है। जिससे वाहन चालकों की लापरवाही से प्रतिदिन होने वाली सडक दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सके साथ ही इनमें होने वाली जनहानि को रोका जा सके। ''सड़क सुरक्षा सप्ताह'' के तहत यातायात पुलिस द्वारा शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में आमजन एवं वाहन चालकों को सड़क पर वाहन चलाते समय यातायात नियमों का पालन करने, निर्धारित गति में वाहन चलाने, वाहनों में ओवरलोड सवारी ना बैठाने, निर्धारित स्थान पर ही वाहन खड़ा कर सवारियों को चढ़ाने व उतारने, वनवे के नियमों का पालन करने एवं वाहन चलाते समय सभी आवश्यक दस्तावेज साथ रखने की समझाइश दी जायेगी।

गणतंत्र का अर्थ है

हमारा संविधान, हमारी सरकार, हमारे कर्त्तव्य, हमारा अधिकार

• टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ और 26 जनवरी 1950 को भारत एक सम्प्रभु लोकतान्त्रिक गणराज्य घोषित हुआ। गणतंत्र दिवस भारत का राष्ट्रीय पर्व है। यह दिवस भारत के गणतंत्र बनने की खुशी में मनाया जाता है। गणतंत्र का अर्थ है हमारा संविधान, हमारी सरकार, हमारे कर्त्तव्य, हमारा अधिकार। इस व्यवस्था को हम सभी गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं। भारत में सभी पर्व और त्यौहार मनाते हैं, परन्तु गणतंत्र दिवस को हम राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाते हैं। इस पर्व का महत्व इसलिये भी बढ़ जाता है क्योंकि इसे सभी जाति एवं वर्ग के लोग एक साथ मिलकर मनाते हैं। 26 जनवरी, 1950 के दिन भारत को गणतात्रिक राष्ट्र घोषित किया गया था। इसी दिन स्वतंत्र भारत का नया संविधान लागू हुआ था।

26 जनवरी इसी तारीख को चुना गया और आजादी के 3 साल बाद 26 जनवरी, 1950 को पहली बार गणतंत्र दिवस मनाया गया। इस दिन देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने 21 तोपों की सलामी के साथ राष्ट्र ध्वज फहराया था। गणतंत्र दिवस 3 दिन तक चलने वाला ऐतिहासिक आयोजन होता है, जो 29 जनवरी को राजपथ में होने वाले बीटिंग रिट्रीट सेरेमनी के साथ समाप्त होता है। आपको बता दें कि पहली गणतंत्र दिवस परेड राजपथ पर साल 1955 से आयोजित होना शुरू हुई थी। इस कार्यक्रम का समापन अबाइड विद मी गाने के साथ होता है। माना जाता है कि यह राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के पसंदीदा गानों में से एक था। भारत के संविधान को तैयार करने में 2 साल, 11 महीने और 18 दिन का समय लगा था। इसमें कुल 448 आर्टिकल है। इसी के चलते भारतीय संविधान दुनिया का सबसे बड़ा लिखित संविधान कहलाता है। भारत के संविधान की एक हिंदी और एक अंग्रेजी कॉपी हाथ से लिखकर तैयार की गई थी। इसे तैयार करने के लिए हमारे देश के नेताओं ने दूसरे देश के संविधानों के कुछ अच्छे तथ्यों को शामिल किया था। उदाहरण के तौर पर इसे ऐसे देख सकते है कि स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे की अवधारणा को फ्रेंच संविधान से लिया गया था आपको बता दें कि भारतीय संविधान लागू होने से पहले हमारा मुल्क ब्रिटिश गवर्नमेंट्स गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट 1935 के नियमों को पालन करता था। लेकिन 1950 में भारतीय संविधान लागू हो गया। गणतंत्र दिवस कार्यक्रम में 21 तोपों की सलामी दी जाती है और सलामी राष्ट्रगान के साथ शुरू होती है और इसी के साथ समाप्त भी हो जाती है। 21 तोपों की सलामी देने के लिए भारतीय सेना की 7 तोपें इस्तेमाल की जाती हैं और हर तोप से 3 फायर किए जाते हैं। और अंत में जाते-जाते हम आपको बता दें कि गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति राजपथ पर तिरंगा फहराते हैं। यह दिन हिन्दुस्तान के लिए बेहद खास है और इस दिन महज झंडा फहराया जाता है और राजपथ में कार्यक्रम का आयोजन होता है। इस मौके पर भारत रत्न, परमवीर चक्र, अशोक चक्र और कीर्ति चक्र जैसे पुरस्कार दिए जाते है। इसके अलावा इस दिन अलग-अलग क्षेत्रों में असाधारण बहादुरी का प्रदर्शन करने वाले बच्चों को वीरता पुरस्कार भी दिया जाता है। जिसकी शुरुआत 1957 में हुई थी।

गूंज टीम ने मनाया गणतंत्र दिवस

गूंज टीम द्वारा 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के अवसर पर गूंज कार्यालय में गणतंत्र दिवस मनाया गया और झंडा वंदन किया गया। इस अवसर पर गूंज की पूरी टीम उपस्थित रही। गूंज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह ने झंडावंदन किया। देशभक्ति के गीतों के साथ पूरे जोश जज्बे के साथ हमारा राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस मनाया गया।

बेटी संरक्षण दिवसः बेटियों को किया सम्मानित

● गूंज न्यूज नेटवर्क

महिला सशक्तिकरण एवं नारी सम्मान को लेकर पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता द्वारा विगत 10 वर्षों से 30 दिसम्बर के दिन आयोजित किये जा रहे बेटी संरक्षण दिवस के उपलक्ष्य में आरजी कॉलेज में बेटी संरक्षण दिवस के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिभाशाली 65 बेटियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर एकल युवा ग्वालियर द्वारा ओपन माइक के माध्यम से बेटियों को अभिव्यक्ति का मंच उपलब्ध कराया गया तथा बेटियों को बोलने का अवसर प्रदान किया गया। इस अवसर पर पूर्व विधायक रमेश अग्रवाल, जनभागीदारी समिति की अध्यक्ष श्रीमती मीना सचान, कॉलेज के प्राचार्य डॉ एम आर कौशल सहित अन्य शिक्षक व शिक्षकाएं एवं कॉलेज की छात्राएं उपस्थित रहीं।

शासकीय कमलाराजा स्नातकोत्तर स्वशासी कन्या महाविद्यालय के सेमिनार हॉल में आयोजित कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत कॉलेज की शिक्षकाओं द्वारा किया गया। इस अवसर पर पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता ने बेटियों को संबोधित करते हुए कहा कि कन्याओ। की हत्या मानवता का प्रतीक नहीं हैं हमें मानवता का सन्देश देकर बालिकाओ की सुरक्षा करनी होगी तथा बालिकाओ के खिलाफ अपराध करने वालो को दण्डित करना होगा। उन्हानें कहा कि बालिकाएं हमारे लिए बोझ नहीं सम्पति है। केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा बेटियों के संरक्षण और शिक्षा के लिए बेटी बचाओ बेटी पढाओ जैसे अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं। हमें इन अभियानों में सहयोग कर बालिकाओं को इन योजनाओं के प्रति जागरूक करना होगाइस अवसर पर पूर्व विधायक रमेश अग्रवाल ने कहा कि भारतीय संस्कारों में बेटियों को देवी रूप का दर्जा प्राप्त है। देवियों की पूजा के अवसर पर महिलाओ की पूजा विशेष रूप से देखने को मिलती है। आज हम सभी भारतीय कन्या पूजन के लिए अनेक त्यौहार मनाते है। यानि महिलाओ को प्राचीन समय से महत्व दिया जा रहा है। लेकिन आज का पुरुषप्रधान समाज बालिकाओ और महिलाओं को स्वीकार ही नहीं करता है। जो हमारे लिए चिंता का विषय है। लोग नवीनतम तकनीको के माध्यम से बालिकाओ को समाप्त करने में लगे हुए है। हम सभी को मिलकर बेटियों के सम्मान व उनकी सुरक्षा का संकल्प लेना चाहिए। इस अवसर पर बृजेंद्र सिंह जादौन, हरीश अग्रवाल, अभिषेक रघुवंशी, स्मिता सहस्त्रबुद्धे, ज्योति दिनकर, एकल युवा अध्यक्ष कु. संचिता गुप्ता, शांभवी जैन, मृदुला वैश्य, दिव्या लावण्या, दिव्यांशु दोहरे, निकिता शर्मा, समीक्षा गुप्ता फैंस क्लब से रजनी भदोरिया, मुकेश आर्य, प्रहलाद श्रीवास्तव, कुलदीप राठौर, विशाल रजक, अरविंद शर्मा सहित सम्मानित वरिष्ठ सदस्य गण भारी संख्या में छात्राएं उपस्थित रही। एकल युवा ग्वालियर द्वारा ओपन माइक प्रतियोगिता का आयोजनविगत 10 वर्ष से पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता द्वारा आयोजित किये जा रहे बेटी संरक्षण दिवस पर निरंतर सरकारी गर्ल्स स्कूल और कॉलेजस में बेटियों को सम्मानित किया जाकर उनमें सुरक्षा का भाव उत्पन्न किया जाता है।

पूर्व महापौर समीक्षा गुप्ता विगत 10 वर्षों से बेटी संरक्षण दिवस के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिभाशाली बेटियों को कर रहीं हैं सम्मानित

रैली निकालकर दिया बेटी संरक्षण का संदेश

बेटी संरक्षण दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के उपरांत बेटियों के साथ जागरुकता रैली का आयोजिन किया गया। रैली में बेटियों द्वारा तख्तियां लेकर बेटी संरक्षण का संदेश दिया गया। रैली नेहरू पार्क से प्रारंभ होकर पार्क के चारों ओर तथा महाविद्यालय परिसर में घूमकर समापन किया गया। इस रैली का उद्देश्य समाज को यह संदेश देना कि बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ व बेटी है तो कल है।

जिस देश में चंद्रशेखर, भगत सिंह, राजगुरू, सुभाष चन्द्र, खुदिराम बोस, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे क्रान्तिकारी तथा गाँधी, तिलक, पटेल, नेहरु, जैसे देशभक्त मौजूद हों उस देश को गुलाम कौन रख सकता था। आखिर देशभक्तों के महत्वपूर्ण योगदान से 14 अगस्त की अर्धरात्री को अंग्रेजों की दासता एवं अत्याचार से हमें आजादी प्राप्त हुई थी। ये आजादी अमूल्य है क्योंकि इस आजादी में हमारे असंख्य भाई-बन्धुओं का संघर्ष, त्याग तथा बलिदान समाहित है।

वीरता और शौर्य की बेमिसाल निशानी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

लक्ष्मीबाई

वीरता और शौर्य की बेमिसाल निशानी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की जब भी बात होती है तो वह इस वीरांगना के वर्णन के बगैर अधूरी मानी जाती है. यूं तो नारी को कोमल और ममता की देवी माना जाता है लेकिन समय आने पर महिला का चंडी रूप विनाश का परिचायक साबित होता है. लक्ष्मीबाई भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का वह ध्रुव तारा है जिसकी रोशनी कभी कम नहीं हो सकती.

भगत सिंह

युवाओं के असली आदर्श कहते हैं युवा हवा की तरह होते हैं जिन्हें जिस दिशा में बढ़ाया जाए वह उसी दिशा में बह जाते हैं. युवाओं को अगर सही नेतृत्व मिले तो वह देश की अनमोल धरोहर साबित होते हैं. भगत सिंह ने भारतीय युवाओं की उपयोगिता और उनके जुनून को सबके सामने रखा. शहीद भगत सिंह ने ही देश के नौजवानों में ऊर्जा का ऐसा गुबार भरा कि विदेशी हुकूमत को इनसे डर लगने लगा. हाथ जोड़कर निवेदन करने की जगह लोहे से लोहा लेने की आग के साथ आजादी की लड़ाई में कूदने वाले भगत सिंह की दिलेरी की कहानियां आज भी हमारे अंदर देशभक्ति की आग जलाती हैं.

चन्द्रशेखर आजाद

आजाद नाम आजाद, पिता का नाम स्वाधीनता, घर जेल. यह परिचय उस चिंगारी का था जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की आग में सबसे ज्यादा घी डाला. चन्द्रशेखर आजाद ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारियों की ऐसी फौज खड़ा की है अंग्रेजों की नींद उड़ गई. अंग्रेजों में चन्द्रशेखर का ऐसा खौफ था कि उनकी मौत के बाद भी कोई उनके करीब जाने से डरता था. वीरता, साहस और दृढ़निश्चयता की ऐसी मिसाल दुनिया में बहुत कम देखने को मिलती है.

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

असल मायनों में बोस- अगर आप सोचते हैं कि कहानियों में आने वाले साहसी कारनामें करने वाले नायक सिर्फ कल्पनाओं में होते हैं तो शायद आप गलत है. सुभाष चन्द बोस वह शख्स हैं जिन्होंने अपने कारनामों से ना सिर्फ अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे बल्कि उन्होंने देश को आजाद कराने के लिए अपनी एक अलग फौज भी खड़ी की थी. देश से तो उन्हें निकाल दिया गया लेकिन माटी की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने विदेश में जाकर ऐसी सेना चुनी जिसने अंग्रेजों को दिन में ही तारे दिखाने का हौसला दिखाया. अगर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को भारतीय राजनेताओं का सहयोग मिला होता तो मुमकिन था वह देश को एक सशक्त आजादी दिलाते जिसके बाद शायद आज हमें पाकिस्तान नाम की परेशानी का सामना न करना पड़ता.

सुखदेव

युवाओं के एक और आदर्श - दिल में आस हो और हौशलों में उड़न हो तो कोई मंजिल दूर नहीं होती. कुछ ऐसा ही हौशला था युवा सुखदेव में जिन्होंने देशभक्ति की राह पर चलते हुए फांसी के झुले पर हंसते हंसते खुद को कुर्बान कर दिया.

करतार सिंह सराभा

19 साल के अमर शहीद की कहानी - जिस उम्र में आजकल के बच्चें स्कूल और कॉलेजों में अपना कॅरियर बनाने के सपने देखते हैं उस उम्र में इस महान सेनानी ने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति

विश्व योग दिवस, विश्व अहिंसा दिवस आदि भारतीय अस्मिता एवं अस्तित्व से जुड़े विश्व दिवसों की श्रृंखला में विश्व हिन्दी दिवस प्रति वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करना तथा हिन्दी को अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है। विश्व हिंदी दिवस पहली बार 10 जनवरी, 2006 को मनाया गया था। आज हिन्दी विश्व की सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली तीसरी भाषा है, विश्व में हिन्दी की प्रतिष्ठा एवं प्रयोग दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है, लेकिन देश में उसकी उपेक्षा एक बड़ा प्रश्न है। सच्चाई तो यह है कि देश में हिंदी अपने उचित सम्मान को लेकर जूझ रही है। राजनीति की दूषित एवं संकीर्ण सोच का परिणाम है कि हिन्दी को जो सम्मान मिलना चाहिए, वह स्थान एवं सम्मान आजादी के अमृत महोत्सव मना चुके राष्ट्र में अंग्रेजी को मिल रहा है। अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं की सहायता जरूर ली जाए लेकिन तकनीकी एवं कानून की पढ़ाई एवं राजकाज की भाषा के माध्यम के तौर पर अंग्रेजी को प्रतिबंधित या नियंत्रित किया जाना चाहिए। आज भी भारतीय न्यायालयों में अंग्रेजी में ही कामकाज होना राष्ट्रीयता को कमजोर कर रहा है। हिन्दी को प्रतिष्ठापित करने एवं उचित सम्मान देने की जरूरत इसलिये है कि हिन्दी के बहुआयामी एवं बहुतायत उपयोग में ही राष्ट्रीयता की मजबूती है, जीवन है, प्रगति है और शक्ति है किन्तु इसकी उपेक्षा में विनाश है, अगति है और स्खलन है। एथनोलॉग के वर्ल्ड लैंग्वेज डेटाबेस के 22वें संस्करण में बताया गया है कि दुनियाभर की 20 सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में 6 भारतीय भाषाएं हैं, इनमें हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन गयी है। वर्तमान में 637 मिलियन लोग हिंदी भाषा का उपयोग करते हैं। हिंदी भारत की राजभाषा है। सांस्कृतिक और पारंपरिक महत्व को समेट हिंदी अब विश्व में लगातार अपना फैलाव कररही है, हिन्दी राष्ट्रीयता की प्रतीक भाषा है, उसको राजभाषा बनाने एवं राष्ट्रीयता के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठापित करने के नाम पर भारत में उदासीनता एवं उपेक्षा की स्थितियां परेशान करने वाली है, विडम्बनापूर्ण है। विश्वस्तर पर प्रतिष्ठा पा रही हिंदी को

देश में दबाने की नहीं, ऊपर उठाने की आवश्यकता है। हमने जिस त्वरता से हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की दिशा में पहल की, उसी त्वरा से राजनैतिक कारणों से हिन्दी की उपेक्षा भी है, यही कारण है कि आज भी देश में हिन्दी भाषा को वह स्थान प्राप्त नहीं है, जो होना चाहिए। देश-विदेश में इसे जानने-समझने वालों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। इंटरनेट के इस युग ने हिंदी को वैश्विक धाक जमाने में नया आसमान मुहैया कराया है। हिन्दी को लागू करने में एक दिन का विलम्ब भी सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीयता की हानि है। जिस प्रकार हमने अंग्रेज लुटेरों के राजनीतिक शासन को सफलतापूर्वक समाप्त कर दिया, उसी प्रकार सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय प्रतीकों के लुटेरे रूपी अंग्रेजी को भी तत्काल निर्वासित करना होगा। हिन्दी को उसका गौरवपूर्ण स्थान दिलाने के लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल विहारी वाजपेयी के प्रयत्नों को राष्ट्र सदा स्मरणीय रखेगा। क्योंकि मोदी ने सितंबर 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में भाषण देकर न केवल हिन्दी को गौरवान्वित किया बल्कि देश के हर नागरिक का सीना चौड़ा किया। भारत सहित दुनिया के अनेक देशों में विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाने लगा क्योंकि भारत और अन्य देशों में 70 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। पाकिस्तान की तो अधिकांश आबादी हिंदी बोलती व समझती है। बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, तिब्बत, म्यांमार, अफगानिस्तान में भी लाखों लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। फिजी, सुरिनाम, गुयाना, त्रिनिदाद जैसे देश तो हिंदी भाषियों द्वारा ही बसाए गये हैं। हिन्दी का हर दृष्टि से इतना महत्व होते हुए भी भारत में प्रत्येक स्तर पर इसकी इतनी उपेक्षा क्यों? शेक्सपीयर ने कहा था-'दुर्बलता! तेरा नाम स्त्री है।' पर आज शेक्सपीयर होता तो आम भारतीय एवं सरकारों के द्वारा हो रही हिन्दी की उपेक्षा के परिप्रेक्ष्य में कहता-'दुर्बलता! तेरा नाम भारतीय जनता एवं शासन व्यवस्था है।' क्योंकि दुनिया में हिन्दी का वर्चस्व बढ़ रहा है, लेकिन हमारे देश में ऐसा नहीं होना, इन्हीं विरोधाभासी एवं विडम्बनापूर्ण परिस्थितियों को ही दर्शाता है। राजभाषा बनने के बाद हिन्दी ने विभिन्न राज्यों के कामकाज में आपसी लोगों से सम्पर्क स्थापित करने का अभिनव कार्य किया है। लेकिन अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण आज भी हिन्दी भाषा को वह स्थान प्राप्त नहीं है, जो होना चाहिए। विशेषतः अदालतों में आज भी अंग्रेजी का वर्चस्व कायम रहना, एक बड़ा प्रश्न है।

हीराबेन का सौ वर्षों का संघर्षपूर्ण जीवन

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जैसे विश्वनायक गढ़ने वाली मां हीराबेन मोदी का निधन न केवल पुत्र के लिये बल्कि समूचे राष्ट्र के लिये एक अपूरणीय क्षति है, एक आघात है।। भारतीय मूल्यों एवं आदर्शों की शताब्दी यात्रा का विराम होना निश्चित ही देश के हर व्यक्ति के लिये शोक का विषय है, लेकिन यह वक्त शोक का नहीं, बल्कि उनके आदर्शों एवं जीवन-मूल्यों को आत्मसात करने का है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान हर किसी के साथ नहीं रह सकता इसलिए उसने माँ को बनाया। हीराबेन ऐसी ही विलक्षण मां थी, एक देवदूत थी। कहने को वह इंसान थी, लेकिन भगवान से कम नहीं थी। वह एक मन्दिर थी, पूजा थी और वह ही तीर्थ थी। वह न केवल नरेन्द्र मोदी की जीवनदात्री बल्कि संस्कार निर्मात्री थी, बल्कि इस राष्ट्र आदर्श मां थी। उनके निधन से ममत्व, संस्कार, त्याग, समर्पण, सादगी एवं आदर्शों का युग ठहर गया है।

पीएम मोदी की मां हीराबेन का सौ वर्षों का संघर्षपूर्ण जीवन भारतीय आदर्शों का प्रतीक है। श्री मोदी ने 'मातृदेवोभव' की भावना और हीराबेन के मूल्यों को अपने जीवन में ढाला है। तभी मोदी के लिये मां से बढ़कर कोई इंसानी रिश्ता नहीं रहा। वह सम्पूर्ण गुणों से युक्त थी, गंभीरता में समुद्र और धैर्य में हिमालय के समान थी। उनका आशीर्वाद वरदान बना। यही कारण है कि तमाम व्यस्तताओं एवं जिम्मेदारियों के बीच मोदी अपनी मां के पास जाते, उसके पास बैठते, उसकी सुनते, उसको देखते, उसकी बातों को मानते थे। उसका आशीर्वाद लेकर, उसके दर्शन करके एवं एक नई ऊर्जा लेकर निकलते थे।

साल 1923 में हीराबेन मोदी का जन्म हुआ था। उनकी

उम्र 100 साल थी। हीराबेन मोदी का विवाह दामोदर दास मूलचंद मोदी के साथ हुआ था। हीराबेन मोदी के पांच बेटे और एक बेटी है। हीराबेन मोदी के बेटों के नाम सोमा मोदी, अमृत मोदी, नरेंद्र मोदी, प्रह्लाद मोदी व पंकज मोदी हैं। वहीं उनकी बेटी का नाम वासंती बेन हसमुखलाल मोदी है। दामोदर दास मूलचंद मोदी अब इस दुनिया में नहीं हैं।, दामोदर दास मोदी पहले वड़नगर में सड़क पर स्टॉल लगाया करते थे। वहीं इसके बाद कुछ समय तक उन्होंने रेलवे स्टेशन पर चाय भी बेचने का काम किया। मोदी ने अपने एक ब्लॉग में बताया था कि कि वडनगर के जिस घर में हम लोग रहा करते थे वो बहुत ही छोटा था। उस घर में कोई खिड़की नहीं थी, कोई बाथरूम नहीं था, कोई शौचालय नहीं था। कुल मिलाकर मिट्टी की दीवारों और खपरैल की छत से बना वो एक-डेढ़ कमरे का ढांचा ही हमारा घर था, उसी में मां-पिताजी, हम सब भाई-बहन रहा करते थे। यह स्वाभाविक है कि जहां अभाव होता है, वहां तनाव भी होता है। लेकिन मां हीराबेन की विशेषता रही कि अभाव के बीच भी उन्होंने घर में कभी तनाव को हावी नहीं होने दिया।

हीराबेन का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणाओं का समवाय रहा है। वे समय की पाबंद थीं, उन्हें सुबह 4 बजे उठने की आदत थी, सुबह-सुबह ही वो बहुत सारे काम निपटा लिया करती थीं। गेहूं पीसना हो, बाजरा पीसना हो, चावल या दाल बीनना हो, सारे काम वो खुद करती थीं। वे काम करते हुए अपने कुछ पसंदीदा भजन या प्रभातियां गुनगुनाती रहती थीं। मां!' हीराबेन यह वो अलौकिक शब्द है, जिसके स्मरण मात्र से ही नरेन्द्र मोदी का रोम-रोम पुलकित हो उठता, हृदय में भावनाओं का अनहद ज्वार स्वतः उमड़ पड़ता और मनोःमस्तिष्क स्मृतियों के अथाह समुद्र में डूब जाता। उनके लिये 'मां' वो अमोघ मंत्र है, जिसके उच्चारण मात्र से ही हर पीड़ा का नाश हो जाता है। मोदी के अनुसार 'मां' की ममता और उसके आंचल की महिमा को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है, उसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। जिन्होंने मुझे और मेरे परिवार को आदर्श संस्कार दिए। उनके दिए गए संस्कार ही मेरी दृष्टि में उनकी मूल थाती है। जो हर मां की मूल पहचान होती है। उनके संस्कार एवं स्मृति ही मोदी के भावी जीवन का आधार है।

मध्यप्रदेश के होशंगाबाद के बंदाई गांव के एक किसान परिवार में उनका जन्म 1 जुलाई 1947 को हुआ और प्रारंभिक शिक्षा के बाद उन्होंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। इसके लिए वह जबलपुर गए थे, लेकिन अगले कुछ साल में जबलपुर उनके लिए राजनीति की जमीन तैयार कर रहा था। मध्यप्रदेश के होशंगाबाद के बंदाई गांव के एक किसान परिवार में उनका जन्म 1 जुलाई 1947 को

हुआ और प्रारंभिक शिक्षा के बाद उन्होंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। इसके लिए वह जबलपुर गए थे, लेकिन अगले कुछ साल में जबलपुर उनके लिए राजनीति की जमीन तैयार कर रहा था। असल में उन्होंने यहीं इंजीनियरिंग कॉलेज से ही छात्र राजनीति में कदम रखा और 52 वर्षीय सफल एवं धारदार राजनीतिक पारी खेली। पहली बार जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज में छात्र संघ के प्रसीडेंट चुने गए। युवा छात्र रहते हुए राजनीति में उनकी मजबूत पकड़ हो गई थी। इसी दौरान शरद कई क्रांतिकारी आंदोलन का हिस्सा भी रहे थे। जिनमें मिसा आंदोलन के तहत साल 1969, 1970, 1972 और 1975 में कई बार जेल भी जाना पड़ा। साल 1974 में, उन्होंने जबलपुर से लोकसभा उपचुनाव में कांग्रेस के खिलाफ विपक्ष के उम्मीदवार के रूप में जीत हासिल की। और 27 साल की उम्र में सांसद बने। जिसने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के खिलाफ उनकी राजनीतिक लड़ाई को और मजबूत किया। आपातकाल विरोधी आंदोलन के दौरान कई नेताओं ने संघर्ष कर अपनी एक अलग पहचान बनाई थी, शरद यादव उनमें से एक थे। एक ऐसी छवि जिसने उन्हें कई सालों तक सांसद बने रहने के दौरान जनता के सामने खुद को अच्छी एवं प्रखर राजनीतिक स्थिति में रखा।

नए साल ने अभी अपनी गति पूरी तरह से पकड़ी भी नहीं है, लेकिन हिंदुस्तान की सियासत ने अपना एक धुरंधर, जांबाज, कद्दावर का नेता जदयू के पूर्व अध्यक्ष शरद यादव को हमसे छीन लिया। बिहार से लेकर राष्ट्रीय राजनीति में एक संभावनाओं भरा राजनीति सफर ठहर गया, उनका निधन न केवल बिहार के लिये बल्कि भारतीय राजनीति के लिये एक गहरा आघात है, अपूरणीय क्षति है। वे निश्चित ही भारतीय राजनीति के नींव के पत्थर थे, मील के पत्थर थे। समाजवाद की बुलंद आवाज थे, डॉ. लोहिया के विचारों से प्रभावित प्रखर समाजवादी नेता थे। उन्होंने बिहार के मधेपुरा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से चार बार लोकसभा का प्रतिनिधित्व किया था, दो बार मध्यप्रदेश के जबलपुर से सांसद चुने गये थे, एक बार उत्तर प्रदेश के बदायूं से लोकसभा के लिए चुने गए और शरद यादव संभवतः भारत के पहले ऐसे राजनेता हैं जो तीन राज्यों मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार से लोकसभा के सदस्य के लिए चुने गए थे। देशहित में नीतियां बनाने एवं राजनीति की नयी दिशाएं तलाशने में माहिर शरद यादव का 76 वर्ष का जीवन सफर राजनीतिक आदर्शों की ऊंची मीनार हैं, राजनीति का एक प्रकाश है। उनका निधन एक युग की समाप्ति है। उन्हें हम समाजवादी सोच एवं भारतीय राजनीति का अक्षयकोष कह सकते हैं, वे गहन मानवीय चेतना के चितेरे जुझारु, नीडर, साहसिक एवं प्रखर व्यक्तित्व थे।

बहुत कम लोग जानते हैं कि शरद यादव इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग में गोल्ड मेडलिस्ट थे। उन्होंने रॉबर्ट्सन मॉडल साइंस कॉलेज से स्नातक की डिग्री भी हासिल की थी। शरद यादव बचपन से ही पढ़ने-लिखने में होनहार थे। शरद यादव को राजनीतिक लेख पढ़ना और संगीत सुनना बेहद पसंद था। खेल की बात करें तो हॉकी, कबड्डी और कुश्ती उनके पसंदीदा खेल थे। वे छात्र राजनीति से राजनीति में अपनी उपस्थिति का अहसास कराने वाले नेताओं में से एक थे। देश के

अलविदा शरद यादव (1947-2023)

शरद यादव ने 90 के दशक के अंत में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में केंद्रीय मंत्री के रूप में काम किया। वर्ष 1989 में वीपी सिंह सरकार में कपड़ा एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री बने थे। साल 1990 में शरद वापिस बिहार की तरफ चले गए। इसके बाद 23 साल के लंबे अरसे तक शरद का बिहार से ऐसा नाता रहा कि ज्यादातर लोग उन्हें बिहारी ही मानते थे। शरद यादव की शादी तब हुई जब उनकी उम्र 40 साल से अधिक के हो गई थी। उनकी पत्नी का नाम डॉ रेखा यादव है। शरद यादव की दो संतानें हैं। उनके बेटे का नाम शांतनु और बेटी का नाम सुभाषिनी है। बेटी की शादी गुरुग्राम के एक राजनीतिक परिवार में हुई है और बेटा अभी अविवाहित है।

समाजवादी नेताओं के तौर पर उनकी भी गिनती होती रही है। समाजवादी आंदोलन में वे अग्रणी भूमिका में रहे। राजनीति में खासा दखल रखने वाले वे देश के उन दिग्गज जमीनी नेताओं में शुमार किए जाते हैं जिन्होंने अपने बल पर राजनीति में नया मुकाम हासिल किया और राजनीति की नयी परिभाषाएं गढ़ी। उन्हें पिछड़ी जातियों का सबसे बड़ा नेता माना जाता है। उनकी पहचान ऐसे राजनेता की रही है जो साधारण किसान परिवार से निकलकर राजनीति में अपनी पहचान बनाई। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत मुलायम सिंह यादव, लालू यादव, एचडी देवगौड़ा और गुरुदास दासगुप्ता के साथ की थी।

शरद यादव केन्द्र सरकार में अनेक मंत्रालयों में मंत्री रहे। सबसे पहले उन्हें केंद्रीय कैबिनेट कपड़ा और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री बनाया गया। यूपी में राजनीतिक रंग जमाने के बाद 1991 से 2014 तक शरद यादव ने बिहार की जमीन पर पहुंचे। इस दौरान वो बिहार की मधेपुरा सीट से सांसद रहे। वर्ष 1995 में उन्हें जनता दल का कार्यकारी अध्यक्ष भी चुना गया। वर्ष 1999 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने लालू यादव को मात दे दी। 1998 में जनता दल यूनाइटेड पार्टी बनाई। साल 2004 में दूसरी बार राज्यसभा पहुंचे। इससे पहले 1999 में केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री और सितम्बर 2001 से 30 जून 2002 तक केंद्रीय श्रम मंत्री भी रहे। 1 जुलाई 2002 से 15 मई 2004 तक शरद यादव केंद्रीय उपभोक्ता मामले मंत्री, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री भी बनाए गए। साल 2012 में संसद में उनके बेहतरीन योगदान के लिए उन्हें 'उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार 2012' से नवाजा गया। साल 2014 में हुए लोकसभा चुनाव में उन्हें बिहार की मधेपुरा सीट से हार मिली और यहीं से उनका राजनीतिक कैरियर ढलान पर उतरता गया।

शरद यादव राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के संयोजक थे परन्तु उनकी पार्टी द्वारा गठबंधन से सम्बन्ध विच्छेद कर लेने के कारण उन्होंने संयोजक पद से त्याग पत्र दे दिया। राजनीतिक गठजोड़ के माहिर खिलाड़ी शरद यादव को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का राजनीतिक गुरु माना जाता है। उनका निधन राजनीति के सूर्य का अवसान है। उन्होंने सामाजिक सद्भाव को बनाए रखने में साहसिक योगदान किया। यादव जब विद्यार्थी थे तभी से उनके मन-मस्तिष्क पर डॉ. राम

मनोहर लोहिया के विचारों की गहरी छाप पड़ी। डॉ. लोहिया के विचारों ने ही उनके विशिष्ट व्यक्तित्व का निर्माण किया और उनका स्वतंत्र चिंतन, कथनी और करनी में समानता का सिद्धांत निरन्तर प्रेरणा का काम करता रहा है। डॉ. लोहिया के विशाल व्यक्तित्व की छाया में ही शरद यादव के सामाजिक, राजनीतिक विचारों ने गति और दिशा पाई। उसमें सत्य और निष्ठा का भाव तो होता ही था साथ ही उसमें विश्वास और चारित्रिक प्रामाणिकता भी होती थी। वे केवल राजनीतिक लाभ-हानि अथवा चुनावी हार-जीत के वशीभूत होकर ही बात नहीं करते थे बल्कि गरीबों के दुख-दर्द के सहभागी बनकर उसे महसूस भी करते थे। उनका अनूठा चरित्र सभी को आकर्षित करता रहा। विरोधी भी उनकी साफगोई कंठ से प्रशंसा करते हैं।

शरद यादव ने 90 के दशक के अंत में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में केंद्रीय मंत्री के रूप में काम किया। वर्ष 1989 में वीपी सिंह सरकार में कपड़ा एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री बने थे। साल 1990 में शरद वापिस बिहार की तरफ चले गए। इसके बाद 23 साल के लंबे अरसे तक शरद का बिहार से ऐसा नाता रहा कि ज्यादातर लोग उन्हें बिहारी ही मानते थे। शरद यादव की शादी तब हुई जब उनकी उम्र 40 साल से अधिक के हो गई थी। उनकी पत्नी का नाम डॉ रेखा यादव है। शरद यादव की दो संतानें हैं। उनके बेटे का नाम शांतनु और बेटी का नाम सुभाषिनी है। बेटी की शादी गुरुग्राम के एक राजनीतिक परिवार में हुई है और बेटा अभी अविवाहित है। भारत में समाजवादी होना कठिन तपस्या रही है। वैसे भी हमारे देश में समाजवादी प्रतिभा, चिंतन और कार्यशैली स्वतंत्र रही है। वास्तव में शरद यादव ऐसे समाजवादी रहे हैं जिन्होंने न केवल डॉ. लोहिया के विचारों और उनकी समाजवादी नीतियों को व्यावहारिकता के धरातल पर उतार कर समाजवादी आंदोलन को सही मायनों में नई ऊंचाइयां प्रदान की हैं बल्कि अपने लक्ष्य को पाने के लिए वह निरंतर प्रयत्नरत रहे हैं। समाजवादी नेताओं में शरद यादव सर्वश्रेष्ठ, कर्मठ और महत्वपूर्ण राजनेता थे। उनमें जुझारूपन और विपरीति परिस्थितियों से निरंतर संघर्ष करने का कृषक वाला अद्भुत साहसिक गुण था। उन्होंने कभी विपरीत परिस्थितियों से समझौता नहीं किया, निरंतर उनसे जूझते रहे और अंततः सफलता पाई। वास्तव में हमारे देश एवं समाज को शरद यादव से जो अपेक्षाएं थी उन पर तो वह खरे उतरे ही, बल्कि उससे ज्यादा भी बहुत कुछ करके दिखाया है। बेशक शरद यादव अब इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन अपने सफल राजनीतिक जीवन के दम पर वे हमेशा भारतीय राजनीति के आसमान में एक सितारे की तरह टिमटिमाते रहेंगे।

नया साल 2023 अंग्रेजी कैलेंडर के हिसाब से 01 जनवरी 2023 से नववर्ष प्रारंभ हो गया।। हिंदू पंचांग के अनुसार अगर हम देखें तो अंग्रेजी कैलेंडर के नए साल का शुभारंभ रविवार के दिन पौष माह के शुक्ल पक्ष दशमी तिथि, अश्विनी नक्षत्र, सिद्ध योग में होगा। साल के पहले ही महीने में मकर संक्रांति का त्योहार मनाया जाएगा जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करेंगे। उसके बाद जनवरी महीने की ही 26 जनवरी को बसंत पंचमी का त्योहार मनाया जाएगा। साथ ही 18 फरवरी भोलेनाथ का महापर्व महाशिवरात्रि मनाया जायेगा और फिर 08 मार्च को मनाई जाएगी रंगों भरी होली। 22 मार्च से माँ के चैत्र नवरात्रि का शुभारंभ हो जायेगा और फिर 30 मार्च को राम नवमी का पर्व आएगा। 21 अगस्त को नाग पंचमी, 30 अगस्त को बहनों का ख़ास पर्व रक्षाबंधन और फिर 7 सितंबर को श्री कृष्णा जन्माष्टमी का पर्व आएगा। और फिर जैसे ही अक्तूबर का महीना आयेगा तो 15 अक्तूबर 2023 से शारदीय नवरात्रि और हिंदू नववर्ष आरंभ हो जाएगा। 24 अक्तूबर को दशहरा का त्यौहार धूमधाम से मनाया जायेगा और फिर 12 नवंबर 2023 को दीपावली का त्योहार आएगा और 19 नवंबर को छठ पूजा मनाई जाएगी। इसी साल 2023 में चार ग्रहण भी लगेंगे जिसमें से सूर्य ग्रहण- 20 अप्रैल और 14 अक्तूबर को लगेंगे और चंद्र ग्रहण- 05 मई और 28 अक्तूबर को। इसके साथ ही अगर हम ग्रह गोचर की बात करें तो साल की शुरुआत में ही शनि कुंभ राशि में प्रवेश करेंगे। फिर अप्रैल के माह में में ग्रहों के स्वामी गुरु का राशि परिवर्तन होगा और अक्टूबर के महीने में राहु-केतु भी अपना राशि परिवर्तन करेंगे। तो अब आइये विस्तार से जानते हैं कि साल 2023 में जनवरी से लेकर दिसंबर तक कब और कौन से प्रमुख त्योहार और व्रत रखें जाएंगे।

साल 2023 के प्रमुख त्योहार

15 जनवरी मकर संक्रांति/ पोंगल
26 जनवरी बसंत पंचमी
18 फरवरी महाशिवरात्रि
08 मार्च होली
22 मार्च चैत्र नवरात्रि
30 मार्च राम नवमी
22 अप्रैल अक्षय तृतीया
21 अगस्त नाग पंचमी
30 अगस्त रक्षा बंधन
07 सितंबर जन्माष्टमी
19 सितंबर गणेश चतुर्थी
15 अक्टूबर शरद नवरात्रि
24 अक्टूबर दशहरा
01 नवंबर करवा चौथ
10 नवंबर धनतेरस
12 नवंबर दिवाली
19 नवंबर छठ पूजा

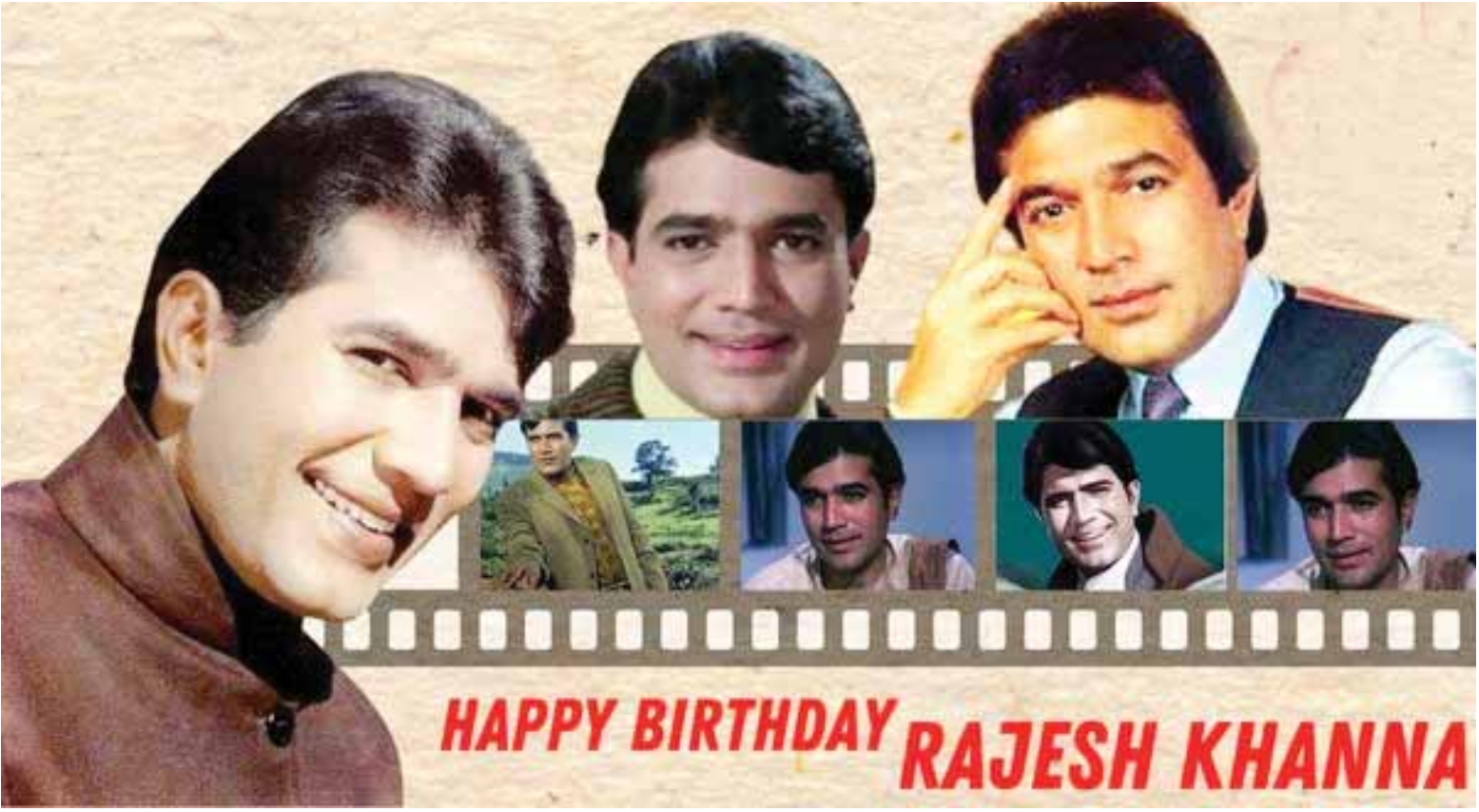

बॉलीवुड का पहला सुपररस्टार जिसकी झलक पाने को बेताब रहते थे फैन्स

बॉलीवुड का पहला सुपरस्टार राजेश खन्ना, जिनकी लोकप्रियता इतनी थी कि लड़किया इनको अपने खून से खत लिखती थी। राजेश खन्ना के हिस्से में 74 गोल्डन जुबिली हिट्स है। जितनी लोकप्रियता राजेश खन्ना को मिली उतनी आज तक किसी अभिनेता को नहीं मिल पाई। राजेश किसी भी रोल में अपने अभिनय से जान डाल देते थे। राजेश खन्ना का जन्म 29 जनवरी को पंजाब के अमृतसर में हुआ था उनका असली नाम जतिन खन्ना था। इनके पिता का नाम लाला हीरानंद था और माता चान्द्राणी खन्ना थी, बाद में चुन्नीलाल खन्ना और लीलावती खन्ना ने राजेश खन्ना को गोद ले लिया। राजेश खन्ना ने अपनी स्कूली शिक्षा मुंबई के गिरगांव सेंट सेबेस्टियन हाई स्कूल से पूरी की इसके बाद आर्ट्स से ग्रेजुएशन किया। राजेश को कालेज से ही एक्टिंग का शौक था। कालेज के नाटकों में वह बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते थे। अभिनय जगत में राजेश खन्ना की एंट्री चेतन आनंद की फिल्म %आखिरी खत% से हुई। आराधना फिल्म की कामयाबी के बाद को बॉलीवुड का पहला सुपरस्टार कहा गया।

एक झलक के लिए फैंस रहते थे बेताब

बॉलीवुड के पहले सुपरस्टार राजेश खन्ना की एक झलक पाने के लिए उनके चाहने वालों की भीड़ लग जाती थी। कहते है लड़कियों के बीच तो उनकी लोकप्रियता इतनी ज्यादा थी कि लड़किया उनकी फोटो अपने तकिये के नीचे रखकर सोती थी, जहां काका

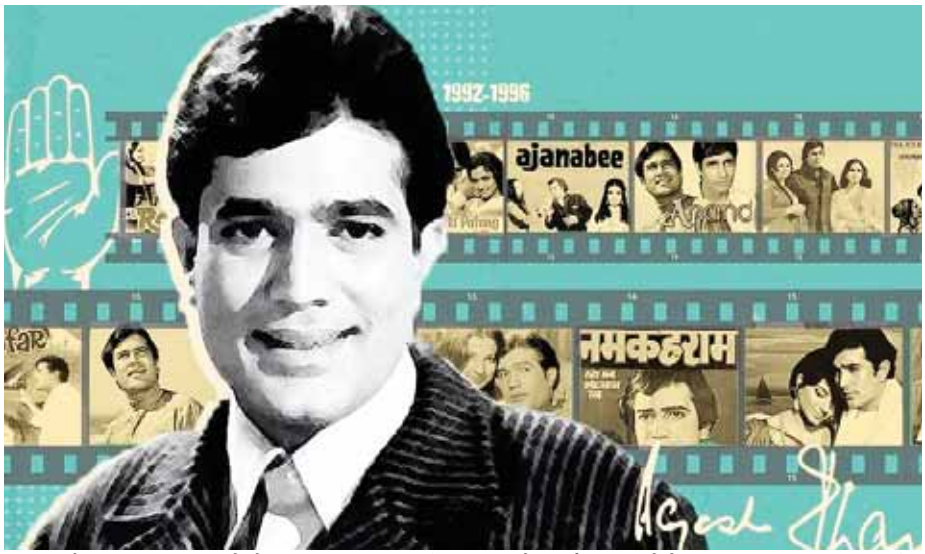

यानि राजेश खन्ना शूटिंग करते थे लड़कियां पहुंच जाती थी और उनकी सफ़ेद कार को चूमने लगती थी जिससे लिपस्टिक के दाग से सफ़ेद कार गुलाबी हो जाती थी। उस जमाने में लड़कियों ने राजेश खन्ना के नाम के टैटू बनवाये थे। घर से बाहर निकलने के लिए काका पुलिस की सहायता लेते थे।

जिंदगी बड़ी होनी चाहिए लम्बी नहीं

राजेश खन्ना की संवाद अदायगी इतनी बेमिसाल थी जिससे उनके द्वारा बोले गए साधारण डायलॉग भी अमर हो गए, चाहे वो आनंद फिल्म का संवाद बाबू मोशाय जिंदगी बड़ी होनी चाहिए लम्बी नहीं हो या फिर अमरप्रेम का मशहूर डायलॉग पुष्पा आई हेट टियर्स बच्चे-बच्चे की जबान पर था। उनका रोटी फिल्म का डायलॉग इंसान को दिल दे, दिमाग दे, पर कमबख्त पेट ना दें आज भी लोकप्रिय है। राजेश साधारण डायलॉग को भी अपने अभिनय से बेमिसाल कर देते थे।

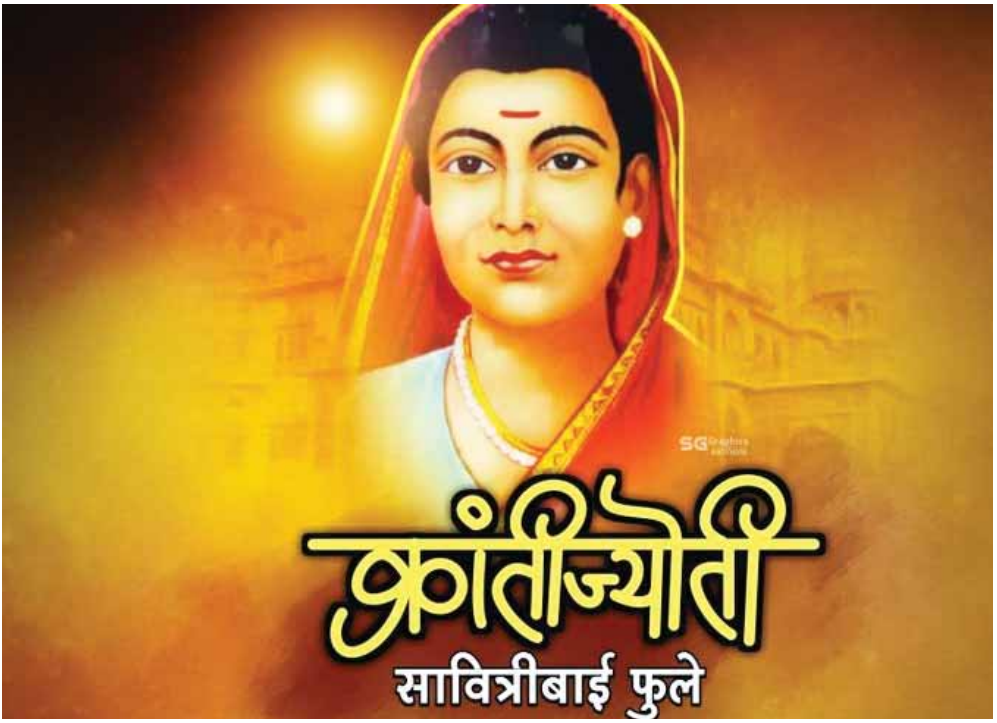

भारत की पहली शिक्षिका सावित्री बाई फुले

महिलाओं व दलितों के उत्थान में निभाई महत्वपूर्ण भूमिका

भारत के इतिहास में ऐसे कई महिलाएं हैं जिनके द्वारा समाज में ऐसी भूमिकाएं निभाई रही हैं जिसका उल्लेख आज भी किया जाता है। हालांकि, यह बात भी सत्य है कि भारत के इतिहास में महिलाओं को वह प्रधानता नहीं मिली थी जिसकी वह हकदार थीं। लेकिन कुछ महिलाओं ने अपने कर्मों से समाज में अलग पहचान बनाई और आज की पीढ़ी के लिए वह एक प्रेरणा स्रोत हैं। उन्हीं महान महिलाओं में से एक थी सावित्रीबाई फुले। सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं के उत्थान के लिए कई बड़े काम किए थे। उन्हें भारत की पहली महिला शिक्षक के रूप में याद किया जाता है। महज 17 साल की उम्र में उन्होंने पुणे में देश का पहला गर्ल्स स्कूल खोलकर समाज के लिए एक बेहद ही महत्वपूर्ण कार्य किया था। यह उस वक्त की बात है जब भारतीय महिलाओं की स्थिति बड़ी ही दयनीय होती थी। लेकिन सावित्रीबाई फुले समाज सुधारक बनकर महिलाओं के जीवन में उत्थान लगने की कोशिश करती रहीं। उन्होंने समाज में शिक्षा और अवसरों के लिए कई बड़े प्रयास भी किए।

भारत के इतिहास में ऐसे कई महिलाएं हैं जिनके द्वारा समाज में ऐसी भूमिकाएं निभाई रही हैं जिसका उल्लेख आज भी किया जाता है। हालांकि, यह बात भी सत्य है कि भारत के इतिहास में महिलाओं को वह प्रधानता नहीं मिली थी जिसकी वह हकदार थीं। लेकिन कुछ महिलाओं ने अपने कर्मों से समाज में अलग पहचान बनाई और आज की पीढ़ी के लिए वह एक प्रेरणा स्रोत हैं। उन्हीं महान महिलाओं में से एक थी सावित्रीबाई फुले। सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं के उत्थान के लिए कई बड़े काम किए थे। उन्हें भारत की पहली महिला शिक्षक के रूप में याद किया जाता है। महज 17 साल की उम्र में उन्होंने पुणे में देश का पहला गर्ल्स स्कूल खोलकर समाज के लिए एक बेहद ही महत्वपूर्ण कार्य किया था। यह उस वक्त की बात है जब भारतीय महिलाओं की स्थिति बड़ी ही दयनीय होती थी। लेकिन सावित्रीबाई फुले समाज सुधारक बनकर महिलाओं के जीवन में उत्थान लगने की कोशिश करती रहीं। उन्होंने समाज में शिक्षा और अवसरों के लिए कई बड़े प्रयास भी किए।

सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को नायगांव में हुआ था। तब या ब्रिटिश भारत का हिस्सा था। अब महाराष्ट्र के सतारा में आता है। सावित्रीबाई फुले की शादी महज 10 वर्ष की उम्र में हो गई थी। सावित्री बाई के पति का नाम ज्योतिबा फुले था। उस वक्त ज्योतिबा फुले की उम्र 13 वर्ष की थी। हालांकि, सावित्रीबाई फुले के नसीब में संतान सुख नहीं था। विवाह के कई सालों तक संतान नहीं होने के बाद उन्होंने एक ब्राह्मण महिला के पुत्र को गोद लिया था। इसका नाम यशवंतराव रखा गया। सावित्रीबाई फुले ने अपने पुत्र यशवंतराव को पढ़ा लिखा कर डॉक्टर बनाया था। सावित्रीबाई फुले समाज में महिलाओं की स्थिति को देखकर काफी निराश होती थीं। वह उनके लिए कुछ करना चाहती थीं। ऐसे में उन्होंने महिलाओं को शिक्षित बनाने के लिए 1948 में एक विद्यालय की शुरुआत की थी जिसमें 9 विद्यार्थी पढ़ते थे।

भारत के इतिहास में ऐसे कई महिलाएं हैं जिनके द्वारा समाज में ऐसी भूमिकाएं निभाई रही हैं जिसका उल्लेख आज भी किया जाता है। हालांकि, यह बात भी सत्य है कि भारत के इतिहास में महिलाओं को वह प्रधानता नहीं मिली थी जिसकी वह हकदार थीं। लेकिन कुछ महिलाओं ने अपने कर्मों से समाज में अलग पहचान बनाई और आज की पीढ़ी के लिए वह एक प्रेरणा स्रोत हैं। उन्हीं महान महिलाओं में से एक थी सावित्रीबाई फुले। सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं के उत्थान के लिए कई बड़े काम किए थे। उन्हें भारत की पहली महिला शिक्षक के रूप में याद किया जाता है।

लाल बहादुर शास्त्री ने सारा जीवन सादगी से बिताते हुये गरीबों की सेवा में लगाया

लाल बहादुर शास्त्री के मन में बचपन से देश भक्ति की भावना भरी थी। अपनी इसी भावना के चलते उन्होने राष्ट्रीय स्तर पर कुछ करने का मन बना लिया था। जब गांधी जी ने देशवासियों से असहयोग आंदोलन में शामिल होने का आह्वान किया था उस समय शास्त्रीजी केवल सोलह वर्ष के थे। महात्मा गांधी के आह्वान पर उन्होने अपनी पढ़ाई छोड़ देने का निर्णय कर लिया था। उनके इस निर्णय ने उनकी मां की उम्मीदें तोड़ दीं। उनके परिवार ने उनके इस निर्णय को गलत बताते हुए उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन वे इसमें असफल रहे।

लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी से सात मील दूर रेलवे टाउन मुगलसराय में हुआ था। उनके पिता एक स्कूल शिक्षक थे। जब लाल बहादुर शास्त्री केवल डेढ़ वर्ष के थे। तभी उनके पिता का देहांत हो गया था। उनकी मां अपने तीनों बच्चों के साथ अपने पिता के घर जाकर बस गई। उस छोटे-से शहर में लाल बहादुर की स्कूली शिक्षा कुछ खास नहीं रही। उन्हें वाराणसी में चाचा के साथ रहने के लिए भेज दिया गया था। ताकि वे उच्च विद्यालय की शिक्षा प्राप्त कर सकें। घर पर सब उन्हें नन्हे के नाम से पुकारते थे।

बड़े होने के साथ-ही लाल बहादुर शास्त्री विदेशी दासता से आजादी के लिए देश के संघर्ष में अधिक रुचि रखने लगे। वाराणसी के काशी विद्या पीठ में अध्ययन के दौरान शास्त्री जी महान विद्वानों एवं राष्ट्रवादियों के प्रभाव में आए। विद्या पीठ द्वारा उन्हें प्रदत्त स्नातक की डिग्री का नाम 'शास्त्री' था। शास्त्री की उपाधी उनके नाम के साथ ऐसे जुड़ी कि जीवन पर्यन्त वो शास्त्री के नाम से ही जाने गये। 1927 में मिर्जापुर की ललिता देवी से उनकी शादी हो गई।संस्कृत भाषा में स्नातक स्तर तक की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् वे भारत सेवक संघ से जुड़ गये और देशसेवा का व्रत लेते हुए यहीं से अपने राजनैतिक जीवन की शुरुआत की। शास्त्रीजी सच्चे गान्धीवादी थे। जिन्होंने अपना सारा जीवन सादगी से बिताते हुये गरीबों की सेवा में लगाया। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सभी महत्वपूर्ण कार्यक्रमों व आन्दोलनों में उनकी सक्रिय भागीदारी रहती थी। परिणामस्वरूप उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। स्वाधीनता संग्राम के जिन आन्दोलनों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही उनमें 1921 का असहयोग आंदोलन, 1930 का दांडी मार्च तथा 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन उल्लेखनीय हैं। उन्होंने कई विद्रोही अभियानों का नेतृत्व किया एवं कुल सात वर्षों तक ब्रिटिश जेलों में रहे।शास्त्रीजी के राजनीतिक दिग्दर्शकों में पुरुषोत्तमदास टंडन, पण्डित गोविंद बल्लभ पंत, जवाहर लाल नेहरू शामिल थे। 1929 में इलाहाबाद आने के बाद उन्होंने टंडनजी के साथ भारत सेवक संघ की इलाहाबाद इकाई के सचिव के रूप में काम करना शुरू किया। इलाहाबाद में रहते हुए ही नेहरूजी के साथ उनकी निकटता बढ़ी। इसके बाद तो

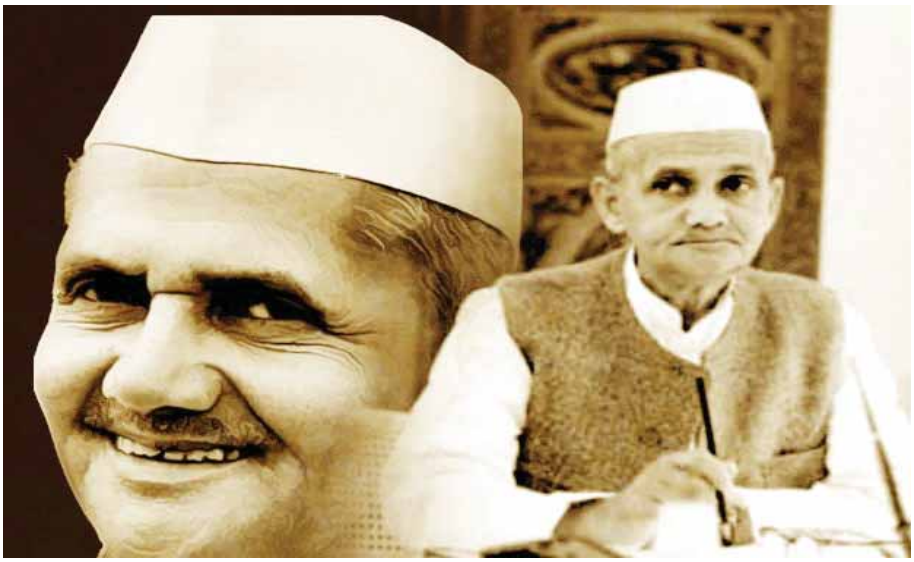

शास्त्रीजी का कद निरन्तर बढ़ता ही चला गया और वे लगातार सफलता की सीढियां चढते गये।

भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात शास्त्रीजी को उत्तर प्रदेश में संसदीय सचिव नियुक्त किया गया था। गोविंद बल्लभ पंत के मन्त्रिमण्डल में उन्हें गृह एवं परिवहन मन्त्रालय सौंपा गया। परिवहन मन्त्री के कार्यकाल में उन्होंने प्रथम बार महिला बस कण्डक्टरों की नियुक्ति की थी। गृह मन्त्री होने के बाद उन्होंने भीड़ को नियन्त्रण में रखने के लिये लाठी की जगह पानी की बौछार का प्रयोग प्रारम्भ करवाया। 1951 में जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में वो अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव नियुक्त किये गये।

उन्होंने 1952, 1957 व 1962 के चुनावों में कांग्रेस पार्टी को भारी बहुमत से जिताने के लिये बहुत परिश्रम किया। 1952 में वो पंडित नेहरु के मंत्री मंडल में रेलमंत्री बने। 1956 में केरल राज्य के अरियालुट में एक बहुत बड़ी रेल दुर्घटना हो गयी। उस दुर्घटना में 150 लोगों की मौत हो गयी थी। इस घटना से शास्त्री को बहुत दुःख हुआ। उन्होने रेल मंत्री होने के नाते रेल हादसे की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुये अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। 1960 में उन्हे गृहमंत्री पद की जिम्मेदारी दी गयी। 1962 में हुये चुनाव में भी वो पुनः लोकसभा में चुनकर आये और फिर देश के गृहमंत्री बने। 27 मई 1964 को जवाहरलाल नेहरू का देहावसान हो जाने के कारण शास्त्रीजी को देश का प्रधानमन्त्री बनाया गया। उन्होंने 9 जून 1964 को भारत के प्रधान मन्त्री का पद भार ग्रहण किया। उन्होंने प्रधानमंत्री के रूप में अपने पहले संवाददाता सम्मेलन में ही कहा था कि उनकी शीर्ष प्राथमिकता खाद्यान्न के मूल्यों को बढने से रोकना है और वे ऐसा करने में सफल भी रहे। उनकी कार्यप्रणाली सैद्धान्तिक न होकर पूर्णतः व्यावहारिक और जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप होती थी।उनके शासनकाल में 1965 का भारत पाक युद्ध शुरू हो गया। इससे तीन वर्ष पूर्व चीन का युद्ध भारत हार चुका था। युद्ध के दौरान देश के तीनों सेना प्रमुखों ने उनको सारी वस्तुस्थिति समझाते हुए पूछा क्या हुक्म है? शास्त्रीजी ने एक वाक्य में तत्काल उत्तर दिया कि आप देश की रक्षा कीजिये और मुझे बताइये कि हमें क्या करना हैं। शास्त्री जी के नेतृत्व में भारत ने पाकिस्तान को करारी शिकस्त दी। निष्पक्ष रूप से यदि देखा जाये तो शास्त्रीजी का शासन काल बेहद कठिन रहा। उस वक्त पूंजीपति देश पर हावी होना चाहते थे और दुश्मन देश भारत पर आक्रमण करने का मौका ढूंढ़ रहा थे। प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने 26 जनवरी 1965 को देश के जवानों और किसानों को अपने कर्म और निष्ठा के प्रति सुदृढ़ रहने और देश को खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्म निर्भर बनाने के उद्देश्य से 'जय जवान, जय किसान ' का नारा दिया था।

GOONJ

देशभक्त एवं भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा
स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद भारत की आध्यात्मिक चेतना के एक ऐसे उज्ज्वल नक्षत्र है, जिन्होंने परंपराओं और आधुनिक विचारों को मथकर ऐसे मोती चुने, जिनसे भारत का गौरव दुनिया में बढ़ा है। उनकी कीर्ति युग-युगों तक जीवंत रहेगी, क्योंकि उनका मानवहितकारी चिन्तन एवं कर्म कालजयी हैं, वे एक प्रकाश-स्तंभ हैं, भारतीय संस्कृति एवं भारतीयता के प्रखर प्रवक्ता, युगीन समस्याओं के समाधायक, अध्यात्म और विज्ञान के समन्वयक एवं आध्यात्मिक सोच के साथ पूरी दुनिया को वेदों और शास्त्रों का ज्ञान देने वाले एक महामनीषी युगपुरुष थे। उन्होंने भारत को अध्यात्म के साथ विज्ञानमय बनाया, वे अध्यात्म एवं विज्ञान के समन्वयक थे।

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। संन्यास से पहले उनके नाम नरेंद्र नाथ दत्त था। 1881 में नरेंद्र की मुलाकात रामकृष्ण परमहंस से हुई। इसके बाद गुरु रामकृष्ण से प्रभावित होकर 25 साल की उम्र में नरेंद्र ने संन्यास ले लिया। संन्यासी बनने के बाद उनका नाम स्वामी विवेकानंद पड़ा। उनके लिये संन्यास एवं संतता संसार की चिन्ताओं से मुक्ति का मार्ग था। उन्होंने पुरुषार्थ से भाग्य रचा- अपना, हिन्दू समाज का और उन सभी का जिनके भीतर थोड़ी भी आस्था एवं आत्मविश्वास था कि हमारा जीवन बदल सकता है। जो अपनी माटी एवं संस्कृति के प्रति समर्पित थे। वे साहसी एवं अभय बनने की प्रेरणा देते हुए कहते थे कि अभय हो! अपने अस्तित्व के कारक तत्व को समझो, उस पर विश्वास करो। भारत की चेतना उसकी संस्कृति है। अभय होकर इस संस्कृति का प्रचार करो।'

स्वामी विवेकानन्द के इन्हीं सुलझे हुए विचारों के कारण वे तत्कालीन युवापीढ़ी के आकर्षण का केन्द्र बने, इसमें कोई शक नहीं कि वे आज भी अधिकांश युवाओं के आदर्श हैं। यही कारण है कि उनका जन्म दिन युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। उनकी हमेशा यही शिक्षा रही कि आज के युवक को शारीरिक प्रगति से ज्यादा आंतरिक प्रगति की जरूरत है। वे युवकों में जोश भरते हुए कहा करते थे कि उठो मेरे शेरों! इस भ्रम को मिटा दो कि तुम निर्बल हो। वे एक बात और कहते थे कि जो तुम सोचते हो वह हो जाओगे। ऐसी ही कुछ प्रेरणाएं हैं जो आज भी युवकों को आन्दोलित करती है, पथ दिखाती है और जीने का दर्शन प्रदत्त करती है। हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नया भारत निर्मित करने की बात कर रहे हैं, उसका आधार स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएं एवं प्रेरणाएं ही हैं। स्वामी विवेकानन्द अच्छे दार्शनिक, अध्येता, विचारक, समाज-सुधारक एवं प्राचीन परम्परा के भाष्यकार थे। काल के भाल पर कुंकुम उकेरने वाले वे सिद्धपुरुष हैं। वे नैतिक मूल्यों के विकास एवं युवा चेतना के जागरण हेतु कटिबद्ध, मानवीय मूल्यों के

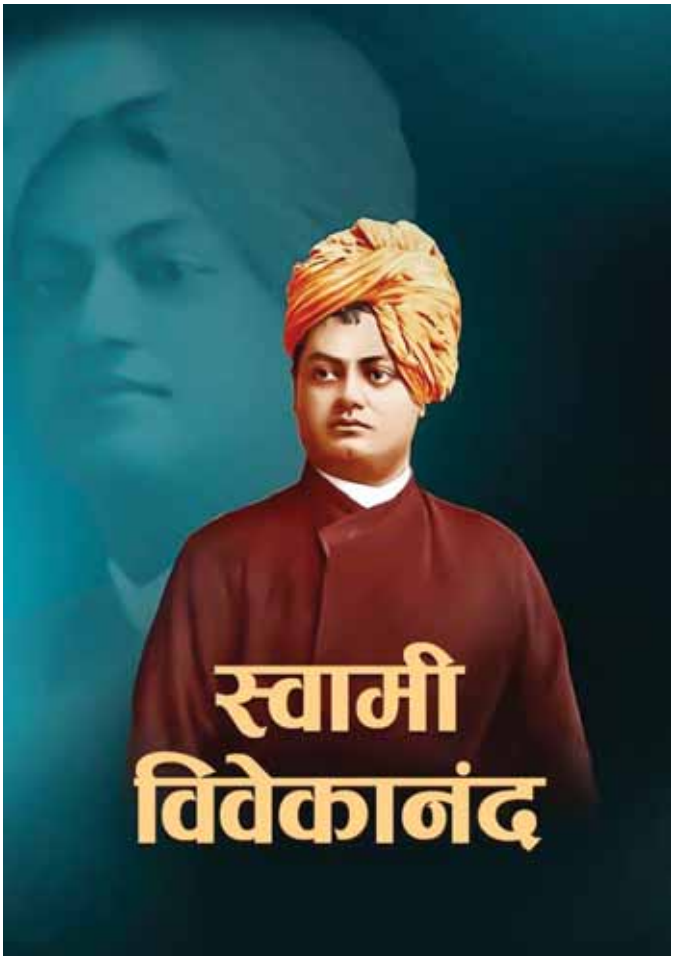

पुनरुत्थान के सजग प्रहरी, अध्यात्म दर्शन और संस्कृति को जीवंतता देने वाली संजीवनी बूंटी, वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु हैं। वे अनावश्यक कर्मकांडों के विरुद्ध थे और हिन्दू उपासना को व्यर्थ के अनेक कृत्यों से मुक्त कराना चाहते थे। उन्होंने समाज की कपट वृत्ति, दंभ, क्रूरता, आडम्बर और अनाचार की भर्त्सना करने में संकोच नहीं किया। पश्चिमी संस्कृति में योग एवं वेदांत के विषय में जागृति लाने का श्रेय भी स्वामी विवेकानंद को ही जाता है। जिन्होंने 19वीं शताब्दी में विश्व भ्रमण कर धर्म, ज्ञान और योग की शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया था। आज हर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास चाहता है। इसके लिए सहना और तपना जरूरी है। अधिकतर लोग साधना और तपस्या से बचने के लिए 'शोर्टकट' रास्ते की खोज करते हैं। इससे क्षणिक सफलता मिल सकती है, पर इसके दूरगामी परिणाम हानिकारक होते हैं। स्वामीजी ने पुरुषार्थ के बल पर हर परिस्थिति को झेलते हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। उन्होंने कहा कि यह कभी मत कहो कि 'मैं नहीं कर सकता', क्योंकि आप अनंत हैं। आप कुछ भी कर सकते हैं। उन्होंने चिन्ता नहीं, चिन्तन करने पर बल देते हुए नए विचारों को जन्म देने पर बल दिया। स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् 1893 में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। भारत का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदान्त दर्शन अमेरिका और यूरोप के हर एक देश में उनके प्रयासों एवं प्रस्तुति के कारण ही पहुँचा। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी जो आज भी भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक मूल्यों को सुदृढ़ कर रहा है। वे रामकृष्ण परमहंस के सुयोग्य शिष्य थे। कलकत्ता के एक कुलीन बंगाली परिवार में जन्मे विवेकानंद आध्यात्मिकता की ओर झुके हुए थे। वे अपने गुरु रामकृष्ण देव से काफी प्रभावित थे जिनसे उन्होंने सीखा कि सारे जीव स्वयं परमात्मा का ही एक अवतार हैं। इसलिए मानव जाति की सेवा द्वारा परमात्मा की भी सेवा की जा सकती है।

आजीवन भारत की स्वाधीनता का बिगुल बजाते रहे
नेताजी सुभाष चंद्र बोस

भारत के महान सपूत महानायक नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को हुआ था। नेता जी आजीवन संगठन संघर्ष और युद्धकर्म में रत रहकर भारत की स्वाधीनता का बिगुल बजाते रहे। सुभाष बाबू के जीवन पर स्वामी विवेकानंद, उनके गुरू स्वामी रामकृष्ण परमहंस तथा श्री अरविंद के दर्शन का व्यापक प्रभाव पड़ा। नेता जी ऋषि अरविंद की पत्रिका आर्य को बहुत ही लगाव से पढ़ते थे। पिताजी की इच्छा का निर्वहन करते हुए उन्होने उन दिनों की सर्वाधिक

महत्वपूर्ण परीक्षा आईसीएस में बैठने के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया तथा आठ माह में ही वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली किंतु देशहित के लिए उन्होने आईसीएस की नौकरी का परित्याग करके एक अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया। तब तक किसी भारतीय ने आईसीएस के इतिहास में ऐसा नहीं किया था।

सुभाष 16 जुलाई 1921 को बम्बई पहुंचकर महात्मा गांधी से उनके आवास पर मिले। युवक सुभाष राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए सार्वजनिक जीवन में प्रवेश कर रहे थे और उस नेता से मिलना चाहते थे जिसने सम्पूर्ण देश में अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग आंदोलन चला रखा था। गांधी जी ने सुभाष को कलकत्ता पहुंचकर देशबंधु चितरंजन दास से मिलने का सुझाव दिया। जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। उस समय देश में गांधी जी के नेतृत्व में लहर थी तथा अंग्रेजी वस्त्रों का बहिष्कार, विधानसभा, अदालतों एवं शिक्षा संस्थाओं का बहिष्कार भी किया जा रहा था। सुभाष ने इस युद्ध में कूदने का निश्चय किया और विरोध का नेतृत्व करने लगे। अंग्रेज अधिकारी आंदोलन के स्वरूप को देखकर घबरा गये। उन्होंने सुभाष को साथियों सहित 10 दिसंबर 1921 को संध्या समय गिरफ्तार कर लिया और जेल भेज दिया। एक वर्ष बाद उन्हें जेल से मुक्ति मिली। किन्तु जल्द ही क्रांतिकारी षड़यंत्र का आरोप लगाकर अंग्रेजों ने सुभाष को मांडले जेल भेज दिया। दो वर्ष पश्चात सुभाष को मांडले से कलकत्ता लाया गया जहां उन्हें स्वास्थ्य के आधार पर मुक्त कर दिया गया। सुभाष ने कांग्रेस का प्रथम नेतृत्व 30 वर्ष की आयु में किया जब वे बंगाल प्रांतीय कमेटी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में मुंह की खाने के बाद अंग्रेजों ने अत्यंत कठोर दमन चक्र चलाया था। हजारें लोगों को फांसी दी गयी थी। परिणाम स्वरुप संगठित सेना के अभाव में युवकों ने छोटे छोटे दल बनाकर अंग्रेजों को दंडित करना प्रारम्भ किया। शस्त्र प्राप्त करने के लिये कई युवक विदेश गये। इन्हें क्रांतिकारी कहा जाने लगा। यह श्रृंखला चलती रही। इनके बलिदानों ने स्वाधीनता संग्राम के लिए सशस्त्र संघर्ष की ज्योति को जलाए रखा।

1939 में यूरोप और उत्तरी अफ्रीका में यूरोपीय देशों के बीच युद्ध छिड़ गया। जिसमें अंग्रेजों की एक के बाद एक हार होने लगी। इसमें अनेक भरतीय सेनिक भी बंदी बनाये गये। तब नेताजी सुभाषचंद्र बोस के मन में बंदी सैनिकों से सम्पर्क करके स्वाधीनता संग्राम हेतु एक सेना का गठन करने का प्रयास किया। उन दिनों वे अपने घर में ही बंदी थे। 1941 में एक दिन अंग्रेजों को चकमा देकर घर से निकल गये और कठिन मार्ग तय करते हुये बर्लिन जा पहुचे। वहां जर्मनी और इटली की सहायता से उन्होनें भारतीय युद्ध बंदियों से सम्पर्क किया। देखते ही देखते उन्होने एक सेना खड़ी कर ली। लेकिन जर्मनी और रूस के बीच युद्ध छिड़ जाने से यहां पर उनकी प्रारम्भिक योजना असफल हो गयी। कुछ समय बाद विभिन्न अवरोधों और घटनाओं के बीच जून 1943 में वे पूर्वी एशिया पहुंचे। सबसे पहले वह टोक्यो गये। वहां जापानी प्रधानमंत्री जनरल तेजा ने उनकी सभी शर्तों को मान लिया और जापानी संसद में भारत की स्वतंत्रता के लिये पूर्ण और बिना शर्त समर्थन की घोषणा की।

21 अक्टूबर 1943 को सिंगापुर में आजाद हिंद फौज की अस्थायी सरकार का औपचारिक शपथ ग्रहण हुआ। आजाद हिंद फौज ने युद्ध के लिये प्रयास प्रारम्भ कर दिया। नयी सेना में महिलाओं की रानी लक्ष्मीबाई रेजीमेंट तो थी ही किशोरों के लिये आजाद हिंद बाल सेना की शाखा भी खोली गयी थी। उनका नियमित प्रशिक्षण प्रारम्भ हो गया था। तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा के नेता जी के आह्वान से बड़ी संख्या में लोग इस सेना में भरती के लिए आ रहे थे किन्तु इस नयी सेना में लोगों का प्रवेश नेताजी की अनुमति से ही होता था। इस नयी फौज का नारा जय हिंद सबका नारा हो गया था।

23- 24 अक्टूबर की रात्रि को आजाद हिंद सरकार ने ब्रिटेन और अमेरिका के खिलाफ युद्ध का ऐलान कर दिया। सेना को सिंगापुर से रंगून भेजा जाने लगा। रंगून में सेना का सर्वोच्च मुख्यालय स्थापित किया गया। अस्थायी सरकार का मुख्यालय भी रंगून में स्थापित किया गया।जनवरी 1944 तक प्रथम डिवीजन रंगून पहुंच गयी। रानी झांसी रेजिमेंट और बाल सेना की शाखा में गुप्तचर सेवा के सैनिक भी थे। नेताओं ने इस कार्यदल का पुनर्गठन करके इसका संचालन अपने ही अधीन रखा। इसके सैनिक शत्रु की सेना व क्षेत्रों में घुसकर काम करते थे। ब्रिटिश सरकार इन्हें शत्रु का एजेंट कहती थी। जब यह सैनिक पकड़ लिये जाते थे तब इन्हें कठोर यातना सहनी पड़ती थी। इन सैनिकों के बलिदान की पूरी कहानी का पता लगाना बेहद कठिन काम है।

नेता जी सुभाष तथा आजाद हिंद फौज का देश की आजादी में अप्रतिम योगदान है जिसे भुलाया नही जासकता। नेताजी सुभाषचंद्र बोस को सम्मान देन के लिए केंद्र सरकार ने एक बड़ा कदम उठाते हुए गणतंत्र दिवस समारोह का शुभारंभ 23 जनवरी से ही करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया है। यह एक क्रांतिकारी कदम है और इससे देशवासियों को नेता जी के विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिलेगा।

Skin Care: चेहरे पर इन चीजों का इस्तेमाल हो सकता है नुकसानदेह

कम हो सकती है त्वचा की चमक

खूबसूरत दिखने के लिए हम बहुत से उपाय करते हैं, चेहरे को गन्दगी, धुप, धूल आदि से बचाते हैं। चेहरे पर चमक लाने के लिए कई तरह की चीजों का प्रयोग करते हैं। बिना सटीक जानकारी के इन चीजों का इस्तेमाल कई बार नुकसानदेह साबित होता है, खासकर सेंसेटिव स्किन वालों के लिए। फेस स्किन का बेजान होना या पिम्पल्स और चेहरे पर डार्क स्पॉट के कई कारण हो सकते हैं। चेहरे की इन समस्यायों से बचाव के लिए कई तरह के घरेलू नुस्खे भी आजमाएं जाते हैं, इन उपायों को करने से पहले इनके बारे में सही जानकारी होना आवश्यक है। आइये जानते हैं चेहरे पर किन चीजों का प्रयोग नहीं करना चाहिए-

नींबू का रस

डाइरेक्ट नींबू या नींबू के रस का प्रयोग त्वचा पर जलन और रेशेज का कारण बन सकता है। फेस पैक या किसी अन्य चीज में मिक्स करके नींबू के रस का प्रयोग चेहरे पर कर सकते है। लेकिन इसका प्रयोग बहुत ही कम मात्रा में करना चाहिए क्योकि इसका पीएच लेवल ज्यादा होता है और फेस स्किन बहुत माइल्ड होती है। अगर आपकी स्किन सेंसेटिव है तो आपको नींबू के इस्तेमाल से बचना चाहिए।

टूथपेस्ट

चेहरे पर टूथपेस्ट का प्रयोग हानिकारक हो सकता है, कई लोगों में यह कन्फ्यूजन है कि टूथपेस्ट के इस्तेमाल से पिम्पल्स की प्रॉब्लम्स को दूर किया जा सकता है। चेहरे पर जहां टूथपेस्ट का इस्तेमाल किया जाता है वहां की त्वचा डार्क हो जाती है और यह जल्दी से दूर नहीं होती है।

बॉडी लोशन

बॉडी लोशन और फेस मॉश्चराइजर दोनों ही अलग चीजें हैं। सर्दियों में बहुत से लोग बॉडी लोशन को चेहरे पर भी अप्लाई कर लेते हैं जोकि गलत है। बॉडी लोशन गाढ़ा होता है, यह चेहरे की स्किन में ऑब्जर्व नहीं हो पाता, त्वचा की ऊपरी सतह पर ही बना रहता है। जिससे स्किन पोर्स ब्लॉक हो जाते हैं और पिम्पल्स और एक्ने की समस्या होने लगती है।

नीम और ग्रीन टी

स्किन इन्फेक्शन्स से बचने के लिए कुछ लोग नीम की पत्तियां और नीम के पानी का इस्तेमाल करते हैं। नीम एंटी-बैक्टीरियल है यह तो सभी जानते हैं, लेकिन यह चेहरे की त्वचा को ड्राई बना सकता है। यदि आपकी स्किन रूखी या फिर सेंसेटिव है तो आपको नीम के प्रयोग से बचना चाहिए। ग्रीन टी का इस्तेमाल भी आपकी फेस स्किन को रुखा कर सकता है।

रबिंग अल्कोहल

रबिंग अल्कोहल एक प्रकार का एंटीसेप्टिक है। कुछ लोग चेहरे पर भी रबिंग अल्कोहल का इस्तेमाल करते हैं यह आपकी चेहरे की त्वचा को डैमेज कर सकता है।

गरम पानी

सर्दियों में चेहरे की सफाई के लिए गरम पानी का इस्तेमाल आम बात है। यह चेहरे की त्वचा को रुखा बना सकता है यदि पानी ज्यादा गरम हो तो स्किन डैमेज हो जाती है जिससे चेहरे पर महीन रेखाएं दिखाई देने लगती हैं। चेहरे की सफाई के लिए ठन्डे पानी का या हल्के गुनगुने पानी का इस्तेमाल कर सकते हैं।

ऑरेंज की मदद से बनाएं स्किन टोनर, त्वचा पर आयेगा निखार

ऑरेंज की मदद से बनाएं स्किन टोनर, त्वचा पर आयेगा निखार जब ठंड का मौसम आता है तो हम सभी संतरा खाना बेहद पसंद करते हैं। विटामिन सी रिच संतरा ना केवल स्वाद में बेहद अच्छा होता है, बल्कि यह इम्युन सिस्टम को भी बूस्ट अप करता है। इतना ही नहीं, संतरा हमारी स्किन का ख्याल रखने में भी बेहद मददगार होता है। आपको शायद पता ना हो, लेकिन संतरे की मदद से टोनर बनाकर स्किन का बेहद अच्छी तरह ध्यान रखा जा सकता है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको ऑरेंज की मदद से स्किन टोनर बनाने के आसान तरीके के बारे में बता रहे हैं– संतरे और विच हेज़ल की मदद से बनाएं टोनरयह एक ऐसा टोनर है, जिसे बेहद आसानी से तैयार किया जा सकता है। इसके लिए आपको संतरे के बचे हुए छिलके और विच हेजल की जरूरत होगी।संतरे और विच हेज़ल की मदद से बनाएं टोनर यह एक ऐसा टोनर है, जिसे बेहद आसानी से तैयार किया जा सकता है। इसके लिए आपको संतरे के बचे हुए छिलके और विच हेजल की जरूरत होगी।

प्रेग्नेंसी में इस तरह करें मसाज ताकि बेबी को ना हो नुकसान

प्रेग्नेंसी किसी भी महिला के लिए एक ऐसा दौर होता है, जब उसे अपना सबसे अधिक ख्याल रखने की जरूरत होती है। इस दौरान महिला ना केवल अपने खानपान, व्यायाम और आराम का ख्याल रखती है, बल्कि इस दौरान होने वाले दर्द को कम करने के लिए कई तरीके अपनाते हैं। इन्हीं में से एक है मसाज करना। यह तो हम सभी जानते हैं कि मसाज करने से बेहद रिलैक्सिंग महसूस होता है। शायद यही कारण है कि प्रेग्नेंसी के दौरान महिलाएं मसाज करती हैं। लेकिन मसाज करते हुए सभी सावधानियों को बरतना जरूरी होता है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको प्रेग्नेंसी के दौरान सही तरह से मसाज करने के तरीके के बारे में बता रहे हैं-

समय का रखें ध्यान

यूं तो प्रेग्नेंसी के नौ महीनों में महिला को किसी ना किसी तरह की स्वास्थ्य समस्या का सामना करना पड़ता है। लेकिन अगर आप मसाज के जरिए रिलैक्सिंग फील करना चाहती हैं तो ऐसे में आप पहली तिमाही में मसाज करने से बचें। मसाज के लिए दूसरी व तीसरी तिमाही अधिक सुरक्षित मानी जाती है।

सही जगह पर करें मसाज

मसाज करते समय अक्सर हम उस बॉडी पार्ट पर मसाज करते हैं, जहां पर दर्द होता है। लेकिन प्रेग्नेंसी के दौरान मसाज करते समय आप हर बॉडी पार्ट पर मसाज नहीं

कर सकती हैं। आप हेड मसाज, फुट मसाज के अलावा पीठ, गर्दन व हाथ-पैरों की मसाज कर सकती हैं। लेकिन आपको अपने पेट व स्तन की मसाज करने से बचना चाहिए।

मसाज के दौरान पोश्चर

यह एक प्रेग्नेंट वुमन के लिए बेहद जरूरी है। अधिकतर लोग मसाज करवाते समय पेट के बल लेट जाते हैं, लेकिन प्रेग्नेंट वुमन को ऐसा बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए। बेहतर होगा कि आप करवट लेकर ही मसाज करवाएं। वहीं मसाज के दौरान बहुत अधिक झुकने से बचें। इससे आपके पेट पर अतिरिक्त दबाव पड़ सकता है। इसलिए अगर आप पैरों या तलवों की मसाज करना चाहती हैं तो बेहतर होगा कि इसके लिए आप किसी की मदद लें।

इन बातों का भी रखें ध्यान

प्रेग्नेंसी के दौरान मसाज करते समय आपको कुछ अन्य छोटी-छोटी बातों का भी ख्याल रखना चाहिए। मसलन-

- मसाज के लिए आप तेल को हल्का गुनगुना कर सकती हैं। वह ना तो बहुत तेज गर्म होना चाहिए और ना ही एकदम ठंडा।
- मसाज करते हुए हमेशा हल्का प्रेशर दें। कभी भी एकदम जोर से दबाव के साथ मसाज नहीं करनी चाहिए।
- अगर आपको मसाज के दौरान दर्द का अहसास हो रहा है या फिर आप असहज महसूस कर रही हैं तो इसका अर्थ है कि आपका मसाज का तरीका सही नहीं है। इस स्थिति में आपको मसाज तुरंत रोक देनी चाहिए।

तुलसी की पत्तियों से त्वचा बनेगी ग्लोइंग और हेल्दी

तुलसी का महत्व जितना धार्मिक रूप से है उतना ही रोगों के निदान के लिए भी तुलसी उपयोगी है। छोटी-मोटी संक्रामक बीमारियों के लिए तुलसी किसी वरदान से कम नहीं है। स्किन इन्फेक्शन में भी तुलसी बहुत असरदार हैं, यह त्वचा की बहुत सी परेशानियां जैसे, मुहांसो के दाग, डेड स्किन और स्किन ग्लो बढ़ाने में सहायक है। आइये जानते हैं तुलसी को स्किन केयर का हिस्सा कैसे बना सकते हैं-

ग्लोइंग स्किन के लिए तुलसी

स्किन को चमकदार बनाने के लिए आप तुलसी का पेस्ट प्रयोग कर सकते हैं, इसको बनाने के लिए आप तुलसी की कुछ ताजा पत्तियों को पीसकर इनका पेस्ट बनायें। पेस्ट में पिसा हुआ ओट्स मिक्स करें, अब इसमें आधा टी स्पून शहद और एक चुटकी हल्दी पाउडर मिक्स करें। इस पेस्ट को चेहरे पर लगाएं और मसाज करें कुछ देर मसाज करने के बाद 15 मिनट के लिए लगा रहने दें, 15 मिनट के बाद फेसवॉश करें। सप्ताह में दो से तीन बार इसका प्रयोग ग्लोइंग और हेल्दी स्किन बनाएं रखने में फायदेमंद है।

पिंपल्स और एक्ने के लिए तुलसी

मुंहासे और एक्ने की समस्या के लिए आप कुछ तुलसी की पत्तियां और चार से पांच नीम की ताजा पत्तियां लें और

उनको पीसकर पेस्ट बना लें। पेस्ट में आधा चम्मच शहद मिक्स करें, इस पेस्ट को चेहरे पर अप्लाई करें, 15 मिनट तक लगा रहने दें, 15 मिनट बाद गुनगुने पानी से चेहरा साफ़ कर लें। इस पैक के नियमित प्रयोग से एक्ने और मुहांसो की समस्या कुछ दिनों में खत्म हो जाएगी।

हेल्दी स्किन के लिए तुलसी टोनर

बेजान और डेड स्किन की परेशानी से छुटकारा पाने के लिए तुलसी टोनर बहुत फायदेमंद है। तुलसी टोनर बनाने के लिए आप तुलसी की ताजा पत्तियां धोकर साफ़ कर लें अब इनको साफ़ पानी में डालकर उबालें, दस मिनट तक उबालने के बाद तुलसी के पानी को ठंडा करें, ठंडा होने के बाद इसको छानकर किसी स्प्रे बॉटल में स्टोर कर लें। इसका इस्तेमाल फेसवॉश करने के बाद करें, तुलसी टोनर के नियमित इस्तेमाल से आप का स्किन ग्लो बढ़ेगा और डेड स्किन की समस्या दूर होगी।

स्किन क्लींजर तुलसी पैक

स्किन पोर्स में जमा गंदगी को साफ़ करने के लिए तुलसी की पत्तियों को गुलाबजल मिक्स करके पीस लें, अब इसमें आधा चम्मच चन्दन पाउडर, आधा चम्मच संतरे के छिलके का पाउडर और एक चम्मच गुलाब जल को मिक्स करें। इस पेस्ट को चेहरे पर अप्लाई करें 15 मिनट तक लगा रहने दें। 15 मिनट बाद चेहरे को साफ़ कर लें, यह पेस्ट आपकी स्किन पोर्स को क्लीन करके ओपन पोर्स की प्रॉब्लम को दूर करता है।

कोरोना से जंग में कैसे मजबूत करें इम्युनिटी सिस्टम

सर्दियों में इम्युनिटी कमजोर होना आम बात है, इस मौसम में सर्दी-जुकाम और अन्य संक्रामक बीमारियां आसानी से अपनी गिरफ्त में ले लेती हैं। कड़ाके की ठण्ड के साथ ही कोरोना का खतरा भी अभी बना हुआ है, दोनों से खुद को सुरक्षित रखने के लिए हेल्थ से संबंधी कुछ आसान टिप्स अपनाकर आप इम्युनिटी बढ़ा सकते हैं। आइये जानते हैं इन उपायों के विषय में-

गर्म पानी और गर्म पेय पदार्थों का सेवन

गरम पानी पीने से सर्दी जुकाम और गले की खराश जैसी बीमारियां दूर रहती हैं, यह कोरोना संक्रमण से बचाव में भी सहायक है। ग्रीन टी, अदरक और दालचीनी का काढ़ा, हर्बल-टी, तुलसी, अदरक और काली मिर्च की चाय का संतुलित मात्रा में सेवन संक्रमण से बचाव में लाभदायक है।

तुलसी स्टीम लें

गरम पानी में तुलसी अर्क की कुछ बुँदे डालकर भाप लें, इससे आप मौसमी बीमारियों और कोरोना संक्रमण के खतरे से बचे रहेंगे। भाप सप्ताह में तीन से चार बार ले सकते हैं, यह सर्दी- जुकाम, खांसी और गले के इंफेक्शन में राहत देगा।

मजबूत इम्युनिटी के लिए अपनाएं योगासन

सर्दियों में नियमित वर्क आउट थोड़ा आलसभरा हो सकता है लेकिन यह आपको सामान्य बीमारियों के संक्रमण और कोरोना के खतरे से दूर रखने में मददगार है। स्ट्रांग इम्युनिटी के लिए पश्चिमोत्तासन, भुजंगासन, अनुलोम-विलोम, उज्जाई प्राणायाम, पर्वतासन जैसे आसनों की सहायता ले सकते हैं। इसके अलावा स्ट्रेचिंग, वॉकिंग करना भी लाभकारी होगा।

हेल्दी डाइट अपनाएं

स्ट्रांग इम्युनिटी के लिए पोषक तत्वों से भरपूर डाइट अपनाएं। भोजन की थाली में एक चौथाई हरी सब्जियां और मोटे अनाज शामिल करें। अधिक चिकनाई युक्त आहार से परहेज करें। विटामिन्स, एंटी ऑक्सीडेंट्स से भरपूर मौसमी फलों का सेवन प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूती प्रदान कर सकता है।

भरपूर नींद लें

अच्छी सेहत और बेहतर इम्युनिटी के लिए 7-8 घंटे की नींद लें। यह फिजिकल और मेन्टल रिलीफ प्रदान करने के साथ ही अवसाद जैसी परेशानी को दूर करने में मददगार है। भरपूर नींद आपके डाइजेस्टिव सिस्टम को दुरुस्त रखने के साथ ही दिनभर की थकान से राहत दिलाने में हेल्पफुल है।

विटामिन सी से भरपूर फलों का सेवन

मजबूत प्रतिरक्षा तंत्र के लिए विटामिन सी से भरपूर आहार लें, आँवला, नींबू, अमरुद ,संतरे जैसे खट्टे फलों का सेवन लाभदायक है।

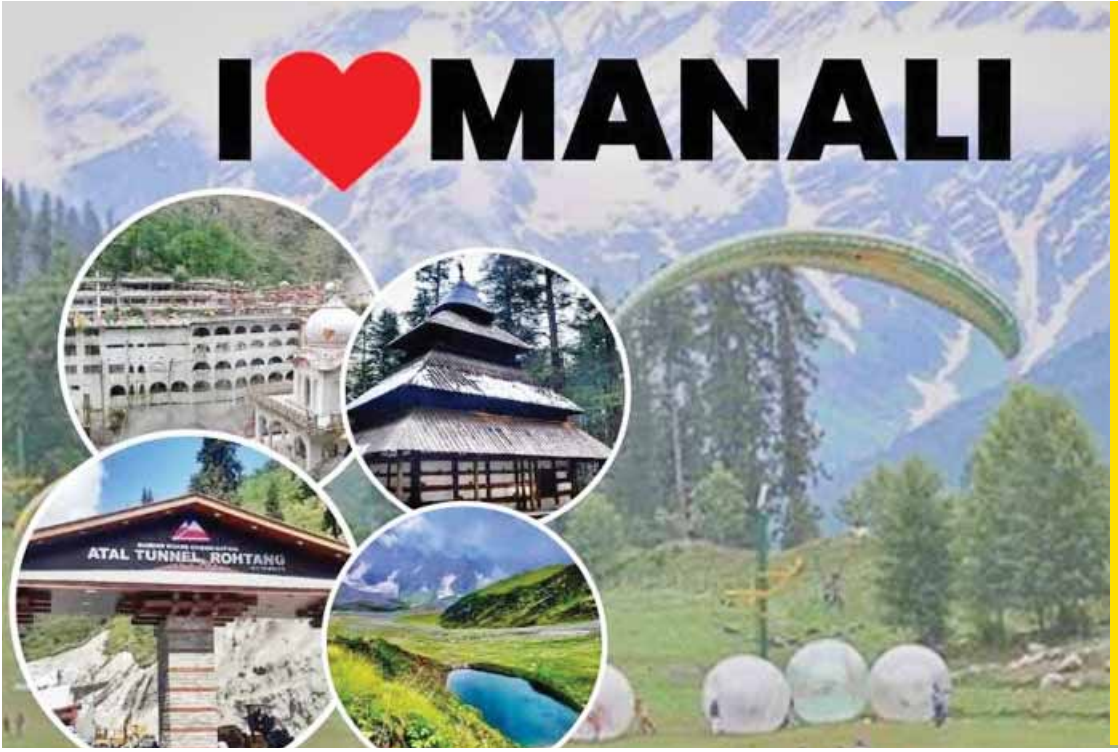

मनाली में इन जगहों पर जाना ना भूले, बेहद खूबसूरत है यहाँ के नज़ारे

मनाली घूमने के लिए लोगों के बीच बहुत ही फेमस है। अगर आप भी गर्मियों में किसी हिल स्टेशन जाने की तैयारी कर रहे है तो आज का यह आर्टिकल आपके लिए जरुरी है। मनाली बेहद ही खूबसूरत और अपनी प्राकृतिक नज़ारों के लिए जाना जाता है। यहाँ आकर पर्यटक ऊंची-ऊंची घाटियों, बर्फ से ढके पहाड़ों और पहाड़ियों के साथ यहाँ की प्राकृतिक खूबसूरती में खो जाते हैं। हिमाचल के कुछ एक ऐसे पर्यटन स्थल हैं, जहां पर्यटकों की सबसे ज्यादा भीड़ देखी जाती है। जब भी कोई पहली बार मनाली घूमने जाता है तो सबसे पहला सवाल उसके मन में यही होता है कि मनाली में कौन-कौन सी खूबसूरत जगहों पर घूमा जाएँ क्योंकि यह तो सब जानते ही है कि मनाली भारत के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक है और इसके साथ ही पर्यटन स्थल के अलावा दुनियाभर में यह बेस्ट प्लेस ऑफ़ हनीमून मनाने के लिए भी जाना जाता है। मनाली हनीमून मनाने के लिए युवाओं की पहली पसंद है और यही कारण है कि मनाली में सामान्य पर्यटकों से ज्यादा हनीमून पर आने वाले कपल ज्यादा दिखाई देते हैं। मनाली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां पर आप बारिश, गर्मी और सर्दी किसी भी मौसम में जा सकते हैं और हर मौसम का यहाँ पर अलग ही नजारा होता है। आज हम आपको मनाली की कुछ बेहतरीन और खूबसूरत जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं जिन्हें आप किसी भी मौसम में घूम सकते है मनाली घूमने के लिए लोगों के बीच बहुत ही फेमस है। अगर आप भी गर्मियों में किसी हिल स्टेशन जाने की तैयारी कर रहे है तो आज का यह आर्टिकल आपके लिए जरुरी है। मनाली बेहद ही खूबसूरत और अपनी प्राकृतिक नज़ारों के लिए जाना जाता है। यहाँ आकर पर्यटक ऊंची-ऊंची घाटियों, बर्फ से ढके पहाड़ों और पहाड़ियों के साथ यहाँ की प्राकृतिक खूबसूरती में खो जाते हैं। हिमाचल के कुछ एक ऐसे पर्यटन स्थल हैं, जहां पर्यटकों की सबसे ज्यादा भीड़ देखी जाती है। जब भी कोई पहली बार मनाली घूमने जाता है तो सबसे पहला सवाल उसके मन में यही होता है कि मनाली में कौन-कौन सी खूबसूरत जगहों पर घूमा जाएँ क्योंकि यह तो सब जानते ही है कि मनाली भारत के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक है और इसके साथ ही पर्यटन स्थल के अलावा दुनियाभर में यह बेस्ट प्लेस ऑफ़ हनीमून मनाने के लिए भी जाना जाता है। मनाली हनीमून मनाने के लिए युवाओं की पहली पसंद है और यही कारण है कि मनाली में सामान्य पर्यटकों से ज्यादा हनीमून पर आने वाले कपल ज्यादा दिखाई देते हैं। मनाली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां पर आप बारिश, गर्मी और सर्दी किसी भी मौसम में जा सकते हैं और हर मौसम का यहाँ पर अलग ही नजारा होता है। आज हम आपको मनाली की कुछ बेहतरीन और खूबसूरत जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं जिन्हें आप किसी भी मौसम में घूम सकते है-

भृगु झील

मनाली के पास एक आश्चर्यजनक झील भी मौजूद है जिसका नाम है भृगु झील। इस झील का रास्ता बेहद ही खूबसूरत घास के मैदानों से होकर गुजरता है जो आपके मन को मोह लेगा। यहाँ पर आप एक-से-एक सुंदर दृश्य देख सकते हैं। यहाँ रहने के लिए शैलेट विंडफ्लावर और द हाइलैंड दो जगहें हैं। हमता दर्रा और करेरी झील यहाँ के दो लोकप्रिय पर्यटन स्थल हैं। यहाँ पर जाने के लिए आप अपने निजी वाहन, टैक्सी या कैब ले सकते है।

कुल्लू

अगर आप मनाली घूमने जा रहे है और कुल्लू ना घूम कर आए तो ऐसा तो हो नहीं सकता। मनाली से 40 किलोमीटर की दूरी पर कुल्लू नाम की एक खुबसूरत घाटी है। जहाँ की खूबसूरत वादियाँ हर साल लाखो लोगों को यहाँ आने के लिए आकर्षित करती है। ट्रैकिंग और पानी के खेलो के लिए कुल्लू युवाओं के बीच काफी फेमस स्थान है।

क्लेश और आर्थिक संकट से हैं परेशान, लगाएं ये चमत्कारी पौधे, मिलेगी खुशहाली और तरक्की

हिन्दू धर्म में घर की खुशहाली और वास्तु दोष को दूर करने के लिए कई उपाय बताये गए हैं। वास्तु के अनुसार कुछ पेड़-पौधें घर से नकारात्मक ऊर्जा दूर करके घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं। इन पौधों को घर में लगाने से आर्थिक उन्नति और खुशहाली का आगमन होता है। वास्तु शास्त्र में इन पौधों का जिक्र किया गया है। आइये जानते है कुछ ऐसे ही पौधों के विषय में-

लक्ष्मणा का पौधा

लक्ष्मणा का पौधा माता लक्ष्मी को अति प्रिय है, मान्यता है जिस घर में लक्ष्मणा का पौधा होता है वहां लक्ष्मी जी स्थाई रूप से निवास करती हैं। कई जगहों पर इसे गुमा के नाम से भी जाना जाता है। कहते है यह पौधा लगाने से घर में धन का आगमन होता है। आयुर्वेद में इसे लक्ष्मणा बूटी कहा गया है।

शमी का पौधा

शमी का पौधा भगवान शिव को अति प्रिय है, वास्तु में शमी का पौधा घर में लगाना शुभ माना गया है। जिस घर में शमी का पौधा होता है वहां कभी आर्थिक संकट नहीं आता और घर की दरिद्रता दूर होती है। शमी का पौधा घर से नेगेटिव एनर्जी को दूर करता है। इसे धन वृक्ष कहा जाता है।

मोहिनी का पौधा

मोहिनी के पौधे को ऋसुला का पौधा भी कहा जाता है, इसको घर की उत्तर या पूर्व दिशा में लगाने से शुभ फलों की प्राप्ति होती है। मोहिनी का पौधा धन के देवता कुबेर को प्रिय है। इसको दक्षिण दिशा में लगाना शुभ नहीं माना जाता है। यह पौधा मेन्टल रिलीफ के लिए भी जाना

जाता है, इससे घर में धन का आगमन होता है।

अनार का पौधा

यदि आप माता लक्ष्मी और कुबेर दोनों की कृपा चाहते हैं तो घर के मुख्य द्वार के दाहिनी ओर अनार का पौधा लगाएं। इससे घर में सुख-शांति का वास होगा और घर में पॉजिटिव एनर्जी का संचार होगा।

मनी प्लांट

मनी प्लांट देखने में जितना खूबसूरत होता है यह वास्तु के नजरिये से भी उतना ही लाभकारी है। यह घर से नेगेटिव एनर्जी को दूर करके वातावरण को सकारात्मक बनाए रखने में सहायक है। मान्यता है जिस घर में मनी प्लांट होता है वहां रुपये-पैसों की तंगी नहीं होती है। मनी प्लांट को घर के आग्नेय कोण में लगाना शुभ होता है।

तुलसी का पौधा

हिन्दू धर्म में तुलसी का पौधा सबसे पवित्र माना जाता है। इसे घर के मुख्य द्वार पर लगाने से घर का वातावरण और आस-पास का वातावरण शुद्ध हो जाता है। तुलसी का पौधा घर के मुख्य द्वार पर लगाने से सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है।

सदाबहार का पौधा

अगर घर के सदस्यों में आपसी मन-मुटाव है, पति-पत्नी के बीच झगड़े होते हैं तो घर के मुख्य द्वार पर सदाबहार का पौधा लगाएं। इससे घर से क्लेश और अशांति दूर होगी, नकारात्मक शक्तियों का नाश होगा। यह घर के सदस्यों के बीच प्रेम और सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करता है।

नए साल 2023 में खूब बजेंगी शहनाइयां, शुभ मुहूर्त की भरमार

नए साल 2023 में शादियों के शुभ मुहूर्त की भरमार है। बिना शुभ मुहूर्त के विवाह कार्यक्रम नहीं किए जा सकते हैं। वर्ष में कई मौके आते हैं जब विवाह के कई शुभ मुहूर्त होते हैं वहीं कुछ महीनों तक विवाह के मुहूर्त ही नहीं होते हैं। ज्योतिषाचार्य ने बताया कि हिंदू धर्म में विवाह संपन्न करने के लिए शुभ मुहूर्त का विशेष महत्व होता है। बिना शुभ मुहूर्त के विवाह कार्यक्रम नहीं किए जा सकते हैं। वर्ष में कई मौके आते हैं जब विवाह के कई शुभ मुहूर्त होते हैं वहीं कुछ महीनों तक विवाह के मुहूर्त ही नहीं होते हैं। साल 2023 में विवाह के 59 शुभ मुहूर्त भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक ने बताया

कि हिन्दी पंचांग के अनुसार साल 2023 में विवाह के कुल 59 शुभ मुहूर्त हैं। इनमें जनवरी में 9, फरवरी में 13, मई में 14, जून में 11, नवंबर में 5 और दिसंबर में 7 विवाह मुहूर्त हैं। नए साल यानि वर्ष 2023 का पहला सावा 15 जनवरी को होगा। बसंत पंचमी, रामनवमी, भड़ल्या नवमी, अक्षय तृतीया सहित कई अबूझ सावे भी होंगे। मार्च 2023 में होलाष्टक और अप्रैल में खरमास लगने पर मांगलिक कार्य नहीं होंगे। 29 जून से चातुर्मास शुरू हो जाएगा। अधिकमास होने से पांच महीने चातुर्मास रहेगा। इससे देवशयनी एकादशी 29 जून से 23 नवंबर देवउठनी एकादशी तक सावे नहीं हो सकेंगे। देवउठनी एकादशी का अबूझ सावा रहेगा। इसके बाद लग्न मुहूर्त शुरू होंगे।

ग्वालियर को बनाएंगे टीवी मुक्त

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर में सिरोल रोड स्थित न्यू कलेक्ट्रेट में जिला स्वास्थ्य समिति ग्वालियर एवं मीडिया पार्टनर रेडियो गूंज 90.8 एफएम द्वारा प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान की शुरुआत की जहां जिला कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह द्वारा बाइकर्स को फ्लैग दिखाकर रैली की शुरुआत की गई। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक डॉ.दीपाली माथुर जिला क्षय रोग अधिकारी एवं सीईओ जिला पंचायत श्री आशीष तिवारी मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनीष शर्मा एवं डब्ल्यूएचओ सलाहकार डॉ विकास सभरवाल उपस्थित रहे। गौरतलब है कि रेडियो गूंज समय-समय पर ऐसे आयोजनों में बढ़-चढ़कर भाग लेकर लोगों में विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता लाने का प्रयास कर रहा है।

जिला स्वास्थ्य समिति ग्वालियर एवं मीडिया पार्टनर रेडियो गूंज 90.8 एफएम द्वारा प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान की शुरुआत, कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने बाइकर्स को फ्लैग दिखाकर रैली की शुरुआत की

आईटीएम आईटीएफ वुमंस वर्ल्ड टेनिस टूर टूर्नामेंट

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

आईटीएम आईटीएफ विमेंस वर्ल्ड टेनिस टूर प्रतियोगिता का औपचारिक उद्घाटन संपन्न हुआ, इस अवसर पर मुख्य अतिथि दीपक सिंह आईएएस कमिश्नर ग्वालियर, इक्षित गणपाले जिला पंचायत सीओ मुरैना, एडिशनल एसपी राजेश दंडोतिया, प्रसिद्ध अभिनेत्री दीपशिखा नागपाल,

आईटीएम वाइस चांसलर एसएस भाकर तथा अमेठी वाइस चांसलर वीके शर्मा विशेष अतिथि रहे। कार्यक्रम का संचालन श्री विवेक पांडे ने किया, इस अवसर पर जीसीपीए के सचिव अनुराग ठाकुर, वरिष्ठ खिलाड़ी अनिल चौहान, नरेश यादव, रवि पाटणकर, अजय उपाध्याय तथा टूर्नामेंट डायरेक्टर विकास पांडे उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रथम चार वरीयता प्राप्त खिलाड़ी पहली वरीयता रूस की लस्कुटोवा, द्वितीय वरीयता प्राप्त वैदेही चौधरी, तीसरी वरीयता जेनिफर, चौथी वरीयता प्राप्त पोलैंड की वेरोनिका वाइजैक को

स्मृति चिन्ह देकर मुख्य अतिथि दीपक सिंह द्वारा सम्मानित किया गया। वही सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह इक्षित गणपाले जी ने प्रदान किये। प्रतियोगिता का औपचारिक उद्घाटन की घोषणा कर सभी अतिथियों ने गुब्बारे उड़ाकर इसे प्रारंभ किया।

गूंज मीडिया ग्रुप की डायेरक्टर कृति सिंह गूंज टीम के साथ कार्यक्रम में शामिल हुईं।

वैदेही ने जीता वूमेंस वर्ल्ड टेनिस टूर का दोहरा खिताब

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

आईटीएम आईटीएफ वूमंस वर्ल्ड टेनिस टूर का एकल मुकाबले का फाइनल आज खेला गया, टूर्नामेंट डायरेक्टर विकास पांडे ने बताया फाइनल मुकाबले से पहले नगर निगम कमिश्नर किशोर कन्याल जी ने सिक्का उछाल कर मैच शुरू कराया, एकल वर्ग के फाइनल में वैदेही चौधरी का मुकाबला रूस की लस्कुटोवा प्रथम वरीयता प्राप्त खिलाड़ी से हुआ, यह फाइनल मुकाबला अत्यंत रोमांचक रहा जिसमें रूसी खिलाड़ी ने पहले सेट में 5-2 की बढ़त हासिल की उसके पश्चात वैदेही ने जबरदस्त फोरहैंड और कंट्रोल्ड बैकहैंड से मैच में वापसी करते हुए यह सेट 7-5 से जीत लिया, दूसरे सेट में भी रूसी खिलाड़ी ने शुरुआत में जबरदस्त खेल का प्रदर्शन कर 4-2 की बढ़त हासिल कर ली थी परंतु फिर वैदेही ने कमाल दिखाते हुए यह सेट भी 6-4 से जीत खिताब पर कब्जा जमाया, वैदेही ने कल रूसी खिलाड़ी के साथ जोड़ी बनाकर युगल मुकाबला भी जीता था इस प्रकार वैदेही ने दोहरे खिताब पर कब्जा जमाया। पुरस्कार वितरण मुख्य अतिथि महापौर ग्वालियर श्रीमती शोभा सिकरवार, विशेष अतिथि मालदीव से आए डॉ अब्दुल्ला राशिद अहमद मिनिस्ट्री ऑफ स्टेट फॉर एजुकेशन, इच्छित गढ़पाले जिला पंचायत सीईओ मुरैना, एडिशनल एसपी ग्वालियर राजेश दंडोतिया ने किया। इस अवसर पर जीसीटीए के सचिव अनुराग ठाकुर, टूर्नामेंट डायरेक्टर विकास पांडे, वरिष्ठ टेनिस खिलाड़ी अनिल चौहान उपस्थित रहे, मुख्य अतिथि तथा विशेष अतिथि को स्मृति चिन्ह इच्छित गढ़पाले जी तथा राजेश दंडोतिया जी ने प्रदान किए। इस अवसर पर ग्वालियर के युवा खिलाड़ी को उनके विशेष प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया, कार्यक्रम का संचालन विवेक पांडे ने किया। इसके पश्चात आईटीएम यूनिवर्सिटी के छात्र-छात्राओं द्वारा द्वारा रंगारंग फैशन शो का आयोजन किया गया।

कृति सिंह को मिला गौरव रत्न सम्मान

एफपीएआई कार्यक्रम अधिकारी अच्छेद्र सिंह कुशवाह सामाजिक क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यक्रम करने पर सम्मानित

ग्वालियर बाल भवन स्थित सभागार में रास्ट्रीय नारी सशक्तीकरण द्वारा ग्वालियर चम्बल संभाग से उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को गौरव रत्न से नवाजा गया। कार्यक्रम में गूँज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह को मीडिया क्षेत्र में कार्य करने हेतु ग्वालियर गौरव रत्न सम्मान से नवाजा गया। वहीं एफपीएआई कार्यक्रम अधिकारी अच्छेद्र सिंह कुशवाह को सामाजिक क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यक्रम करने पर गौरव रत्न से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मध्य प्रदेश शासन के कैबिनेट मंत्री प्रधुमन सिंह तोमर उपस्थित थे। कार्यक्रम में प्रदेश कार्यसमिति सदस्य भारतीय जनता पार्टी आशीष प्रताप सिंह राठौड़, मुरैना जिला पंचायत अध्यक्ष आरती गुर्जर, रेनू चौहान एवं कार्यक्रम आयोजक राजकुमार धाकड़ उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में सम्मानित होने वालों में ग्वालियर से साहित्य क्षेत्र में श्रीमती प्रतिभा दुबे, एफपीएआई ग्वालियर के कार्यक्रम अधिकारी अच्छेद्र सिंह कुशवाह, गूँज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह, 2 यूट्यूब सिल्वर बटन सृष्टि जैन, आयरन गर्ल निहारिका कौरव, तहसीलदार योगिता बाजपेयी, प्रदेश की युवा सरपंच काजल धाकड़, सब इंस्पेक्टर सोनम पाराशर, श्रीमती किरण आनंद, डॉ. शिराली रुनवाल, सृष्टि जैन, अनीता ओडिया, मेघा शिवहरे, अल्का श्रीवास्तव, डॉ अंकिता श्रीवास्तव, गरिमा बाजपेयी, रश्मि राजावत, गगन बाजपेयी, बीके पहलाद, सब इंस्पेक्टर आरती सिंह, सपना शर्मा, आशा सिंह, शिव प्रसाद गोला, पूजा सिंह, जैनी थॉमस, तहसीलदार प्रतिज्ञा शर्मा, मोनिका निगम, प्रतीक कुमार, वंदना जगी, आकांक्षा भटनागर, मिस उत्तरप्रदेश शिखा गोयल, डॉ कंनिका सेठी, नीतू सचदेवा, नेहा पटेल, अवनी बंसल, अविनाश भटनागर, तहसीलदार प्रेमलता पाल, तहसीलदार शुभ्रता त्रिपाठी, मुरार जनपद अध्यक्ष दिलराज किरार, सब इंस्पेक्टर नम्रता भदौरिया, सब इंस्पेक्टर अंजू दुबे, कवयित्री ज्योति दिनकर,

डीपीओ प्रगति नायक, सब इंस्पेक्टर आशा गोलियां, राशि अग्रवाल, डॉ साधना उपाध्याय, अंकिता अनूप कैलशिया, तहसीलदार योगिता बाजपेयी, टीजीटी मेघा खण्डेलवाल, शैलजा लवंगीकर, कोमल कुलश्रेष्ठ, अनिल चौहान, शीनि कैल्वेन्ट, अंजली धारा, डॉ सरोज चौधरी, डॉ रानू छारी, रिचा शिवहरे, डॉ सिराली रूनवाल, स्वेच्छा शर्मा, गीतांजली, रेणु राणा, पूर्णिमा अग्रवाल, अल्का मुद्गल, पूनम तोमर, लीना भारद्वाज, श्रद्धा सोम आदि को ग्वालियर चंबल संभाग गौरव रत्न सम्मान 2023 से सम्मानित किया गया।

शिक्षा व कला की अनूठी मिसाल : शिराली रुनवाल

डॉ. शिराली 12 राष्ट्रीय व 9 अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों के साथ शिक्षा, कला, साहित्य, संस्कृति, समाजसेवा व सजग नागरिकता के बहुआयामी क्षेत्रों में स्वयं को साबित कर एक कीर्तिमान स्थापित कर चुकी हैं। इन्हें अवॉर्ड क्वीन ऑफ़ सेंट्रल इंडिया के नाम से भी जाना जाता है।

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

महज़ 5 वर्ष की अल्पायु में अद्वितीय चित्रकला व उत्तम आरेखण के लिए नई दिल्ली के विज्ञान भवन में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित ग्वालियर की गोल्डन गर्ल शिराली रुनवाल आज 27 की उम्र में 2786 अवॉर्ड्स की एकल स्वामिनी हैं। उन्हें अमेरिका की मेक्सिको सिटी से लेकर इजिप्ट के कायरो शहर में पेंटिंग के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए नवाज़ा जा चुका है। दस वर्ष की उम्र तक आते-आते उनकी कविताएं देशभर की बाल पत्रिकाओं में स्थान पाने लगी थीं। कविता कुएं का मेंढक प्रसिद्ध फ़िल्म निर्माता आमिर ख़ान की ब्लॉकबस्टर मूवी तारे ज़मीं पर में चाइल्ड आर्टिस्ट दर्शील सफ़ारी पर फ़िल्माई गई। NCERT, CBSE ß ICSE बोर्ड ने उनकी रचनात्मकता को हाथों-हाथ लिया और विभिन्न विषयों पर रचित उनकी काव्य-कृतियों ने पाठ्यक्रम में भी अपनी जगह बनाई। कक्षा 10वीं, 12वीं व पी.एम.टी. में लगातार प्रथम स्थान की हैट्रिक के बाद डॉ. शिराली ने एम.बी.बी.एस. में 37 गोल्ड मेडल प्राप्त कर एक रिकॉर्ड क़ायम किया। इतना ही नहीं, उसके तुरंत बाद नीट पी.जी. में 99.99 पर्सेंटाइल अंकों के साथ पूरे देश में अव्वल रहकर साबित कर दिया कि बिना कोचिंग आदि के भी एकेडेमिक्स में सफलता का परचम लहराया जा सकता है। तदुपरांत एम.एस. ऑब्स एण्ड गायनी में डबल गोल्ड मेडल हासिल कर अपनी क़ाबिलियत का लोहा मनवाया। इसी वर्ष उन्होंने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के बेस्ट स्टूडेंट स्वर्ण पदक से सम्मानित होकर, 40 गोल्ड मेडल्स के जादुई आंकड़े को छू लिया।

जब डॉ. शिराली स्कूल गोईंग गर्ल थीं, तभी उनकी मां को किडनी फ़ेल्योर के कारण लगभग 8 वर्ष तक स्वास्थ्य-संकट का सामना करना पड़ा। बार-बार के डायलिसिस व इन्वेस्टिगेशंस ने परिवार को तोड़ कर रख दिया। बावजूद इसके मध्यमवर्गीय मात-पिता की इस इकलौती संतान ने सच्ची लगन व पक्के इरादे के बल पर उस मुक़ाम को पाया जो सिर्फ़ सपनों में ही संभव था।

आज डॉ. शिराली 12 राष्ट्रीय व 9 अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों के साथ शिक्षा, कला, साहित्य, संस्कृति, समाजसेवा व सजग नागरिकता के बहुआयामी क्षेत्रों में स्वयं को साबित कर एक कीर्तिमान स्थापित कर चुकी हैं। इन्हें अवॉर्ड क्वीन ऑफ़ सेंट्रल इंडिया के नाम से भी जाना जाता है।

अभी हाल ही में डॉ0 शिराली के शोध को टॉप टेन यंग इंडियंस के नवोन्मेष में शामिल कर शासकीय मान्यता दी गई है। यही नहीं, राष्ट्रीय नारी सशक्तिकरण संघ द्वारा विदुषी डॉ0 शिराली रूनवाल को राजधानी भोपाल में मध्यप्रदेश रत्न से भी सम्मानित किया गया है।

साउथ इंडियन अवतार में दिखीं जान्हवी कपूर

जान्हवी कपूर ने इंस्टाग्राम हैंडल पर अपनी लेटेस्ट फोटोज शेयर की हैं। गोल्डन बॉर्डर की सफेद साउथ इंडियन साड़ी में जान्हवी बेहद ग्लैमरस अवतार में नजर आ रही हैं। फोटोज में जान्हवी खूबसूरत व्हाइट साड़ी पहनकर पानी में पोज देते हुए दिखाई दे रही हैं। जान्हवी का यह लेटेस्ट लुक उनके रूमर्ड बॉयफ्रेंड शिखर पहाड़िया को भी बेहद पसंद आ रहा है। एक्ट्रेस की इस पोस्ट पर उन्होंने हार्ट वाला इमोजी कमेंट किया है। इन लेटेस्ट फोटोज में जान्हवी किसी अप्सरा से कम नहीं लग रही। फोटोशूट के लिए उन्होंने ने सफेद और गोल्ड कलर की ट्रेडिशनल साउथ इंडियन साड़ी कैरी की है। जिसके साथ उन्होंने मैचिंग ब्लाउज पहना है। इसके अलावा लुक को कंप्लीट करने के लिए जान्हवी ने गोल्ड ज्वेलरी स्टाइल की है।

आर्यन और नोरा का रिलेशनशिप ?

कुछ दिन पहले आर्यन और नोरा की डेटिंग की खबरें सामने आई थीं। दरअसल दोनों की कुछ कॉमन लोगों के साथ की फोटोज वायरल हो रही थीं। इन फोटोज को देखने के बाद फैंस कयास लगा रहे हैं कि दोनों एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं और साथ में वक्त बिताने के लिए दुबई गए थे। हालांकि इन बातों की अभी तक किसी की ओर से भी पुष्टि नहीं हुई थी।नोरा फतेही का नया फोटोशूट बेहद सुर्खियों में है। इन फोटोज में नोरा ने बॉडी फिट गोल्डन ब्लिंग ड्रेस कैरी किया है। इस लुक में नोरा किसी हॉलीवुड एक्ट्रेस की तरह नजर आ रही हैं। हालांकि, उनका यह नया लुक फैंस को कुछ खास पसंद नहीं आया है। यही वजह है कि नोरा को सोशल मीडिया पर उनके इस नए लुक को खूब क्रिटिसाइज किया जा रहा है नोरा ने ग्लैमरस अंदाज में फोटो शेयर करते हुए एक ब्राजीलियन गाने के लिरिक्स लिखे हैं। यूजर्स नोरा के इस पोस्ट पर उन्हें खूब ट्रोल कर रहे हैं। एक यूजर ने कमेंट में लिखा- 'बाल को देखकर बुड्डी के बाल याद आ गए।' दूसरे यूजर ने लिखा- ये कार्डी फतेही है। एक अन्य यूजर ने लिखा- कुछ भी पहन रहे हैं यार आजकल के लोग।

पुष्पा-2 में नहीं दिखेंगी श्रीवल्ली?

बीते दिनों पुष्पा 2 से रश्मिका मंदाना को रिप्लेस किए जाने की खबरें सामने आ रही थी। कहा जा रहा थी कि रश्मिका को फिल्म के दूसरे पार्ट से हटा दिया गया है। लेकिन अब रिलेप्स होने की अफवाहों पर रश्मिका का रिएक्शन सामने आया है। गलता प्लस को दिए इंटरव्यू में रश्मिका ने कहा- 'बहुत सारी खबरें सामने आ रही हैं कि मुझे फिल्म से रिप्लेस कर दिया गया है। लेकिन ऐसा नहीं है, मैं फिल्म की शूटिंग स्टार्ट करने के वाकई बेहद एक्साइटेड हूं। मुझे लगता है कि फिल्म की शूटिंग अगले महीने तक शुरू कर दूंगी। ये फिल्म पहले पार्ट से भी ज्यादा बड़ी और बेहतर होगी। मैंने सुना है कि फिल्म का सेकंड हाल्फ बहुत ही ज्यादा दिलचस्प है। पुष्पा-द राइज में श्रीवल्ली के किरदार से रश्मिका को देशभर में पहचान मिली। फिल्म में अल्लू अर्जुन के साथ उनकी केमिस्ट्री को बेहद पसंद किया था। बीते दिनों ये खबरें थीं कि मेकर्स ने दूसरे पार्ट के लिए सई पल्लवी को अप्रोच किया है। हालांकि, अब रश्मिका ने इन खबरों पर फुल स्टॉप लगा दिया है मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो फिल्म के डायरेक्टर सुकुमार पुष्पा-2 में रामचरण को कास्ट करना चाहते हैं। दोनों इससे पहले रंगस्थलम में साथ काम कर चुके हैं, जो बॉक्सऑफिस पर ब्लॉकबस्टर साबित हुई थी। हालांकि, अभी तक मेकर्स ने राम चरण के कैमियो से जुड़ी कोई भी ऑफिशियल अनाउंसमेंट नहीं की है मेकर्स ने पहले पार्ट के लिए 194 करोड़ रुपए के बजट में बनाया गया था। जबकि प्रोड्यूसर दूसरे पार्ट के लिए 450 करोड़ रुपए से ज्यादा का इन्वेस्टमेंट कर रहे हैं। साथ ही मैथरी मूवी मेकर्स ने इस बार हिंदी डबिंग राइट्स लिए हैं।

दिवंगत आत्मा को श्रद्धासुमन, सादर नमन्

श्रद्धांजलि

एक आह भरी होगी, हमने ना सुनी होगी। जाते-जाते तुमने आवाज तो दी होगी,
हर वक्त यही है गम, उस वक्त कहां थे हम, कहाँ तुम चले गये

स्व. सतपाल सिंह (छोटू)

दिवंगत आत्मा को ईश्वर शांति प्रदान करे और परिवारजनों को
दुख सहने की असीम शक्ति प्रदान करे

शोकाकुल परिवारजन

श्रीमती शकून्तला देवी -कृष्ण पाल सिंह कुशवाह (सेवानिवृत एडिशनल एस.पी.) मृदुला -अजय, अर्चना-मरमग्य, रजनी (गुड़ीया) - नवीन, सीमा-अरविन्द अंतिमा (नूरी) - गुंजन, नीलम-विक्रांत, अपूर्वा उदय

2, बी.डी.ए. कॉलोनी, ईदगाह हिल, भोपाल

गूंज परिवार श्रद्धांजलि अर्पित करता है

GOONJ
GOONJ का भव्य शुभारंभ

GOONJ
वंदे मातरम्

GOONJ
REPUBLIC DAY SPECIAL
नमन गणतंत्र

GOONJ
ग्वालियर मेला

GOONJ
चंबल में चीतों की सौगात

GOONJ
ग्वालियर में गूँजेगी
आपकी अपनी आवाज़

GOONJ
SAFETY FIRST
स्कूल में सड़क सुरक्षा का पढ़ाया जाएगा पाठ

GOONJ
शुभ दीपावली

GOONJ
HAPPY HOLI

ON AIR
26th January
Happy Republic Day
90.8 FM
GOONJ
90.8 FM
आपकी अपनी आवाज़
goonjmpnews-aapkiapniawaaz
goonj_mp
Happy Republic Day
GOONJ M.P. NEWS
आपकी अपनी आवाज़
GOONJ
National News Magazine
E-69 Harishankar Puram, Gwalior
7880075908

गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

विज़न ज़ीरो के नियमों का पालन करें

एस. के. झा
(आयुक्त)
परिवहन मध्य प्रदेश

अपील

मोटर साइकिल चलाते समय हेलमेट का इस्तेमाल करें
बाइक का उपयोग करते समय पीछे बैठे व्यक्ति को भी हेलमेट पहनाएं
गाड़ी की क्षमता के अनुरूप ही इसमें लोगों को बैठाएं
यातायात सिगनल और सड़क संकेतों के बारे में पूरी जानकारी रखें
यातायात नियमों की अवहेलना ना करें
सीट बेल्ट का इस्तेमाल करें
गाड़ी चलाते समय फोन पर बात करने से बचें
नींद आने या तबीयत खराब होने पर गाड़ी ना चलाएं
गाड़ी की स्पीड हमेशा सीमा में रखें
शराब पीकर गाड़ी ना चलाएं

अरविंद सक्सेना
डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर
परिवहन विभाग, ग्वालियर

सड़क सुरक्षा सप्ताह

जिम्मेदार नागरिक बनें, नियमों का पालन करें

National Road Safety Week
11th to 17th JANUARY

गूंज मीडिया ग्रुप द्वारा जनहित में जारी